इस्लाम - प्रश्न एवंउत्तर के माध्यम से

फ़ाति न स़ब्री

www.fatensabri.com

इस्लाम - प्रश्न एवं उत्तर के माध्यम से

फ़ातिन सब्री
पहला प्रकाशन
1442 हिज़्री - 2021 ई०
fatensabri.com
faten@fatensabri.com
la luz-the light (facebook)
la luz (the light) (youtube)
laluz_thelight (instagram)

लेखक के शब्द :
इस पुस्तक का उद्देश्य है, इस्लाम धर्म के बारे प्रचलित प्रश्नों के उत्तर के माध्मय से इस महान धर्म का लोगों से परिचय कराना; सदियों से विभिन्न सभ्यताओं तथा जातियों को समायोजित करने, घटनाओं के साथ जीते हुए आगे बढ़ने और विकास के साथ तालमेल रखने में उसकी विशिष्टता, अनुपमता और लचीलेपन को दर्शाना तथा उसकी मज़बूती, उसके चेहरे को बिगाड़ने के प्रयासों के बावजूद उसके बाक़ी एवं जारी रहने की क्षमता और उन नाकारात्मक प्रचारों के सामने डटे रहने की शक्ति को बयान करना, जो उसके विरुद्ध किए जाते हैं, जो उसे आतंकवाद से जोड़ते हैं और लोगों को उसके ख़िलाफ़ लड़ने पर उभारते हैं।
मैं उच्च एवं क्षमतावान अल्लाह से दुआ करता हूँ कि वह इस पुस्तक को ऐसा चिराग बनाए जिससे सत्य की खोज करने वालों, रौशन दिमाग तथा खुले दिल रखने वालों का रास्ता प्रकाशमय हो तथा इसे शांति का संदेश बनाए जो इस्लाम धर्म के लिए सब के काम आए।

सृष्टिकर्ता पर ईमान :

क्या इंसान पर किसी पूज्य पर ईमान रखना अनिवार्य है?

इंसान किसी पूज्य पर ईमान ज़रूर रखता है। चाहे वह ईमान किसी सच्चे माबूद पर रखे या किसी असत्य पूज्य पर। फिर वह उसे पूज्य कहे या कुछ और। उनका यह पूज्य कोई पेड़ भी हो सकता है। आकाश का कोई तारा, कोई औरत, ऑफ़िस का बॉस या कोई वैज्ञानिक सिद्धांत भी हो सकता है। यह पूज्य उसकी आकांक्षा भी हो सकती है। इंसान का किसी न किसी चीज़ पर ईमान ज़रूरत होता है, जिसका वह अनुसरण करता है, जिसको पवित्र समझता है और जिसके निर्देश अनुसार जीवन बिताता है, बल्कि यदि उसके लिए जान देने की ज़रूरत पड़े तो जान भी दे देता है। हम इसी को इबादत कहते हैं। दरअसल सच्चे माबूद की इबादत इंसान को दूसरे लोगों या समाज की इबादत से मुक्ति प्रदान करती है।

सच्चा माबूद (पूज्य) कौन है?

सच्चा पूज्य वही है, जिसने इस ब्रह्मांड को पैदा किया है और असत्य पूज्यों की इबादत इस दावे पर आधारित है कि वे पूजय हैं। जबकि पूज्य के लिए सृष्टिकर्ता होना अनिवार्य है। फिर उसके सृष्टिकर्ता होने को प्रमाणित इस प्रकार किया जा सकता है कि ब्रह्मांड में उसकी पैदा की हुई चीज़ों को देखा जा सके या पूज्य की ओर से कोई संदेश आए, जो साबित करे कि वह सृष्टिकर्ता है। लेकिन जब इस दावे का कोई प्रमाण न हो, न ब्रह्मांड में उनकी पैदा की हुई चीज़ें देखी जा सकती हों और न खुद उनकी वाणी से इस तरह की बात साबित हो पाती हो, तो निश्चित रूप से ये पूज्य असत्य होंगे। हम देखते हैं कि इंसान मुसीबत के समय एक हस्ती की ओर लौटता है और उसी से उम्मीदें बाँधता हैं। वह एक से अधिक हस्तियों को नहीं पुकारता। विज्ञान ने भी ब्रह्मांड के परिदृश्य और इसकी घटनाओं की पहचान करके ब्रह्मांड में एकल पदार्थ और एकल व्यवस्था को साबित किया है। इसी प्रकार अस्तित्व में समानता और समरूपता के माध्यम से भी इस बात को साबित किया है।
फिर हम एक परिवार के स्तर पर कल्पना करें, जब माँ एवं बाप हमारे भविष्य को लेकर मतभेद करते हैं तो उसका अंजाम यह होता है कि बच्चे बर्बाद हो जाते हैं एवं उनका भविष्य नष्ट हो जाता है। तो फिर दो या दो से अधिक पूज्य यदि ब्रह्मांड का प्रबंध चलाएं तो क्या होगा?
अल्लाह तआला ने कहा है :
"यदि उन दोनों में अल्लाह के सिवा अन्य पूज्य होते, तो निश्चय दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती। अतः पवित्र है अल्लाह, अर्श (सिंहासन) का स्वामी, उन बातों से, जो वे बता रहे हैं।" [1] हम यह भी पाते हैं कि :
[सूरा अल-अंबिया : 22]
यह अनिवार्य है कि सृष्टिकर्ता का अस्तित्व समय, स्थान और ऊर्जा के अस्तित्व से पहले से हो। इस आधार पर, प्रकृति ब्रह्मांड के निर्माण का कारण नहीं हो सकती। क्योंकि प्रकृति स्वयं समय, स्थान और ऊर्जा से बनी है। फलस्वरूप यह अनिवार्य हो जाता है कि वह कारण प्रकृति के अस्तित्व से पहले से अस्तित्व में रहा हो।
यह ज़रूरी है कि सृष्टिकर्ता शक्तिशाली हो और उसका प्रभाव हर चीज पर मौजूद हो।
यह ज़रूरी है कि उसी का आदेश चले, ताकि वह सृष्टि के आरंभ का आदेश जारी कर सके।
यह ज़रूरी है कि उसके पास हर चीज़ का पूर्ण ज्ञान हो।
यह ज़रूरी है कि वह अकेला एवं एक हो। यह उचित नहीं है कि किसी को पैदा करने के लिए कोई दूसरा भी उसके साथ शामिल हो। यह भी उचित नहीं है कि वह अपनी सृष्टियों में से किसी की शक्ल में प्रकट हो। उसे किसी भी स्थिति में पत्नी या बच्चे की आवश्यकता न हो। क्योंकि उसे पूर्णता के सारे गुणों से विशेषित होना चाहिए।
यह ज़रूरी है कि वह तत्वज्ञ हो और जो भी करे किसी विशेष उद्देश्य से करे।

यह ज़रूरी है कि वह न्याय करने वाला हो। वह अपने न्याय के आधार पर पुरस्कृत भी करे और दंडित भी करे। मानव जाति के साथ उसका संपर्क रहे। वह पूज्य नहीं होता अगर लोगों को पैदा करके छोड़ देता। यही कारण है कि वह रसूलों को भेजकर उनके द्वारा लोगों को रास्ता दिखाता है और जीने का तरीक़ा बताता है। जो इस रास्ते पर चलेगा, वह बदले का हक़दार होगा और जो इस रास्ते से भटकेगा, वह दंड पाएगा।

सृष्टिकर्ता के गुण क्या हैं और क्यों उसकी ओर इशारा किया जाता है कि वही अल्लाह है?

मध्य पूर्व में ईसाई, यहूदी एवं मुसलमान शब्द "अल्लाह" का प्रयोग पूज्य को बताने के लिए करते हैं। इसका अर्थ होता है एक सत्य पूज्य, जो मूसा एवं ईसा का भी पूज्य है। सृष्टिकर्ता ने पवित्र क़ुरआन में "अल्लाह" एवं दूसरे नामों एवं गुणों से अपना परिचय कराया है। शब्द "अल्लाह" का उल्लेख ओल्ड टेस्टामेंट के पुराने संस्करण में 89 बार हुआ है।
क़ुरआन में महान अल्लाह के जिन गुणों का उल्लेख हुआ है, उनमें से एक गुण "ख़ालिक" (सृष्टिकर्ता) है :
"वही अल्लाह है, पैदा करने वाला, अस्तित्व प्रदान करने वाला, रूप देने वाला। उसी के लिए शुभ नाम हैं, उसकी पवित्रता का वर्णन करता है जो (भी) आकाशों तथा धरती में है और वह प्रभावशाली, हिक्मत वाला है।" [2] [सूरा अल-हश्र : 24] वह अव्वल (प्रथम) है कि उससे पहले कुछ न था और आख़िर (अंतिम) है कि उसके बाद कुछ नहीं है। "वही प्रथम, वही अन्तिम और प्रत्यक्ष तथा गुप्त है और वह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।" [3] सूरा अल-सजदा: 5] वह मुदब्बिर और मुतसर्रिफ़ (उपाय करने वाला तथा संचालक) है : "वह प्रबंध करता है हर चीज़ का, आकाश से धरती तक।" [4] [सूरा फ़ातिर: 44] वह अलीम (सर्वज्ञ) एवं क़दीर (सर्वशक्तिमान) है : "बेशक वह सर्वज्ञ एवं सामर्थ्यवान है।" [5] [सूरा अल-शूरा: 11] वह अपनी सृष्टि में से किसी के आकार में प्रकट नहीं होता : “उस जैसा कोई नहीं है। वह बड़ा सुनने वाला एवं देखने वाला है।” [6] [सूरा अल-इख़्लास़ : 1-4] उसका कोई साझी नहीं है और न उसकी कोई संतान है : "आप कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ है। न उसने (किसी को) जना और न (किसी ने) उसको जना है। और न उसके बराबर कोई है।" [7] [सूरा अन-निसा : 111] वह अल-हकीम (हिकमत वाला) है : "तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।" [8] [सूरा अल-कहफ़ : 49] वह न्याय करने वाला है : "और आपका रब किसी पर अत्याचार नहीं करता।" [9] ****

सृष्टिकर्ता को किसने पैदा किया?

यह प्रश्न सृष्टिकर्ता के बारे में ग़लत धारणा एवं उसे सृष्टि के समरूप समझने के कारण पैदा हुआ है। यह धारणा तार्किक और दार्शनिक दोनों रूप से अस्वीकृत है। उदाहरण स्वरूप : क्या कोई व्यक्ति एक साधारण प्रश्न का उत्तर दे सकता है कि लाल रंग की गंध क्या होती है? बेशक, इस सवाल का कोई जवाब नहीं है। क्योंकि लाल रंग को उन चीजों में वर्गीकृत नहीं किया जाता है जिन्हें सूंघा जा सकता है। उदाहरण के लिए, टीवी या रेफ़्रिजरेटर जैसी वस्तु या माल का निर्माता, उपकरण के उपयोग के लिए कुछ नियम निर्धारित करता है और इन निर्देशों को एक पुस्तिका में लिखता है, जो बताती है कि उपकरण का उपयोग कैसे करें और उस पुस्तिका को उस डिवाइस के साथ रख देता है। यदि उपभोक्ता उस डिवाइस से वांछित लाभ उठाना चाहता है, तो उसे इन निर्देशों का पालन करना होता है, जबकि निर्माता स्वयं इन क़ानूनों के अधीन नहीं है। पिछले उदाहरणों से हम समझ सकते हैं कि हर कारण का कोई उत्पन्न करने वाला होता है, परन्तु आसान शब्दों में अल्लाह का कोई उत्पन्न करने वाला नहीं है और न उसे उन चीज़ों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जिन्हें पैदा किया जा सके। क्योंकि वही अव्वल है, वह हर चीज़ से पहले है, अतः वही साधन का असली उतपन्न करने वाला है। यद्यपि कार्य-कारण का नियम ईश्वर के ब्रह्मांडीय नियमों में से ही है, मगर अल्लाह पाक जो चाहता है, करता है, वह पूर्ण सामर्थ्यवान है।

सृष्टिकर्ता के अस्तित्व के प्रमाण क्या हैं?

सृष्टिकर्ता पर ईमान इस वास्तविकता पर आधारित है कि चीज़ें बिना कारण के प्रकट नहीं होतीं। आपको बस इतना बता देना काफ़ी है कि विशाल भौतिक ब्रह्मांड और उसमें रहने वाले जीव एक अमूर्त चेतना रखते हैं और सारहीन गणित के नियमों का पालन करते हैं। एक सीमित भौतिक ब्रह्मांड के अस्तित्व की व्याख्या करने के लिए भी हमें एक स्वतंत्र, सारहीन और शाश्वत स्रोत की आवश्यकता है। आकस्मिकता स्वयं ब्रह्मांड का निर्माण नहीं कर सकती है, इसलिए कि वह मुख्य कारण नहीं है। बल्कि वह द्वितीयक परिणाम है, जो अन्य कारकों (युग, स्थान, पदार्थ एवं उर्जा) की उपलब्धता पर निर्भर करता है, ताकि इन कारकों से मिलकर कोई चीज़ अचानक अस्तित्व में आए। अतः संयोग (आकस्मिकता) शब्द का प्रयोग किसी चीज़ की व्याख्या के लिए नहीं किया जा सकता है, क्योंकि आकस्मिकता कोई भी वस्तु नहीं है। उदाहरण स्वरूप, यदि कोई व्यक्ति अपने कमरे में प्रवेश करे और खिड़की का काँच टूटा हुआ पाकर अपने घर वालों से प्रश्न करे कि किसने खिड़की का काँच तोड़ा और वे उसको उत्तर दें कि अचनानक टूट गया है, तो यह उत्तर ग़लत होगा। इसलिए कि उसने यह नहीं पूछा था कि खिड़की का काँच कैसे टूटा, बल्कि उसने यह पूछा था कि तोड़ा किसने है? आकस्मिता क्रिया का विषेशण है, न कि कर्ता। सही उत्तर यह होगा कि वह कहें कि इसको अमुक ने तोड़ा है। फिर बयान करें कि उसने इसे जानबूझ कर तोड़ा है अचनानक टूट गया है। यह बात ब्रह्मांड और सृष्टियों पर पूरे तौर पर लागू होती है।
यदि हम प्रश्न करें कि किसने ब्रह्मांड और सृष्टियों को बनाया और कोई उत्तर दे कि यह अचानक वजूद में आ गये, तो यह उत्तर ग़लत होगा। इसलिए कि हमने यह प्रश्न नहीं किया है कि ब्रह्मांड वजूद में कैसे आया, बल्कि हमने यह पूछा है कि किसने ब्रह्मांड को पैदा किया है। संयोग (आकस्मिता) कोई कर्ता नहीं है और न वह ब्रह्मांड का सृष्टिकर्ता है।
यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता ने उसे संयोग से बना दिया है या मक़सद के तहत बनाया है? बेशक, कार्य और उसके परिणाम ही हमें इसका जवाब दे सकते हैं।
यदि हम खिड़की के उदाहरण की ओर लौटें और यह मानें कि एक व्यक्ति अपने कमरे में प्रवेश करता है और खिड़की का काँच टूटा हुआ पाता है, तो अपने घर वालों से प्रश्न करता है कि किसने खिड़की का काँच तोड़ा और वे उसको उत्तर देते हैं कि अमुक ने इसे संयोग से तोड़ दिया। तो यह उत्तर स्वीकार्य एवं सही है, इसलिए कि काँच का टूटना बिना योजना के होने वाला काम है और हो सकता है कि अचानक या संयोग से टूट जाए। परन्तु यदि वही व्यक्ति दूसरे दिन अपने कमरे में प्रवेश करे, और पाए

कि खिड़की के काँच की मरम्मत हो चुकी है, और वह अपने घर वाले से उसके बारे पूछे, और वे उसको उत्तर दें कि अनुक ने उसको अचानक ठीक कर दिया, तो यह उत्तर अस्वीकार्य होगा, बल्कि तार्किक तौर पर असंभव होगा, क्योंकि काँच की मरम्मत का काम कोई बिना योजना के होने वाला काम नहीं है। बल्कि यह एक व्यवस्थित क्रिया है, पहले टूटे हुए काँच को हटाना होगा, खिड़की के फ्रेम को साफ़ करना होगा, फिर फ्रेम के नाप से नए काँच को ठीक से काटना होगा, फिर नएँ काटे हुए काँच को रबर से फ्रेम में सेट करना होगा, फिर फ्रेम को उसके स्थान पर सेट करना होगा। यह तमाम काम अचानक से नहीं हो सकते हैं, बल्कि इच्छा से होंगे। तार्किक नियम कहता है कि यदि काम किसी व्यवस्था के तहत नहीं, बल्कि बिना योजना के होने वाला हो, तो वह अचानक हो सकता है। लेकिन जहाँ तक समन्वित एवं संगठित क्रिया की बात है, या ऐसा काम जो किसी व्यवस्था के तहत हुआ हो, तो वह अचानक नहीं हो सकता है, बल्कि वह इरादे के साथ होता है। जब हम ब्रह्मांड और प्राणियों पर नज़र दौड़ाते हैं तो हम पाते हैं कि यह सुदृढ़ व्यवस्था के तहत बनाए गए हैं, जैसा कि यह सटीक नियमों के अधीन होकर संचालित होते हैं। इसलिए हम कहते हैं कि यह तार्किक तौर पर असंभव है कि ब्रह्मांड और प्राणियों का निर्मान अचानक या संयोग से हो गया हो, बल्कि यह सब कुछ एक इरादे के तहत पैदा किए गए हैं। इस प्रकार सृष्टि की रचना के प्रश्न से संयोग बिलकुल बाहर हो जाता है। [10] चैनल यक़ीन, नास्तिकता और अधर्म की आलोचना
https://www.youtube.com/watch?v=HHASgETgqxI
एक सृष्टिकर्ता के अस्तित्व के कुछ प्रमाण इस प्रकार हैं :
1- सृष्टि करना एवं अस्तित्व में लाना :
अर्थात ब्रह्मांड को अनस्तित्व से अस्ततित्व प्रदान करना एक पूज्य सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है।
"वस्तुतः आकाशों तथा धरती की रचना और रात तथा दिन के एक के पश्चात् एक आते-जाते रहने में, बुद्धिमानों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।" 2- अनिवार्य होना :
सूरा आल-ए-इमरान : 190]
यदि हम कहें कि हर वस्तु का एक स्रोत है, और उस स्रोत का एक स्रोत है, और यह सिलसिला लगातार चलता रहे, तो तर्क यह कहता है कि हम किसी आरंभ या अंत तक पहुँचें। यह ज़रूरी है कि हम एक ऐसे स्रोत तक पहुँचें, जिसका कोई स्रोत न हो, जिसको हम "मूल कारण" के नाम से जानते हैं, जो मूल घटना से अलग एक चीज़ है। उदाहरण के तौर पर, जब हम महाविस्फोट को मूल घटना मान लें, तो सृष्टिकर्ता वह मूल साधन उत्पन्न करने वाला है, जिसने इस घटना को अंजाम दिया।
3- सुदृढ़ तथा व्यवस्थित बनाना :
अर्थात ब्रह्मांड का सूक्ष्म निर्माण तथा उसके सटीक नियम एक पूज्य सृष्टिकर्ता के अस्तित्व का प्रमाण हैं।
"जिसने ऊपर-तले सात आकाश बनाए। तुम अत्यंत दयावान् की रचना में कोई असंगति नहीं देखोगे। फिर पुनः देखो, क्या तुम्हें कोई दरार दिखाई देता है?" [12] "निःसंदेह हमने प्रत्येक वस्तु को एक अनुमान के साथ पैदा किया है।" [13] [सूरा अल-मुल्क : 3] 4- ध्यान रखना :
[सूरा अल-क़मर : 49]
ब्रह्मांड का निर्माण कुछ इस तरह किया गया है कि वह मानव जीवन के लिए बिल्कुल मुनासिब हो और यह सब अल्लाह की सुन्दरता एवं रहमत के गुणों को दर्शाता है।
"अल्लाह वह है, जिसने आकाशों तथा धरती को पैदा किया, और आकाश से कुछ पानी उतारा, फिर उसके द्वारा तुम्हारे लिए फलों में से कुछ जीविका निकाली, और तुम्हारे लिए नौकाओं को वशीभूत कर दिया, ताकि वे सागर में उसके आदेश से चलें और तुम्हारे लिए नदियों को वशीभूत कर दिया।" [14] 5- वशीभूत तथा प्रबंध करना :
[सूरा इब्राहीम : 32]
यह अल्लाह के प्रताप तथा असीम शक्ति के गुणों से संबंधित है।
"तथा उसने चौपायों को पैदा किया, जिनमें तुम्हारे लिए गर्मी प्राप्त करने का सामान और बहुत-से लाभ हैं और उन्हीं में से तुम खाते हो। तथा उनमें तुम्हारे लिए एक सौंदर्य है, जब तुम शाम को चराकर लाते हो और जब सुबह चराने को ले जाते हो। और वे तुम्हारे बोझ, उस नगर तक लादकर ले जाते हैं, जहाँ तक तुम बिना कठोर परिश्रम के कभी पहुँचने वाले न थे। निःसंदेह तुम्हारा पालनहार अति करुणामय, अत्यंत दयावान् है। तथा घोड़े, खच्चर और गधे पैदा किए, ताकि तुम उनपर सवार हो और शोभा के लिए। तथा वह (अल्लाह) ऐसी चीज़ें पैदा करता है, जो तुम नहीं जानते।" [15] 6- ख़ास करना :
[सूरा अल-नह्ल : 5-8]
इसका मतलब है कि हम ब्रह्मांड में जो भी चीज़ देखते हैं, उसके कई रूप हो सकते थे, परन्तु अल्लाह ने उसके लिए उन रूपों में से सबसे उत्तम रूप को चुना है।
"फिर तुमने उस पानी के बारे में विचार किया, जिसे तुम पीते हो? क्या तुमने उसे बादल से बरसाया है अथवा हम उसे बरसाने वाले हैं? यदि हम चाहें तो उसे खारा कर दें, फिर तुम आभार व्यक्त क्यों नहीं करते?" [16] "क्या आपने अपने पालनहार को नहीं देखा कि वह किस प्रकार छाया को फैलाता है? यदि वह चाहता, तो उसे स्थिर बना देता। फिर हमने सूर्य को उस छाया की निशानी बना दी।" [17] [सूरा अल-वाक़िया : 68-70] क़ुरआन यह समझाने के लिए कई संभावनाओं का उल्लेख करता है कि ब्रह्मांड कैसे बना और कैसे अस्तित्व में आया। [18] [सूरा अल-फ़ुरक़ान : 45] [सूरा अल-तूर : 35-37] "क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं या यह स्वयं पैदा करने वाले हैं? या इन्होंने ही पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? वास्तव में, ये विश्वास ही नहीं रखते हैं। या फिर इनके पास आपके पालनहार के ख़ज़ाने हैं या यही (उसके) अधिकारी हैं?" [19] क्या यह लोग बिना किसी पैदा करने वाले के स्वयं पैदा हो गए हैं? :
The Divine Reality: God, Islam & The Mirage of Atheism. Hamza Andreas Tzortzi
यह परिकल्पना कि ब्रह्मांड का कोई निर्माता नहीं है, कई प्राकृतिक नियमों के विरूद्ध है, जो हम अपने आस-पास देखते हैं। एक साधारण-सा उदाहरण, जैसा कि हम कहें कि मिस्र के पिरामिड ऐसे ही अस्तित्व में आ गए हैं, इस संभावना का खंडन करने के लिए पर्याप्त है।
या यह स्वयं पैदा करने वाले हैं? :

अपने आपको पैदा करना : क्या ब्रह्मांड अपने आपको पैदा कर सकता है? खुद "सृष्टि" शब्द ऐसी चीज़ को इंगित करता है, जो पहले नहीं थी और फिर अस्तित्व में आई। अपने आपको पैदा करना तार्किक और व्यावहारिक रूप से असंभव है। यह इस वास्तविकता पर आधारित है कि अपने आपको पैदा करने का अर्थ यह है कि कोई चीज़ एक ही समय में मौजूद थी भी और नहीं भी। ज़ाहिर-सी बात है कि ऐसा होना असंभव है। यह कहना कि मनुष्य ने अपने आपको पैदा किया है, इसका अर्थ है कि वह अस्तित्व में आने से पहले भी मौजूद था। यहाँ तक कि जब कुछ संशयवादी बात करते हैं और एकल-कोशिका वाले जीवों में आत्म-निर्माण की संभावना पर जोर देते हैं, तो इस चर्चा को शुरू करने के लिए पहले यह मान लेना पड़ेगा कि पहली कोशिका पहले से मौजूद रही है। फिर, यदि हम इस बात को मान लें, तो यह आत्म-निर्माण नहीं है, बल्कि यह एक प्रजनन विधि (अलैंगिक प्रजनन) है, जिससे एक ही जीव से वंश उत्पन्न होता है और उसे केवल उसी पिता की आनुवंशिक सामग्री विरासत में मिलती है। जब आप लोगों से प्रश्न करेंगे कि आपको किसने पैदा किया है, तो बहुत-से लोग यह सादा-सा उत्तर दे देंगे कि मेरे माता-पिता मेरे इस दुनिया में आने के मूल कारण हैं। यह स्पष्ट है कि यह संक्षिप्त उत्तर है और इस गुत्थी को सुलझाने से बाहर निकलने का रास्ता खोजने का प्रयास मात्र है। स्वाभाविक तौर पर मनुष्य गहरा मंथन करना नहीं चाहता और न इसकी कोशिश करता है। वह जानता है कि उसके माँ-बाप मर जाएंगे और वह ज़िंदा रहेगा। फिर उसके बाद उसके बच्चे आएँगे, जो यही उत्तर देंगे। वह अच्छी तरह जानता है कि उनके बच्चों को पैदा करने में उसका कोई हाथ नहीं है। अतः वास्तविक प्रश्न यह है कि किसने मानव जाति को पैदा किया?

या उन्होंने ही आकाशों तथा धरती को पैदा किया है? :

यह दावा कि उसी ने आकाशों एवं धरती को पैदा किया है, उस सर्वशक्तिमान अल्लाह के सिवा किसी ने नहीं किया है, जिसने मानव जाति की ओर अपने रसूलों को भेजकर इस वास्तविकता से परदा उठाया है। सत्य तो यह है कि वही सृष्टिकर्ता, अस्तित्व प्रदान करने वाला और आकाशों तथा धरती एवं उनके बीच की सारी चीज़ों का मालिक है। उसका कोई साझी नहीं है और न ही कोई बच्चा।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"आप कह दें : उन्हें पुकारो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (पूज्य) समझते हो। वह कण बराबर भी अधिकार नहीं रखते, न आकाशों में और न धरती में तथा उनका उन दोनों में कोई भाग नहीं है और उस अल्लाह का उनमें से कोई सहायक नहीं है।" [20] [सूरा सबा : 22]

यहाँ एक उदाहरण देख सकते हैं कि यदि किसी सार्वजनिक स्थल में कोई बैग पड़ा मिले और कोई व्यक्ति उसका दावा न करे, केवल एक व्यक्ति सामने आए और बैग तथा उसके अंदर जो कुछ है, उसकी तफ़सील यह प्रमाणित करने के लिए बताए कि बैग उसी का है, तो यह बैग उसी का माना जाएगा, जब तक कोई दूसरा दावेदार सामने न आए। यह इनसानी क़ानूनों के अनुसार है।

सृष्टिकर्ता का अस्तित्व :

यह तमाम बातें हमें एक ही उत्तर की ओर ले जाती हैं, जिससे भागना संभव नहीं है। वह यह है कि सृष्टिकर्ता का वजूद है। आश्चर्य है कि मनुष्य इस संभावना से दूर हमेशा बहुत सारी संभावनाओं को गढ़ता है। गोया कि यह एक काल्पनिक संभावना हो, जिसको सच मानना मुम्किन न हो और न उसकी सच्चाई का पता लगाया जा सकता हो। अगर हम निष्पक्षता और सच्चाई के साथ विचार करें और एक गहरी वैज्ञानिक दृष्टि से देखें, तो इस हक़ीक़त तक पहुँच जाएँगे कि पूज्य सृष्टिकर्ता के बारे में सब कुछ समझ पाना संभव नहीं है। क्योंकि उसी ने पूरे ब्रह्माण्ड को पैदा किया है, इसलिए यह ज़रूरी है कि वह इन्सानी सोच से ऊपर हो। यह मानना तर्कसंगत है कि इस अदृश्य शक्ति के अस्तित्व तक पहुँचना आसान नहीं है, इसलिए ज़रूरी है कि यह शक्ति स्वयं अपने बारे इस तरह से बताए कि मानव दिमाग़ की समझ में आ जाए। इसी तरह मनुष्य के लिए भी ज़रूरी है कि वह यक़ीन करे कि यह अदृश्य शक्ति वास्तविक है, मौजूद है और इस अंतिम संभावना पर यक़ीन से भागना संभव नहीं है, जो इस कायनात के राज़ की शेष व्याख्या है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"अतः अल्लाह की ओर दौड़ो। निश्चय ही मैं तुम्हारे लिए उसकी ओर से स्पष्ट सचेतकर्ता हूँ।" [21] यदि हम हमेशा रहने वाला जीवन, नेमत और भलाई चाहते हैं, तो हमारे लिए इस माबूद, सृष्टिकर्ता और पैदा करने वाले पर ईमान लाना एवं उसे मानना ज़रूरी है।

[सूरा अल-ज़ारियात : 50]

सृष्टिकर्ता के अस्तित्व का अनुभव किया जाने वाला प्रमाण क्या है?

हम इंद्रधनुष और मरीचिका देखते हैं, जबकि इनका कोई वजूद नहीं होता। हम गुरुत्वाकर्षण को देखे बिना उसके अस्तित्व को सच मानते हैं, सिर्फ इसलिए कि यह भौतिक विज्ञान द्वारा सिद्ध किया गया है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"उसे निगाहें नहीं पातीं और वह सब निगाहों को पाता है और वही अत्यंत सूक्ष्मदर्शी, सब ख़बर रखने वाला है।" [22] केवल उदाहरण के तौर और बात को समझने के देखिए कि मनुष्य किसी ऐसी चीज का वर्णन नहीं कर सकता जो भौतिक नहीं हो, जैसे कि "सोच"। किलो ग्राम में उसका वज़न, सेंटमीटर में उसकी लंबाई, उसकी रासायनिक संरचना, उसका रंग, उसका दबाव और उसकी शक्ल एवं सूरत आदि बयान नहीं की जा सकती।

[सूरा अल-अनआम: 103]

दरअसल बोध को चार प्रकारों में विभाजित किया गया है :

अनुभव पर आधारित बोध : जैसे आप कोई चीज़ अपनी आँख से देखते हैं।

कल्पना पर आधारित बोध : जैसे आप किसी महसूस सूरत की तुलना अपनी पिछली याद या अनुभवों के साथ करें।

विचार पर आधारित बोध : दूसरों की भावनाओं को महसूस करना। जैसा कि आप महसूस करें कि आपका बेटा उदास है।

इन तीनों तरीक़ों में इंसान और जानवर दोनों समान होते हैं।

विवेक पर आधारित बोध : यह केवल मनुष्य की विशेषता है।
नास्तिक लोग बोध के इस प्रकार को निरस्त कर देना चाहते हैं, ताकि इंसान और जानवर बराबर हो जाएं। जबकि विवेक पर आधारित बोध सबसे मज़बूत प्रकार का बोध है, इसलिए कि विवेक के द्वारा ही एहसास की गलतियों को सुधारा जाता है। जैसा कि मैंने पिछले उदाहरण में उल्लेख किया, जब इंसान अपनी आँख से मरीचिका को देखता है, तो विवेक की बारी आती है कि वह अपने मालिक को बताए कि यह केवल मरीचिका है। पानी नहीं है। यह केवल रेत में प्रकाश परावर्तन पड़ने के कारण प्रकट होता है। इसका कोई अस्तित्व नहीं है। उस समय एहसास धोखा खा जाता है और विवेक ही उसे सही मार्ग दिखाता है।
नास्तिक लोग विवेक पर आधारित दलील का इंकार करते हैं और भौतिक दलील की माँग करते हैं और इसको "वैज्ञानिक दलील" का नाम देते हैं। तो क्या तर्कसंगत और दार्शनिक सबूत भी वैज्ञानिक सबूत नहीं है? अवश्य यह भी वैज्ञानिक सबूत है, लेकिन भौतिक नहीं। आप बस छोटे सूक्ष्म जीवों की कल्पना कर सकते हैं, जिन्हें खुली आँखों से नहीं देखा जा सकता। यदि इन जीवों की बात किसी ऐसे इनसान के सामने रखी जाए जो पाँच सौ साल पहले इस धरती पर जी रहा था, तो उसकी प्रतिक्रिया क्या होगी। [23] https://www.youtube.com/watch?v=P3lnWgcv18A फ़ाज़िल सुलैमान हालाँकि अक़्ल सृष्टिकर्ता एवं उसके कुछ गुणों का पता लगा सकती है, परन्तु उसकी एक सीमा है। हो सकता है कुछ बातों की हिकमत का पता लगा ले और कुछ का नहीं। जैसे कोई भी व्यक्ति किसी भौतिक वैज्ञानी जैसे आइंस्टीन के दिमाग़ की हिकमत का पता नहीं कर सकता है। "अल्लाह के लिए उच्च उदाहरण हैं, अल्लाह को पूरे तरीक़े से जान लेने का दावा करना अज्ञानता है। आपको मोटरगाड़ी समुद्र के किनारे तक ले जा सकती है, मगर आपको उसमें चलने के लिए समर्थ नहीं बना सकती। यदि आपसे पूछा जाए कि समुद्र में कितने लीटर पानी है और आप किसी एक संख्या में जवाब दें, तो आप अज्ञान हैं, और यदि कहें कि मुझे नहीं मालूम, तो ज्ञानी हैं। अल्लाह की जानकारी का एक मात्र रास्ता ब्रह्मांड में मौजूद उसकी निशानियाँ तथा क़ुरआन की आयतें हैं।" [24] शैख़ मुहम्मद रातिब अल-नाबुलसी की बातों की कुछ बातें।
इस्लाम में ज्ञान के स्रोत क़ुरआन, सुन्नत और विद्वानों की सम्मति (इजमा) हैं। जबकि विवेक क़ुरआन एवं सुन्नत, तथा उस सही विवेक से प्रमाणित बात के अधीन है, जो वह्य के विरूद्ध न हो। अल्लाह तआला ने विवेक को इस तरह बनाया है कि वह ब्रह्मांड में मौजूद निशानियों एवं महसूस चीज़ों के द्वारा सही मार्ग तलाश करे, जो वह्य की वास्तविकताओं की गवाही दे, न कि उससे टकराए।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह ही उत्पत्ति का आरंभ करता है, फिर उसे दुहरायेगा? निश्चय ये अल्लाह के लिए बहुत आसान है। (हे नबी!) कह दें कि चलो-फिरो धरती में, फिर देखो कि उसने कैसे उतपत्ति का आरंभ किया है? फिर अल्लाह दूसरी बार भी पैदा करेगा। वास्तव में, अल्लाह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता।" [25] "फिर उसने अपने बन्दे की ओर वह्य की, जो वह्य की।" [19-20] [सूरा अल-अंकबूत : 19-20] एक बुद्धिमान व्यक्ति वह है जो हर चीज़ को समझने की कोशिश करता है, और एक मूर्ख व्यक्ति वह है जो समझता है कि वह हर चीज़ को समझता है। [सूरा अल-नज्म : 10] ज्ञान के बारे सबसे अच्छी बात यह है कि उसकी कोई सीमा नहीं है। हम ज्ञान के समुद्र में जितनी डुबकी लगाएंगे, उतना ही दूसरे ज्ञान प्राप्त करते जाएँगे। परन्तु हम कभी भी पूरा ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते।
अल्लाह तआला ने कहा है :
“(ऐ नबी!) आप कह दें : यदि सागर मेरे पालनहार की बातें लिखने के लिए स्याही बन जाए, तो निश्चय सागर समाप्त हो जाएगा इससे पहले कि मेरे पालनहार की बातें समाप्त हों, यद्यपि हम उसके बराबर और स्याही ले आएँ।” [27] सृष्टिकर्ता अपनी किसी सृष्टि के आकार में क्यों प्रकट नहीं होता?

[सूरा अल-कह्फ़ : 109]

उदाहरण के तौर पर, हालाँकि अल्लाह के लिए उच्च उदाहरण है, परन्तु केवल बात समझाने लिए कहा जा सकता है कि जब इंसान इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का प्रयोग करता है और उसे बाहर से निर्देशित करता है, तो वह उस इलेक्ट्रॉनिक उपकरण के अंदर किसी भी हाल में प्रवेश नही करता।
अगर हम कहें कि अल्लाह तआला ऐसा कर सकता है, इसलिए कि वह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है, तो ऐसे में हमारे लिए यह मानना भी ज़रूरी होगा कि वह एकमात्र पूज्य एवं सृष्टिकर्ता, ऐसे कार्य नहीं करता, जो उसकी शान के अनुरूप न हों। वह इससे बहुत ऊँचा है।
उदाहरण के तौर पर, हालाँकि अल्लाह के लिए उच्च उदाहरण है : कोई भी पुजारी या उच्च धार्मिक पद का व्यक्ति नग्न होकर सार्वजनिक सड़क पर नहीं निकलता है, हालांकि वह ऐसा कर सकता है, लेकिन वह इस सूरत में जनता के सामने नहीं आ सकता, क्योंकि यह व्यवहार उसकी धार्मिक स्थिति के लिए उचित नहीं है।

सृष्टिकर्ता की इबादत में मध्यस्थों को पकड़ना क्यों हमेशा के लिए जहन्नम ले जाने का कारण बनता है?

जैसा कि प्रसिद्ध है कि मानव रचित संविधान में संप्रभुता के अधिकार या बादशाह के अधिकार से छेड़छाड़ करना दूसरे किसी भी अपराध से बढ़कर है। तो बादशाहों के बादशाह के अधिकार के बारे में आपका क्या ख़्याल है? अल्लाह का अपने बन्दों पर अधिकार है कि वे केवल उसी की इबादत करें, जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "अल्लाह का अपने बन्दों पर यह अधिकार है कि वे उसी की इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक (साझी) न करें। और क्या तुम जानते हो कि जब बन्दे ऐसा कर लें, तो अल्लाह पर बन्दों का क्या अधिकार है? (वर्णनकर्ता कहते हैं कि) मैंने कहा : अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। आपने कहा : बन्दों का अल्लाह पर अधिकार यह है कि वह उनको यातना न दे।" हमारे लिए बस इतना समझ लेना काफ़ी है कि हम किसी को कोई उपहार दें और वह किसी और का शुक्रिया अदा करे तथा किसी दूसरे की प्रशंसा करे। हालाँकि अल्लाह के लिए उच्च उदाहरण है, लेकिन यही हाल बन्दों का उनके सृष्टिकर्ता के साथ है। अल्लाह ने उन्हें इतनी

सारी नेमतों से नवाज़ा है कि उनकी कोई गिनती नहीं है और वे अल्लाह को छोड़ दूसरे का धन्यवाद करते हैं। हालाँकि सृष्टिकर्ता हर हाल में बेनियाज़ है और उसे बंदों की प्रशंसा तथा शुक्रिया की ज़रूरत नहीं है।

सृष्टिकर्ता अपने आपको बहुवचन से क्यों इंगित करता है, जबकि वह एक और केवल एक है?

अल्लाह तआला का पवित्र क़ुरआन की बहुत सारी आयतों में अपने लिए "हम" का शब्द प्रयोग करना यह बताता है कि वह एक है, जो सुन्दरता एवं पवित्रता के बहुत सारे गुणों को अपने अंदर समेटे हुए है। इसी प्रकार अरबी भाषा में यह शब्द शक्ति एवं महानता को दर्शाता है। अंग्रेजी भाषा में भी "हम बादशाह" कहा जाता है। इस तरह बहुवचन सर्वनाम का प्रयोग बादशाह, सुल्तान और देश के प्रमुख आदि ऐसे व्यक्तियों के लिए किया जाता है, जो बहुत बड़े पद पर बैठे हों। अलबत्ता, क़ुरआन इबादत के मामले में हमेशा केवल एक अल्लाह की इबादत पर जोर देता है।

अल्लाह ने मानव को कुफ़्र एवं ईमान में से किसी एक को चुनने का विकल्प क्यों दिया है?

अल्लाह तआला ने कहा है :
"आप कह दें कि यह तुम्हारे पालनहार की ओर से यह सत्य है ।जो चाहे ईमान लाए एवं जो चाहे इनकार कर दे।" [28] [सूरा अल-कहफ़ : 29]
सृष्टिकर्ता के लिए यह संभव था कि वह हमें अपने आज्ञापालन एवं इबादत पर मजबूर कर देता, लेकिन मजबूर करने से इन्सान की रचना का अपेक्षित उद्देश्य पूरा नहीं होता।
अल्लाह की हिकमत आदम को पैदा करने और उसे ज्ञान प्रदान करने के माध्यम से प्रदर्शित हुई।
"और उसने आदम को सभी नाम सिखा दिये, फिर उन्हें फ़रिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा कि मुझे इनके नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो।" [29] फिर उन्हें विकल्प को चुनने की क्षमता प्रदान की गई।
[सूरा अल-बक़रा : 31]
"और हमने कहा : ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो, तथा इसमें से जिस स्थान से चाहो, मन के मुताबिक खाओ, और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे।" [30] फिर उनके लिए तौबा और अल्लाह की ओर लौटने का दरवाज़ा खुला रखा गया, यह देखते हुए कि विकल्प अवश्य ही ग़लती, गुनाह एवं ग़लत रास्ते की ओर ले जाने का कारण बनेगा।
[सूरा अल-बक़रा : 35]
"फिर आदम ने अपने पालनहार से कुछ शब्द सीखे, तो उसने उसे क्षमा कर दिया। वह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।" [31] अल्लाह ने आदम -अलैहिस्सलाम- को धरती पर अपना खलीफ़ा बनाना चाहा।
[सूरा अल-बक़रा : 37]
"और (हे नबी! याद करो) जब आपके पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक ख़लीफ़ा बनाने जा रहा हूँ। वे बोले : क्या तू उसमें उसे बनायेग, जो उसमें उपद्रव करेगा तथा रक्त बहायेगा? जबकि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं! (अल्लाह) ने कहा : जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते।" [32] इसलिए इच्छा और चुनने की क्षमता अपने आप में एक वरदान है, अगर इसका सही और सच्चे मार्ग में उपयोग किया जाए। जबकि यह एक अभिशाप है अगर बुरे उद्देश्यों के लिए इसका इस्तेमाल किया जाए।
[सूरा अल-बक़रा : 30]
ज़रूरी है कि इरादा एवं एख़्तियार ख़तरों, फ़ितनों, संघर्ष एवं आत्मा के जिहाद से घिरे हों। यह इंसान के लिए अधिक बड़े दर्जे और सम्मान की बात है, उन (बुरे कर्मों की ओर) झुकने से जो नकली खुशी की तरफ़ ले जाते हैं।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"बिना किसी उज़्र (कारण) के बैठे रहने वाले मोमिन और अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों के साथ जिहाद करने वाले, बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने अपने धनों तथा प्राणों के साथ जिहाद करने वालों को पद के एतिबार से, जिहाद से बैठे रहने वालों पर प्रधानता प्रदान किया है। जबकि अल्लाह ने सब के साथ भलाई का वादा किया है।तथा अल्लाह ने जिहाद करने वालों को महान प्रतिफल देकर, जिहाद से बैठे रहने वालों पर वरीयता प्रदान किया है।" [33] प्रतिफल एवं यातना का औचित्य ही क्या है, यदि हमारा अपना कोई एख़्तियार ही न हो, जिसके आधार पर हम बदले के हक़दार हों।
[सूरा अन-निसा : 95]
लेकिन इन सारी बातों के साथ यह भी ज्ञात होना चाहिए कि इंसान को प्राप्त यह एख़्तियार दुनिया में सीमित है। साथ ही अल्लाह हमारे केवल उन कामों का हिसाब लेगा, जिनको करने या न करने का हमारे पास एख़्तियार रहा हो। जैसे हालात एवं परिस्थिति जिनमें हम पले-बढ़े हैं, उनमें हमारा कोई एख्तियार नहीं है। इसी तरह हमने अपने पिताओं को नहीं चुना है और इसी तरह हमारा रंग और शक्ल कैसी हो, इसमें भी हमारा कोई एख़्तियार नहीं है।

अल्लाह ने इन्सान को क्यों पैदा किया, जबकि वह उससे बेनियाज़ है?

जब इन्सान अपने आपको बहुत अधिक मालदार एवं दानशील पाता है, तो वह अपने दोस्तों एवं रिश्तेदारों को खाने-पीने के लिए बुलाता है।
हमारे यह गुण दरअसल अल्लाह के गुणों का एक छोटा-सा हिस्सा हैं। अल्लाह सृष्टिकर्ता है, उसके सुन्दर एवं प्रताप वाले गुण हैं, वह बड़ा दयालु एवं कृपावान है, वह देने वाला एवं दानशील है। उसने हमें अपनी इबादत के लिए पैदा किया है, ताकि यदि हम निष्ठावान होकर उसकी इबादत करें, उसकी आज्ञा का पालन करें एवं उसके आदेश अनुसार चलें, तो हमपर रहम करे, हमें ख़ुशियाँ प्रदान करे और हमें बहुत कुछ दे। दरअसल इन्सान का हर अच्छा गुण, अल्लाह के गुणों से ही निकला हुआ है।

उसने हम सबको पैदा किया एवं हमें एख़्तियार दिया। अब हमपर है कि हम आज्ञापालन एवं इबादत का मार्ग चुनें या अल्लाह के अस्तित्व का इंकार करके बग़ावत एवं अवज्ञा का रास्ता चुन लें।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"मैंने जिन्नों और इन्सानों को मात्र इसी लिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें। मैं नहीं चाहता हूँ उनसे कोई जीविका और न चाहता हूँ कि वे मुझे खिलायें। अवश्य अल्लाह ही जीविका दाता, शक्तिशाली, बलवान् है।" [34] जहाँ तक अल्लाह के अपनी सृष्टि से निस्पृह होने की बात है, तो यह दलील एवं अक़्ल की बुनियाद पर प्रमाणित बातों में से है।
[सूरा अल-ज़ारियात : 56-58]
अल्लाह तआला ने कहा है :
"अल्लाह सारे संसारों से बेपरवाह है।" [35] जहाँ तक तर्क की बात है, तो सारे संसार का सृष्टिकर्ता, पूर्ण कमाल के गुणों से विशेषित है और पूर्ण कमाल के गुणों में से यह है कि उसे किसी की ज़रूरत न हो, क्योंकि दूसरे की ज़रूरत कमी की निशानी है, जिससे अल्लाह पाक है।
[सूरा अल-अनकबूत : 6]
उसने अन्य प्राणियों के विपरीत इंसान एवं जिन्नात को एख़्तियार की स्वतंत्रता से विशिष्ट बनाया है। वह विशिष्टता यह है कि इंसान केवल अपने इरादे से सारे जहानों के पालनहार का रुख करे एवं निष्ठावान होकर उसकी इबादत करे। इस प्रकार सभी सृष्टियों पर इंसान को प्राथमिकता देने वाली अल्लाह की हिकमत प्राप्त होगी।
सारे जहानों के पालनहार के बारे में जानकारी उसके अच्छे नामों एवं उच्च गुणों की समझ के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है, जिन्हें प्रमुख रूप से दो समूहों में विभाजित किया जा सकता है, जो इस प्रकार हैं :
सुन्दरता पर आधारित नाम (जिन नामों से अल्लाह की सुन्दरता प्रकट होती हो) : हर वह गुण जो रहमत, क्षमा और नरमी का अर्थ प्रदान करे, जैसे रहमान (दयालु), रहीम (कृपावान), रज़्ज़ाक़ (जीविका देने वाला), वह्हाब (प्रदान करने वाला), बर्र (एहसान करने वाला) और रऊफ़ (मेहरबान) आदि।
प्रताप वाले नाम : हर वह गुण जो शक्ति, सामर्थ्य, महानता और डर से संबंधित हो, जैसे अज़ीज़ (संप्रभुता वाला), जब्बार (पराक्रमी), क़ह्हार (सर्वशक्तिमान), क़ाबिज़ (समेटने वाला) और ख़ाफ़िज़ (नीचा करने वाला)।
अल्लाह के गुणों की जानकारी से हम उसकी इबादत उस तरह से कर सकते हैं, जो उसके प्रताप के अनुरूप हो और हम उसे उन चीज़ों से पाक घोषित कर सकते हैं, जो उसकी शान के मुताबिक़ न हों। उसकी रहमत की आशा कर सकते हैं और उसके क्रोध एवं यातना से बच सकते हैं। उसकी इबादत का मतलब है उसके आदेशों का पालन करना, उसकी मना की हुई चीज़ों से बचना, सुधारवाद के मार्ग पर चलना और धरती को आबाद करने का प्रयास करना। इस बुनियाद पर देखा जाए तो दुनिया का यह जीवन इंसानों की परीक्षा और उनके चयन की एक प्रक्रिया है, ताकि अच्छे और बुरे लोगों की पहचान हो सके और अल्लाह अपना डर रखने वालों के दर्जे को ऊँचा करे तथा इसके फलस्वरूप वे धरती पर उत्तराधिकारी बनने एवं आख़िरत में जन्नत पाने के हक़दार बन सकें। जबकि बिगाड़ पैदा करने वालों को दुनिया में रुसवाई का सामना हो और उनका ठिकाना जहन्नम की आग हो।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"वास्तव में जो कुछ धरती के उपर है, हमने उनको उसके लिए शोभा बनाया है, ताकि लोगों की परीक्षा लें कि उनमें कौन कर्म में अच्छा है।" [36] अल्लाह के मानव जाति को पैदा करने के दो पहलू हैं :
[सूरा अल-कहफ़ : 7]
एक पहलू इंसान से संबंधित है : इस पहलू को खुले प्रमाणों के साथ क़ुरआन में स्पष्ट कर दिया गया है और वह है जन्नत प्राप्त करने के लिए अल्लाह की इबादत करना।
जबकि दूसरा पहलू सृष्टिकर्ता से संबंधित है। वह दरअसल पैदा करने की हिकमत है। यहाँ हर व्यक्ति को मालूम होना चाहिए कि हिकमत उसके अकेले का मामला है, किसी सृष्टि का नहीं। हमारा ज्ञान सीमित है, जबकि अल्लाह का ज्ञान पूर्ण एवं व्यापक है। अतः इनसान को पैदा करना, मौत देना, दोबारा उठाना, आख़िरत का जीवन यह सब सृष्टि का एक बहुत ही छोटा-सा हिस्सा है और यह उसी का काम है, न कि फ़रिश्तों, इन्सान या किसी और का।
फ़रिश्तों ने आदम (अलैहिस्सलाम) को पैदा करते समय यही सवाल अपने रब से किया था, तो अल्लाह ने उन्हें स्पष्ट उत्तर देते हुए का था :
"और (हे नबी! याद करो) जब आपके पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक ख़लीफ़ा बनाने जा रहा हूँ। वे बो ले: क्या तू उसमें उसे बनायेग, जो उसमें उपद्रव करेगा तथा रक्त बहायेगा? जबकि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं! (अल्लाह) ने कहा: जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते।" [37] सूरा अल-बक़रा : 30 फ़रिश्तों के सवाल पर अल्लाह का जवाब कि वह उससे अवगत है, जिससे फ़रिश्ते अवगत नहीं हैं, कई चीज़ों को स्पष्ट करता है : इंसान को पैदा करने की हिकमत अल्लाह के साथ ख़ास है। यह पूर्ण रूप से अल्लाह से संबंधित बात है। किसी भी सृष्टि का इससे कोई संबंध नहीं है। क्योंकि वह : "जो चाहे करता है।" [38] और वह "उत्तर दायी नहीं है, अपने कार्य का और सभी (उसके समक्ष) उत्तर दायी हैं।" [39] मानव जाति को पैदा करने का कारण केवल अल्लाह जानता है। फ़रिश्ते नहीं जानते। फिर जब मामला अल्लाह के पूर्ण ज्ञान से संबंधित है, तो वही इसकी हिकमत को अधिक जानता है और उसकी अनुमति के बिना इस हिकमत को कोई नहीं जान सकता। [सूरा अल-बुरूज : 16] [सूरा अल-अंबिया : 23]

सृष्टिकर्ता ने इन्सान को पैदा होने या न होने का एख़्तियार क्यों नहीं दिया?

यदि अल्लाह सृष्टि को अस्तित्व में आने या न आने का एख़्तियार देता, तो इसके लिए ज़रूरी होता सृष्टि का वजूद पहले से रहा हो। क्योंकि बिना अस्तित्व के मानव की कोई राय ही कैसे हो सकती है? यहाँ सवाल अस्तित्व में होने या न होने का है। इंसान का जीवन के साथ जुड़ा होना एवं उसे खोने का डर उसका इस नेमत से राज़ी होने का सबसे बड़ा प्रमाण है। ज़िन्दगी की नेमत मानव के लिए एक परीक्षा है, ताकि अच्छे इनसान जो अपने रब से राज़ी हों एवं बुरे इंसान जो अपने रब से नाराज़ हों,

दोनों के बीच अंतर किया जा सके। अतः मानव की रचना से अल्लाह का उद्देश्य है उससे राज़ी रहने वालों को अलग करना, ताकि उन्हें आख़िरत में अल्लाह का सम्मानीय घर प्राप्त हो।
यह सवाल दरअसल इस बात का प्रमाण है कि जब संदेह दिमाग़ों में घर कर जाए, तो सोच व विचार ख़त्म हो जाता है और यह क़ुरआन के चमत्कार होने का एक प्रमाण है।
ख़ुद अल्लाह ताआला का फ़रमान है :
"मैं अपनी आयतों (निशानियों) से उन लोगों को फेर दूँगा, जो धरती में नाहक़ बड़े बनते हैं। और यदि वे प्रत्येक निशानी देख लें, तब भी उसपर ईमान नहीं लाते। और यदि वे भलाई का मार्ग देख लें, तो उसे मार्ग नहीं बनाते और यदि गुमराही का मार्ग देखें, तो उसे मार्ग बना लेते हैं। यह इस कारण कि उन्होंने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठलाया और वे उनसे ग़ाफ़िल थे।" [40]
इसलिए यह मानना सही नहीं है कि इन्सान की रचना से अल्लाह का जो उद्देश्य है, उसे जानना हमारा अधिकार है और हम उसका मुतालबा कर सकते हैं। अतः उसे हमसे छुपा लेना भी हम परकोई ज़ुल्म नहीं है।
[सूरा अल-आराफ़ : 146]
जब अल्लाह हमें हमेशा रहने वाला जीवन प्रदान करेगा और ऐसी नेमत एवं जन्नत में रखेगा जिसके बारे में न किसी कान ने सुना होगा, न जिसे किसी आँख ने देखा होगा और न किसी इन्सान के दिल में उसका ख़्याल आया होगा, तो इसमें क्या ज़ुल्म है?
वह हमें आज़ाद इच्छा प्रदान करता है, ताकि हम ख़ुद निर्णय लें कि हमें उस नेमत को चुनना है या इस यातना को।
अल्लाह हमें उस चीज़ के बारे में बताता है, जो हमारी प्रतीक्षा कर रही है। हमारे सामने एक स्पष्ट रणनीति प्रस्तुत करता है, ताकि हम उस नेमत तक पहुँच सकें और अज़ाब से बच सकें।
अल्लाह हमें विभिन्न तरीक़ों एवं पद्धतियों से उस जन्नत के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है और बार-बार हमें जहन्नम के मार्ग पर चलने से सावधान करता है।
अल्लाह हमें जन्नत वालों की कहानियाँ सुनाता है कि कैसे उन्होंने इसे प्राप्त किया और जहन्नम वालों के क़िस्से सुनाता है कि कैसे वे अज़ाब तक पहुँचे, ताकि हम इससे सबक़ हासिल करें।
इसी तरह वह जन्नत वालों तथा जहन्नम वालों के बीच होने वाली बातचीत को बयान करता है, ताकि हम सब कुछ अच्छी तरह समझ जाएँ।
अल्लाह हमारी नेकी को दस गुना बढ़ा देता है और गुनाह को एक ही गुनाह गिनता है और इसके बारे हमें भी बताता है, ताकि हम नेकी के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लें।
अल्लाह हमें बताता है कि यदि हम बरे कार्य के बाद अच्छा कार्य करें, तो हमारे गुनाह मिट जाते हैं। इस प्रकार हम दस नेकियाँ कमाते हैं, तो हमारे दस गुनाह मिटा दिए जाते हैं।
वह हमें बताता है कि तौबा पहले के गुनाहों को ख़त्म कर देती है। गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा हो जाता है, जैसे उसका कोई गुनाह ही न हो।
अल्लाह भलाई का रास्ता दिखाने वाले को भला करने वाले के ही तरह मानता है।
अल्लाह नेकि कमाने के रास्तों को आसान बनाता है। हम क्षमायाचना, तसबीह एवं अज़कार के द्वारा बड़े पुण्य कमा सकते हैं और बिना किसी परेशानी के अपने गुनाहों से छुटकारा पा सकते हैं।
वह क़ुरआन का हर अक्षर पढ़ने के बदले में हमारे लिए दस नेकियाँ लिखता है।
वह हमारे केवल भला काम करने की नीयत करने के बदले में नेकी लिख देता है, यद्यपि उसके बाद हम उसे कर न सकें।
परन्तु बुरे काम की नीयत के बदले में हमें दंडित नहीं करता, जब तक कि बुरा काम हमसे हो न जाए।
अल्लाह हमसे वादा करता है कि यदि हम भलाई के काम में अग्रगामी रहें, तो वह हमें अधिक सुपथ दिखाएगा, हमें शक्ति प्रदान करेगा एवं हमारे लिए भलाई के रास्ते आसान कर देगा।
इसमें कौन-सा अत्याचार है?
वास्तव में, अल्लाह हमारे साथ केवल न्याय का मामला नहीं करता, बल्कि वह हमारे साथ रहमत, उदारता एवं एहसान का मामला भी करता है।

वह धर्म जिसे सृष्टिकर्ता ने अपने बन्दों के लिए पसंद किया है :

धर्म क्या है?

धर्म जीवन व्यतीत करने का तरीक़ा है, जो इंसान के संबंध को उसके सृष्टिकर्ता के साथ एवं उसके आस-पास की चीज़ों के साथ सुनियोजित करता है। धर्म आख़िरत का रास्ता है।

धर्म की आवश्यकता क्या है?

धर्म की आवश्यकता खाने-पीने की आवश्यकता से भी अधिक है। इंसान स्वाभाविक रूप से धार्मिक है। यदि वह सत्य धर्म को नहीं पा सका, तो अपने लिए कोई न कोई धर्म गढ़ लेगा, जैसा कि मूर्तिपूजा पर आधारित धर्मों को लोगों ने गढ़ लिया। इंसान को जिस प्रकार इस दुनिया में शांति की आवश्यकता है, उसी प्रकार उसे मरने के बाद शांति की आवश्यकता है।
और सत्य धर्म ही अपने अनुयायियों को दोनों जहनों में पूर्ण शांति प्रदान करता है। उदाहरण स्वरूप :
यदि हम एक अनजान रास्ते पर चलें और हमारे सामने दो विकल्प हों। एक यह कि हम रास्ते में मौजूद बोर्डों के निर्देशों का पालन करें और दूसरा यह कि अंदाज़ा लगाने की कोशिश करें, जो हमारे खो जाने या हलाक हो जाने का कारण बन सकता है।

यदि हम एक टीवी खरीदें और उसके निर्देशों का पालन किए बिना उसे चालू करने का प्रयास करें, तो हम उसे खराब कर देंगे। एक ही निर्माता का टीवी सेट, जो यहाँ पहुँचता है, वह उसी अनुदेश पुस्तिका के साथ दूसरे देशों तक भी पहुँचता है। हमें एक ही तरह से इसका इस्तेमाल करना चाहिए।

उदाहरण के तौर पर यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से संबंध स्थापित करने की कोशिश करे, तो दूसरे व्यक्ति को चाहिए कि वह उसे कोई संभावित साधन बताए। मसलन कहे कि वह उससे फोन पर बात करे। ई-मेल से संबंध स्थापित करने का प्रयास न करे। अब ज़रूरी है कि वह उसी फोन नंबर का प्रयोग करे, जो उसे दिया गया है। किसी दूसरे नंबर से संबंध स्थापित करना संभव नहीं होगा।

पिछले उदाहरण बताते हैं कि इन्सान के लिए अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करते हुए अल्लाह की इबादत करना संभव नहीं है, क्योंकि वह इस तरह से दूसरे को क्षति पहुँचाने से पूर्व अपने आपको क्षति पहुँचाएगा। हम कुछ समुदायों को देखते हैं कि वह सारे संसारों के पालनहार के साथ संबंध स्थापित करने के लिए अपनी इबादत के स्थलों में नाचते-गाते हैं, जबकि दूसरे लोग अपनी आस्था के अनुसार अपने पूज्य को जगाने के लिए ताली पीटते हैं। कुछ लोग मध्यस्थ के द्वारा अल्लाह की इबादत करते हैं और यह धारणा रखते हैं कि अल्लाह मानव या पत्थर के आकार में प्रकट होता है। अल्लाह चाहता है कि वह हमें खुद अपने आपसे सुरक्षित रखे, जब हम उन चीज़ों की पूजा करते हैं जो हमें न लाभ पहुँचाती हैं न हानि, बल्कि वे आख़िरत में हमारी बर्बादी का कारण बनती हैं। अल्लाह के साथ ग़ैर अल्लाह की इबादत एक बहुत बड़ा गुनाह है और उसकी सज़ा सदैव के लिए नरक है। यह अल्लाह की महानता है कि उसने हमारे लिए एक व्यवस्था स्थापित की, जिसके अनुसार हम सब चलें, ताकि उसके तथा हमारे इर्द-गिर्द के लोगों के साथ हमारा संबंध स्थापित हो और इसी को धर्म कहा जाता है।

सत्य धर्म की विशेषताएँ क्या हैं?

यह आवश्यक है कि सत्य धर्म इंसान की प्रथम फ़ितरत के अनुसार हो, जिसे बिना किसी मध्यस्थ के अपने सृष्टिकर्ता के साथ सीधे संबंध की आवश्यकता होती है और जो इंसान में सद्गुणों और अच्छे आचरणों का प्रतिनिधित्व करती है।

वह धर्म अनिवार्य रूप से एक हो, आसान हो, सरल हो, समझ में आने वाला हो, जटिल न हो तथा हर युग व स्थान के लिए उचित हो।

वह हर युग में इंसान की आवश्यकता के अनुसार, क़ानूनों में विविधता के साथ सभी नस्लों, देशों और हर प्रकार के इंसान के लिए स्थापित हो। वह मानव निर्मित रस्मों और रिवाजों की तरह न इच्छाओं के अनुसार की जाने वाली ज़्यादती को स्वीकार करे और न कमी को।

उसमें स्पष्ट आस्थाएँ हों, उसे किसी मध्यस्थ की ज़रूरत न हो और वह केवल भावनाओं पर आधारित न हो, बल्कि उसका आधार स्पष्ट एवं सही दलील पर हो।

उसके दायरे में जीवन की सारी समस्याओं के साथ-साथ हर युग एवं हर स्थान आता हो। इसी प्रकार उसे दुनिया एवं आख़िरत के अनुकूल होना चाहिए। वह आत्मा को बनाए, परन्तु शरीर को भी न भूले।

वह इंसान की जान, इज़्ज़त व सम्मान, धन, अधिकार एवं विवेक की रक्षा करे।

इस प्रकार जो व्यक्ति मानव स्वभाव के अनुसार आई हुई इस जीवन पद्धति का पालन नहीं करेगा, वह उथल-पुथल और अस्थिरता की स्थिति में रहेगा, बेचैनी महसूस करेगा और आख़िरत का अज़ाब तो अलग है।

धर्म की छत्रछाया में आचरण के पालन का क्या महत्व है?

जब मानव जाति फ़ना हो जाएगी, जो केवल अल्लाह बाक़ी रह जाएगा, जो हमेशा जीवित रहेगा और जिसे मौत नहीं आनी है। जो व्यक्ति धर्म की छत्रछाया में आचरण के पालन के महत्व को नकारता है, वह उस व्यक्ति की तरह है, जो बारह वर्ष क्लास में पढ़े और अंत में कहे कि मुझे सर्टिफिकेट नहीं चाहिए।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"और हम उसकी ओर आएँगे जो उन्होंने कोई भी कर्म किया होगा, तो उसे बिखरी हुई धूल बना देंगे।" [41] धर्म का उद्देश्य यह है कि इंसान से उसके रब का परिचय कराए। फिर इंसान को उसके अस्तित्व के स्रोत, उसके मार्ग एवं उसके अंजाम से अवगत कराए। अच्छा अंत एवं अच्छा ठिकाना सारे संसार के पालनहार की जानकारी हासिल करके, उसकी इबादत तथा उसकी रज़ामंदी के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है और यह रज़ामंदी अच्छे आचरण से धरती को आबाद करके प्राप्त हो सकती है। शर्त यह है कि बन्दे के काम अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए हों। [अल- फ़ुरक़ान : 23] धरती को आबाद करना एवं अच्छे आचरण का पालन करना, दोनों धर्म का उद्देश्य नहीं हैं, लेकिन वास्तव में दोनों साधन हैं।

मान लीजिए कि किसी व्यक्ति ने पेंशन प्राप्त करने के लिए किसी सामाजिक सुरक्षा संस्था में साइन अप किया और कंपनी ने घोषणा कर दी कि वह पेंशन का भुगतान नहीं कर पाएगी और जल्द ही वह बंद हो जाएगी। अब यह जानने के बाद क्या वह उस संस्था के साथ जुड़ा रहेगा?

जब इंसान मानवता के निश्चित अंत को जान लेगा और उसे इस बात का विश्वास हो जाएगा कि वह इस सफर के अंत में उसे बदला देने की क्षमता नहीं रखती है तथा मानवता की भलाई के लिए उसने जो कार्य किए हैं, सब बर्बाद हो जाएंगे, तो उसे सख़्त विफलता का एहसास होगा। मोमिन वह है जो नेक काम करे, मेहनत करे, लोगों के साथ अच्छा मामला और मनुष्यता की मदद भी करे, लेकिन यह सब अल्लाह के रास्ते में। इसके नतीजे में वह दुनिया एवं आख़िरत में ख़ुशी प्राप्त करेगा। इस बात का कोई अर्थ नहीं है कि कामगार अपने दूसरे साथियों के साथ संबंध बनाए रखे, उनका सम्मान करे, मगर अपने मालिक के साथ संबंध को नज़र अंदाज़ करे। इसी लिए जीवन में भलाई एवं दूसरे के सम्मान को पाने के लिए ज़रूरी है कि अपने सृष्टिकर्ता के साथ हमारा संबंध अच्छा एवं मज़बूत हो। इसी के साथ हम कहेंगे कि वह कौन-सा कारण है, जो एक व्यक्ति को नैतिक मूल्यों का पालन करने, क़ानूनों का सम्मान करने एवं दूसरों की इज़्ज़त करने के लिए प्रेरित करता है? या वह कौन-सी व्यवस्था है, जो इंसान को व्यवस्थित करती है और उसे बुराई के बजाय भलाई करने पर मजबूर करती है? यदि इसका उत्तर यह हो कि यह क़ानून की शक्ति है, तो हम इसका खंडन करेंगे और कहेंगे कि क़ानून हर युग व स्थान में मौजूद नहीं होता। वह अकेले क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी समस्याओं के निपटारे के लिए पर्याप्त नहीं हैं। अधिकांश इंसानों के काम क़ानून

एवं लोगों की आँखों में धूल झोंककर अंजाम पाते हैं। धर्म की आवश्यकता को बयान करने के लिए यह प्रमाण ही पर्याप्त है कि इतनी बड़ी संख्या में धर्म पाए जाते हैं, जिसकी शरण धरती के अधिकांश समुदाय लेते हैं, ताकि वो उनके जीवन को संगठित करें और इस धरती पर पाए जाने वाले समुदायों के कामों को धार्मिक क़ानूनों की बुनियाद पर व्यवस्थित करें। जैसा कि हम जानते हैं कि क़ानून की अनुपस्थिति में इंसान को व्यवस्थित करने वाली एक मात्र चीज़ उसका धार्मिक विश्वास है। हर समय एवं हर जगह इंसान के साथ क़ानून का पाया जाना संभव नहीं है। इंसान के लिए एकमात्र प्रतिबंधक तथा प्रतिरोधक उसके ऊपर एक पहरेदार और एक हिसाब लेने वाले की उपस्थिति के बारे में उसका आंतरिक विश्वास है। वास्तव में यह विश्वास उसके सीने के अंदर दफ़न होता है। जब वह कोई ग़लत काम करने के लिए सोचता है तो यह विश्वास स्पष्ट रूप से सामने आता है। उस समय उसके अंदर मौजूद अच्छाई एवं बुराई की क्षमताएँ लड़ती हैं और वह बुरे काम या हर ऐसे काम को लोगों से छुपाने की कोशिश करता है, जिसे अपरिवर्तित स्वभाव नकारता है। यह सब कुछ मानव जाति के दिल की गहराई में धर्म के अर्थ एवं विश्वास के अस्तित्व की हक़ीक़त का प्रमाण है।

धर्म उस रिक्त स्थान को भरने के लिए आया है, जिसे मानव निर्मित क़ानून भर नहीं सकते या समय तथा स्थान की भिन्नता के साथ दिमागों एवं दिलों को व्यवस्थित कर नहीं सकते।

इंसान के अंदर अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करने वाली चीज़ एक-दूसरे से भिन्न होती है। कोई काम करने, नैतिक मूल्यों या निर्धारित आचरणों को अपनाने के पीछे हर व्यक्ति के अपने उद्देश्य और खास फ़ायदे होते हैं। उदाहरण स्वरूप :

सज़ा : कभी-कभी यह इंसान को दूसरे के साथ बुरा करने से रोकती है।

प्रतिफल : कभी-कभी यह इंसान को अच्छा काम करने पर उभारता है।

आत्म संतुष्टि : कभी-कभी इंसान की आत्म संतुष्टि ही उसकी वासनाओं एवं ख़्वाहिशों से नियंत्रित करती है। इंसान का एक मूड और मनोदशा होती है। आज जो उसे पसंद है, हो सकता है कल नापसंद हो।

धार्मकि प्रतिबंधक : इसका मतलब है अल्लाह का ज्ञान, उसका डर और इंसान जहाँ भी जाए अल्लाह के अस्तित्व का एहसास। यह बहुत मजबूत और प्रभावी प्रेरणा है। [42] Atheism A Giant Leap of Faith. Dr. Raida Jarrar

सकारात्मक या नकारात्मक रूप से लोगों की भावनाओं और ख़यालों को हरकत देने में धर्म का बहुत प्रभाव है। यह हमें बताता है कि लोगों का मूल स्वभाव अल्लाह की जानकारी पर आधारित है। बहुत बार जान-बूझकर या अनजाने में इनसान को उकसाने के लिए इसका दुरुपयोग भी होता है। इससे पता चलता है कि इनसान के बोध के संबंध में धर्म बहुत ही महत्वपूर्ण है, इसलिए कि मामला सृष्टिकर्ता से संबंधित है।

क्या धर्म की ओर पलटना विवेक तथा सोचने समझने की शक्ति को निष्क्रिय कर देता है?

अक़्ल की भूमिका चीज़ों को आंकने और उनको प्रमाणित करने की है। अतः इंसान के अस्तित्व के उद्देश्य तक अक़्ल का पहुँच न पाना, उसकी भूमिका का ख़त्म हो जाना नहीं है, बल्कि धर्म को यह अवसर प्रदान करना है कि वह इन्सान को वह बात समझाए, जो अक़्ल समझ नहीं पाई। धर्म इंसान को उसके सृष्टिकर्ता के बारे, उसके अस्तित्व के स्रोत एवं उसके उद्देश्य के बारे में बताता है। तब अक़्ल इन बातों को समझने का प्रयास करती है, इनका मूल्यांकन करती है एवं इनकी पुष्टि करती है। इस तरह सृष्टिकर्ता के वजूद को मान लेने से विवेक तथा तर्क निष्क्रिय नहीं हुआ।

मनुष्य के लिए धर्म को प्रायोगिक विज्ञान से बदल लेना क्यों सही नहीं है?

आज (ब्रह्मांड के एक निर्माता के अस्तित्व के) कई खंडनकर्ता मानते हैं कि प्रकाश को समय में सीमित नहीं किया जा सकता है। लेकिन वे इस बात को स्वीकार नहीं करते कि सृष्टिकर्ता समय और स्थान के नियम के अधीन नहीं है। अर्थात् सृष्टिकर्ता हर चीज़ से पहले और हर चीज़ के बाद है, वह उच्च है और कोई भी सृष्टि उसे अपने घेरे में नहीं ले सकती।

आज बहुत-से लोगों का मानना है कि जुड़े हुए अणु जब अलग होते हैं, तो एक-दूसरे के साथ संवाद भी करते रहते हैं, परन्तु इस विचार को स्वीकार नहीं करते कि सृष्टिकर्ता अपने ज्ञान के द्वारा अपने बन्दे के साथ होता है, बंदा जहाँ भी जाए। वे अक़्ल को देखे बिना उसपर विश्वास रखते हैं, परन्तु अल्लाह को देखे बिना उसपर विश्वास रखने से इंकार कर देते हैं। बहुत-से लोग जन्नत एवं जहन्नम पर ईमान रखने से इंकार करते हैं और बहुत-सी दूसरी दुनियाओं को उन्हें देखे बिना मान लेते हैं। उन्हें भौतिक विज्ञान ने उन चीजों पर विश्वास करने के लिए कहा, जो अस्तित्व में भी नहीं हैं। उदाहरण स्वरूप मृचिका को ले लीचिए। उन्होंने उसे मान भी लिया और स्वीकार भी कर लिया। जबकि मृत्यु के समय, न तो भौतिकी से मनुष्यों को कोई लाभ होगा और न ही रसायन विज्ञान से। क्योंकि इन विज्ञानों ने उनसे अनस्तित्व का वादा किया है।

कोई व्यक्ति केवल इसलिए लेखक का इंकार नहीं कर सकता है कि उसने पुस्तक को जान लिया है। वे विकल्प नहीं हैं। विज्ञान ने ब्रह्मांड के नियमों की खोज की है, लेकिन उन्हें स्थापित नहीं किया है, बल्कि सृष्टिकर्ता ने उन्हें स्थापित किया है। मोमिनों में से बहुत-से लोग भौतिकी और रसायन विज्ञान के उच्च श्रेणी में बैठे हुए हैं, मगर वे जानते हैं कि ब्रह्मांडीय क़ानूनों के पीछे महान सृष्टिकर्ता है। भौतिक विज्ञान ने, जिसपर भौतिकवादी लोग विश्वास रखते हैं, उन क़ानूनों की खोज की है, जिन्हें अल्लाह ने स्थापित किया है, विज्ञान ने इन क़ानूनों को पैदा नहीं किया है। वैज्ञानिकों को अल्लाह द्वारा ईजाद किए हुए इन क़ानूनों के बिना अध्यन करने के लिए कुछ भी नहीं मिलेगा, जबकि ईमान मोमिन को दुनिया व आख़िरत दोनों स्थानों में लाभ पहुँचाता है और यह होगा ब्रह्मांडीय क़ानूनों को सीख कर, जिससे सृष्टिकर्ता पर उनका ईमान और बढ़ जाता है।

जब किसी व्यक्ति को गंभीर फ्लू या तेज बुखार होता है, तो वह पीने के लिए कभी-कभी एक ग्लास पानी तक नहीं ले पाता, तो वह अपने सृष्टिकर्ता के साथ अपने रिश्ते की कैसे अनदेखी कर सकता है?

विज्ञान हमेशा बदलता रहता है। केवल विज्ञान पर पूर्ण ईमान अपने आप में एक समस्या है। क्योंकि नई खोजों के उद्भव पिछले सिद्धांतों को रद्द कर देता है। कुछ चीज़ें जिन्हें हम विज्ञान समझते हैं, वह अभी तक सिद्धांत हैं। यहाँ तक कि यदि हम मान लें कि विज्ञान के द्वारा खोजी हुई चीजें सिद्ध और सटीक हैं, उसके बाद भी एक समस्या बाक़ी रह जाती है। समस्या यह है कि वर्तमान में विज्ञान खोजकर्ता को सारा महत्व देता है और निर्माता की उपेक्षा करता है। उदाहरण स्वरूप, हम मान लें

कि एक व्यक्ति एक कमरे में प्रवेश करता है और वह एक सुन्दर एवं बहुत महारत से बनाई गई पेंटिंग की खोज करता है, फिर वह कमरे से बाहर निकलता है और लोगों को इस खोज के बारे बताता है। सभी लोग उस आदमी की प्रशंसा करने लगते हैं, जिसने उस पेंटिंग को ढूंढ़ निकाला और जो सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है, उसे भूल जाते हैं कि "किसने इसे पेंट किया?" आज लोग यही कर रहे हैं। वे प्रकृति और अंतरिक्ष के नियमों की वैज्ञानिक खोजों की बहुत प्रशंसा करते हैं और इन कानूनों को बनाने वाले की रचनात्मकता को भूल जाते हैं। भौतिक विज्ञान से मनुष्य मिसाइल बना सकता है, परन्तु इस विज्ञान से वह चित्र की सुन्दरता का आंकलन नहीं कर सकता, न वस्तुओं के मूल्य निर्धारित कर सकता है, न ही वह हमें अच्छाई और बुराई के बारे में बता सकता है। भौतिक विज्ञान से हम यह तो जान सकते हैं कि गोली जान लेती है, लेकिन हम यह नहीं जान सकते कि इसका इस्तेमाल दूसरों की जान लेने के लिए करना ग़लत है।

प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा है : "विज्ञान नैतिकता का स्रोत नहीं हो सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि विज्ञान के नैतिक आधार हैं। लेकिन हम नैतिकता की वैज्ञानिक नींव के बारे में बात नहीं कर सकते। नैतिकता को विज्ञान के नियमों और समीकरणों के अधीन करने के सभी प्रयास विफल रहे हैं और विफल रहेंगे।"

प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कांट कहते हैं : "अल्लाह के अस्तित्व का नैतिक प्रमाण न्याय के अनुसार है। क्योंकि यह अनिवार्य है कि अच्छे आदमी को पुरस्कृत किया जाए तथा बुरे आदमी को दंडित किया जाए। जबकि यह केवल एक उच्च स्रोत की उपस्थिति में हो सकता है, जो प्रत्येक मानव को उसके द्वारा किए गए कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराए। उसी प्रकार (उपर्युक्त नैतिक) प्रमाण पुण्य एवं सफलता को जमा करने की संभावना के तकाज़ा पर स्थापित है। क्योंकि यह एक अलौकिक अस्तित्व के साये ही में हो सकता है, जो हर चीज़ का जानने वाला हो एवं हर चीज़ पर संप्रभुता रखता हो। इसी उच्च स्रोत एवं अलौकिक अस्तित्व का नाम माबूद (पूज्य) है।"

क्या धर्म लोगों के लिए अफीम है?

ब्रह्मांड के निर्माता के अस्तित्व में विश्वास एक प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी है। विश्वास विवेक को सचेत करता है और मोमिन को अपने हर बड़े और छोटे काम के लिए ख़ुद की समीक्षा करने पर उभारता है। मोमिन ज़िम्मेदार होता है अपने आपका, अपने परिवार का, अपने पड़ोसी का, यहाँ तक कि मुसाफिर का भी। वह साधनों को अपनाता है और अल्लाह पर भरोसा करता है। मैं नहीं समझता हूँ कि ये अफीम के नशेड़ियों की विशेषताएँ हैं। [43] अफीम एक मादक पदार्थ है, जिसे खसखस के पौधे से निकाला जाता है और हेरोइन बनाने के लिए उसका इस्तेमाल होता है।

लोगों के लिए वास्तविक अफीम आस्था नहीं, बल्कि नास्तिकता है। क्योंकि नास्तिकता अपने अनुयायियों को भौतिकवाद, सृष्टिकर्ता से अपने संबंध के बारे में न सोचने, धर्म का इंकार करने तथा जिम्मेदारियों और कर्तव्यों का परित्याग करने की ओर बुलाती है। इसी प्रकार यह अंजाम से बेख़बर होकर केवल वर्तमान में जीने को कहती है। यानी लोगों का जो मन चाहे करें बिना इस विश्वास के कि उनपर कोई अल्लाह का रखवाला या उनके कामों का हिसाब रखने वाला निर्धारित है या उनको दोबारा जीवित होकर उठना है और हिसाब-किताब के मरहले से गुज़रना है। क्या वास्तव में यह नशेड़ियों की विशेषता नहीं है?

सही धर्म की परख कैसे हो?

सही धर्म की परख तीन मुख्य बिंदुओं के आधार पर की जा सकती है [44] : पुस्तक "ख़ुराफ़तुल इल्हाद" (नास्तिक्ता का मिथक) का उद्धरित। लेखक : डा० अम्र शरीफ़, प्रकाशन: 2014 ई०।

इस धर्म में सृष्टिकर्ता या पूज्य के गुण।

रसूल या नबी की विशेषताएँ।

संदेश का अंतर्वस्तु :

आकाशीय संदेश या धर्म के अंदर सृष्टिकर्ता के सुंदरता एवं प्रताप पर आधारित गुणों का वर्णन एवं व्याख्या होनी चाहिए, उसका परिचय होना चाहिए औप उसके वजूद के प्रमाण होने चाहिएँ।

"आप कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज है। न उसने (किसी को) जना, और न (किसी ने) उसको जना है। और न उसके बराबर कोई है।" [45] [सूरा अन-निसा : 111] "वह अल्लाह ही है, जिसके अतिरिक्त कोई (सत्य) पूज्य नहीं है। वह गुप्त तथा प्रत्यक्ष हर चीज़ का जानने वाला है। वह सबसे बड़ा दयालु एवं सबसे बड़ा कृपावान है। वही अल्लाह है, जिसके सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है। वह बादशाह, बहुत पाक, सभी दोषों से साफ, सुरक्षा व शांति प्रदान करने वाला, रक्षक, ग़ालिब, ताक़तवर और बड़ाई वाला है। अल्लाह पाक है उन चीजों से जिनको ये उसका साझी बनाते हैं। 'वही अल्लाह है, पैदा करने वाला, अस्तित्व प्रदान करने वाला, रूप देने वाला। उसी के लिए शुभ नाम हैं, उसकी पवित्रता का वर्णन करता है जो (भी) आकाशों तथा धरती में है और वह प्रभावशाली, हिकमत वाला है।" [46] जहाँ तक रसूल का अर्थ एवं उसके गुणों की बात है, तो धर्म एवं आकाशीय संदेश :

[सूरा अल-इख़्लास : 1-4]

1- बताता है कि सृष्टिकर्ता रसूल के साथ कैसे संवाद करता है।

"और मैंने तुझे चुन लिया है। अतः ध्यान से सुन, जो वह्य की जा रही है।" [47] 2- वह बयान करता है कि सभी नबियों एवं रसूलों की ज़िम्मेदारी अल्लाह के संदंश को पहुँचाना है।

[सूरा ताहा : 13]

"हे रसूल! जो कुछ आपके रब की तरफ से आपपर उतारा गया है, उसको पहुँचा दें।" [48] 3- वह स्पष्ट करता है कि रसूल लोगों को अपनी इबादत की ओर नहीं, बल्कि एक अल्लाह की इबादत की ओर बुलाने के लिए आए थे।

[सूरा अल-माइदा : 67]

"किसी मनुष्य का यह अधिकार नहीं कि अल्लाह उसे पुस्तक, निर्णय शक्ति और नुबुव्वत (पैग़ंबरी) प्रदान करे, फिर वह लोगों से कहे कि अल्लाह को छोड़कर मेरे बंदे बन जाओ, बल्कि (वह तो यही कहेगा कि) तुम रब वाले बनो, इसलिए कि तुम पुस्तक की शिक्षा दिया करते थे और इसलिए कि तुम पढ़ा करते थे।" [49] 4- वह इस बात की पुष्टि करता है कि सभी नबी एवं रसूल मानवीय सीमित पूर्णता के शिखर पर होते हैं।

[सूरा आल-ए-इमरान : 79]
"और बेशक आप उच्च आचरण के शिखर पर हैं।" 5- वह इस बात की पुष्टि करता है कि सभी रसूल मनुष्य के लिए एक मानवीय आदर्श प्रस्तुत करते हैं।
[सूरा अल-क़लम : 4]
"निःसंदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है। उसके लिए, जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो, तथा अल्लाह को अत्यधिक याद करता हो।" [51] ऐसे धर्म को स्वीकार करना असंभव है, जिसके धार्मिक टेक्स्ट यह बताएँ कि उनके नबी व्यभिचारी हैं, हत्यारे हैं, बेरहम हैं या धोखेबाज़ हैं। इसी तरह किसी ऐसे धर्म को मानना भी संभव नहीं है जिसके ग्रंथ धोखेबाजी के निम्नतम उदाहरणों से भरे पड़े हों।
[सूरा अल-अहज़ाब : 21]
जहाँ तक संदेश के अंतर्वस्तु की बात है, तो उसमें निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिएँ :
1- पूज्य सृष्टिकर्ता का परिचय :
सही धर्म माबूद का उस प्रकार वर्णन नहीं करता है, जो उसके प्रताप के लायक़ न हो या जो उसके सम्मान में कमी करता हो, जैसे कि यह कहा जाए कि वह पत्थर या जानवर का रूप धारण करता है, वह बच्चा पैदा करता है, वह माँ-बाप से पैदा हुआ है या सृष्टियों में से कोई उसके बराबर है।
“उस जैसी कोई चीज़ नहीं, वह ख़ूब सुनने वाला तथा देखने वाला है।” [52] "अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित तथा नित्य स्थायी है। उसे ऊँघ तथा निद्रा नहीं आती। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का है। कौन है, जो उसके पास उसकी अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफ़ारिश) कर सके? जो कुछ उनके समक्ष और जो कुछ उनसे ओझल है, वह सब जानता है। लोग उसके ज्ञान में से उतना ही जान सकते हैं, जितना वह चाहे। उसकी कुर्सी आकाश तथा धरती को समोए हुए है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च, महान है।" [53] [सूरा अल-शूरा :11] 2- अस्तित्व के मक़सद एवं उद्देश्य को स्पष्ट करना :
[सूरा अल-बक़रा : 255]
"मैंने जिन्नात और इन्सानों को मात्र इसी लिये पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें।" [54] "आप कह दे : मैं तो तुम्हारे जैसा ही एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर प्रकाशना (वह्य) की जाती है कि तुम्हारा पूज्य केवल एक ही पूज्य है। अतः जो कोई अपने पालनहार से मिलने की आशा रखता हो, उसके लिए आवश्यक है कि वह अच्छे कर्म करे और अपने पालनहार की इबादत में किसी को साझी न बनाए।" [55] [सूरा अल-ज़ारियात : 56] 3- धार्मिक अवधारणाएँ मानवीय क्षमताओं की सीमा के भीतर हों।
[सूरा अल-कहफ़: 110]
"अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, तुम्हारे साथ तंगी नहीं चाहता।" [56] "अल्लाह किसी प्राणी पर भार नहीं डालता परंतु उसकी क्षमता के अनुसार। उसी के लिए है जो उसने (नेकी) कमाई और उसी पर है जो उसने (पाप) कमाया।।" [57] [सूरा अल-बक़रा : 185] "अल्लाह चाहता है कि तुम्हारा बोझ हल्का कर दे तथा मानव कमज़ोर पैदा किया गया है।" [58] [सूरा अल-बक़रा : 286] 4- प्रस्तुत की गई अवधारणाओं एवं सिद्धांतों के सही होने का तर्कसंगत प्रमाण प्रस्तुत करना।
[सूरा अल-निसा : 28]
संदेश को हमें इस बात के स्पष्ट और पर्याप्त तर्कसंगत सबूत देने चाहिएँ कि वह जो कुछ लेकर आया है, वह सच है। पवित्र क़ुरआन केवल तर्कसंगत प्रमाणों और तर्कों को प्रस्तुत करने पर रुक नहीं गया है, बल्कि उसने बहुदेववादियों और नास्तिकों को चुनौती दी है कि वे जो कुछ कहते हैं, उसकी सच्चाई का सबूत पेश करें।
"तथा उन्होंने कहा : जन्नत में हरगिज़ नहीं जाएँगे, परंतु जो यहूदी होंगे या ईसाई। ये उनकी कामनाएँ ही हैं। (उनसे) कहो : लाओ अपने प्रमाण, यदि तुम सच्चे हो।" [59] “और जो (भी) अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को पुकारे, जिसका उसके पास कोई प्रमाण नहीं, तो उसका हिसाब केवल उसके पालनहार के पास है। निःसंदेह काफ़िर लोग सफल नहीं होंगे।” [60] [सूरा अल-बक़रा : 111] "(ऐ नबी!) उनसे कह दें : तुम देखो आकाशों और धरती में क्या कुछ है? तथा निशानियाँ और चेतावनियाँ उन लोगों के लिए किसी काम की नहीं हैं जो ईमान नहीं लाते।" [61] [सूरा अल-मोमिनून : 117] 5- रिसालत (संदेश) द्वारा प्रस्तुत धार्मिक अंतर्वस्तुओं के बीच कोई विरोधाभास नहीं होना चाहिए।
[सूरा यूनुस : 101]
"क्या वे क़ुरआन पर विचार नहीं करते? यदि वह (क़ुरआन) अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता, तो वे उसमें बहुत अधिक मतभेद और विरोधाभास पाते।" [62] "उसी ने आप पर ये पुस्तक (क़ुरआन) उतारी है, जिसमें कुछ आयतें मुहकम (सुदृढ़) हैं, जो पुस्तक का मूल आधार हैं, तथा कुछ दूसरी मुतशाबिह (संदिग्ध, जिनका एक से अधिक अर्थ हो सके) हैं। तो जिनके दिलों में कुटिलता है, वे उपद्रव की खोज तथा मनमाना अर्थ करने के लिए, संदिग्ध के पीछे पड़ जाते हैं। जबकि उनका वास्तविक अर्थ, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता है। तथा जो ज्ञान में पक्के हैं, वे कहते हैं कि हम ईमान लाते हैं, सब हमारे पालनहार के पास से है, और बुध्दिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।" [63] [सूरा अल-निसा : 82] 6- धार्मिक पाठ मानव प्रवृत्ति के नैतिक नियम से टकराता न हो।
[सूरा आल-ए-इमरान : 7]
"तो (ऐ नबी!) आप एकाग्र होकर अपने चेहरे को इस धर्म की ओर स्थापित करें। उस फ़ितरत पर जमे रहें, जिसपर[10] अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह की रचना में कोई बदलाव नहीं हो सकता। यही सीधा धर्म है, लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते।" [64] और अल्लाह तो यह चाहता है कि तुम्हारी तौबा क़बूल करे तथा जो लोग इच्छाओं के पीछे पड़े हुए हैं, वे चाहते हैं कि तुम (हिदायत के मार्ग से) बहुत दूर हट[25] जाओ।" [65] [सूरा अल-रूम : 30] "अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए स्पष्ट कर दे और तुम्हें उन लोगों के तरीक़ों का मार्गदर्शन करे जो तुमसे पहले हुए हैं और तुम्हारी तौबा क़बूल करे। अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। 7- धार्मिक अवधारणाएँ भौतिक विज्ञान की अवधारणाओं से टकराती न हों।
[सूरा अल-निसा : 26, 27]

"क्या अविश्वासी लोगों ने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन एक साथ मिले हुए थे, फिर हमने उनको अलग किया और हर जीवित चीज़ को हमने पानी से पैदा किया, क्या ये लोग फिर भी ईमान नहीं लाते?" [66] 8- वह मानव जीवन की वास्तविकता से अलग न हो और सभ्यता की प्रगति के अनुरूप हो।
[सूरा अल-अंबिया : 30]
"(ऐ नबी!) इन (मिश्रणवादियों) से कहिए कि किसने अल्लाह की उस शोभा को हराम (वर्जित) किया है, जिसे उसने अपने सेवकों के लिए निकाला है? तथा स्वच्छ जीविकाओं को? आप कह दें : यह सांसारिक जीवन में उनके लिए (उचित) है, जो ईमान लाए तथा प्रलय के दिन उन्हीं के लिए विशेष है। इसी प्रकार, हम अपनी आयतों का सविस्तार वर्णन उनके लिए करते हैं, जो ज्ञान रखते हों।" [67] 9- वह हर युग तथा स्थान के योग्य हो।
[सूरा अल-आराफ : 32]
"आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को सम्पूर्ण किया और तुमपर अपना वरदान (नेमत) पूरा कर दिया और तुम्हारे लिए इस्लाम के धर्म होने पर संतुष्ट हो गया।" [68] 10- संदेश व्यापक एवं वैश्विक हो।
[सूरा अल-माइदा : 3]
"(हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि हे मानव जाति के लोगो! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जिसके लिए आकाश तथा धरती का राज्य है। कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही, जो जीवन देता तथा मारता है। अतः अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके उस उम्मी नबी पर, जो अल्लाह पर और उसकी सभी (आदि) पुस्तकों पर ईमान रखते हैं और उनका अनुसरण करो, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।" [69] आकाशीय धर्म एवं लोगों के रीति-रिवाजों में क्या अंतर है?

[सूरा अल-आराफ़ : 158]

एक चीज़ है, जिस फ़ितरत-ए-सलीमा या मंतिक़-ए-सलीम कहा जाता है। हर वह चीज़ जो फ़ितरत-ए-सलीमा और सही अक़्ल के अनुरूप हो, वह अल्लाह की तरफ से है, जबकि हर जटिल चीज़ मानव की तरफ़ से है।
मिसाल के तौर पर :
यदि हमें कोई इस्लाम, ईसाई, हिन्दू या किसी और धर्म का आदमी बताए कि इस ब्रह्मांड का एक ही सृष्टिकर्ता है, उसका कोई साझी नहीं है और न उसकी कोई संतान है, वह किसी इंसान, जानवर, पत्थर या मूर्ति की शक्ल में इस दुनिया में नहीं आता, हमें उसकी इबादत करनी चाहिए और मुसीबत के समय उसी की शरण में आना चाहिए, तो यह वास्तव में अल्लाह का धर्म है। इसके विपरीत यदि हमें कोई मुस्लिम, ईसाई या हिन्दू धर्म गुरु बताए कि अल्लाह मानव जाति के लिए ज्ञात किसी भी रूप में अवतरित होता है, हमें किसी व्यक्ति, नबी, पुजारी या संत के माध्यम से अल्लाह की इबादत करनी चाहिए एवं उसकी शरण में आना चाहिए, तो यह मानव की तरफ से है। अल्लाह का दीन स्पष्ट एवं तर्कसंगत है। उसमें पहेलियाँ नहीं हैं। यदि कोई धार्मिक व्यक्ति किसी व्यक्ति को मनवाना चाहे कि मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पूज्य हैं और उसे उनकी इबादत करनी चाहिए, तो उस धार्मिक व्यक्ति को उसे संतुष्ट करने में बहुत प्रयत्न करना पड़ेगा। फिर भी वह कभी संतुष्ट नहीं होगा। क्योंकि हो सकता है कि वह प्रश्न करे कि नबी कैसे पूज्य हो सकते हैं, जबकि वह हमारी तरह खाते-पीते थे? हो सकता है वह धार्मिक व्यक्ति अंत में यही कहे कि तुम इसे समझ नहीं सकते हो, क्योंकि यह एक जटिल बात है। जब तुम अल्लाह से मिलोगे, तो समझ जाओगे। जैसा कि आज बहुत-से लोग ईसा -अलैहिस्सलाम-, बुद्ध एवं दूसरे की इबादत को जायज़ ठहराने के लिए करते हैं। यह उदाहरण इस बात को स्पष्ट करता है कि अल्लाह के सही धर्म को पहेलियों से ख़ाली होना चाहिए और पहेलियाँ इंसानों की तरफ से होती हैं। अल्लाह का धर्म फ्री भी होता है। सभी को अल्लाह के घरों में इबादत करने एवं नमाज़ पढ़ने की स्वतंत्रता है। बिना इसके कि उनमें इबादत के लिए आदमी को उनकी सदस्यता लेनी पड़े और उसके लिए उसे पैसा चुकाना पड़े। इसके विपरीत यदि किसी भी इबादत स्थल में नामांकन करना पड़े और पैसा चुकाना पड़े, तो यह मानव की तरफ से है। हाँ, यदि धर्म गुरु उनसे कहें कि लोगों की सहायता के लिए उन्हें सदक़ा (दान) करना चाहिए, तो यह अल्लाह की तरफ से है। अल्लाह के दीन में लोग कंघे के दातों की तरह बराबर हैं। यहाँ अरबी एवं गैर अरबी, गोरे एवं काले के बीच कोई अंतर नहीं है। हाँ, अंतर है तो केवल तक़वा (परहेज़गारी) के आधार पर। इसलिए अगर कोई यह कहे कि कोई विशेष मस्जिद, कोई चर्च या मंदिर केवल गोरों के लिए है एवं कालों के लिए दूसरा स्थान है, तो यह मानव निर्मित धर्म है। औरत का सम्मान देना एवं उसकी श्रेणी को उँचा करना अल्लाह का आदेश है, जबकि औरत का अपमान मानव की ओर से है। उदाहरण के लिए, यदि किसी देश में एक मुस्लिम महिला पर अत्याचार किया जाता है, तो हिंदू महिला पर भी अत्याचार होता है, और उसी देश में बौद्ध और ईसाई महिला पर भी अत्याचार होता है। यह (अत्याचार) जातियों की संस्कृति है और इसका अल्लाह के सच्चे धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। अल्लाह का सच्चा धर्म हमेशा प्रकृति के अनुरूप होता है। जैसा कि एक धूम्रपान करने वाला एवं शराब पीने वाला भी हमेशा अपने बच्चे को शराब पीने एवं धूम्रपान करने से मना करता है, क्योंकि उसका गहरा विश्वास है कि स्वस्थ एवं समाज पर इन चीज़ों के बुरे प्रभाव पड़ते हैं। उदाहरण स्वरूप, जब धर्म मदिरा पान को अवैध करता है, तो वास्तव में यह अल्लाह के आदेशों में से एक आदेश है। परन्तु उदाहरण स्वरूप, यदि दूध हराम होने का आदेश आता, तो हमारी समझ के अनुसार यह कोई तर्कसंगत आदेश नहीं होता, क्योंकि हर किसी को मालूम है कि दूध स्वस्थ के लिए लाभदायक है, इसलिए धर्म ने इसे हराम नहीं किया है। यह अल्लाह की अपनी सृष्टि पर रहमत और नरमी है कि उसने हमें स्वच्छ चीज़ों को खाने का आदेश दिया एवं बुरी चीजों के खाने से मना किया।
महिला के लिए सर ढ़ांपना एवं मर्दों एवं औरतों के लिए हया एख़्तियार करना अल्लाह का आदेश है, परन्तु रंगों एवं डिज़ाइन का विवरण इंसान की तरफ से है। एक नास्तिक ग्रामीण चीनी महिला एवं एक ग्रामीण ईसाई स्विस स्त्री केवल इस आधार पर सर ढाँपती है यह हया एक फ़ितरी चीज़ है।
उदारण स्वरूप, आतंकवाद सभी धर्मों के लोगों में विभिन्न शक्लों में फैला हुआ है। अफ्रीका और पूरी दुनिया में ईसाई संप्रदाय के कुछ गिरोह धर्म के नाम पर और ईश्वर के नाम पर हत्या करते हैं तथा उत्पीड़न एवं हिंसा के सबसे बुरे रूपों को अपनाते हैं। वे दुनिया की ईसाई आबादी का 4% हैं। जबकि इस्लाम के नाम पर आतंकवाद का रास्ता एख़्तियार करने वालों की संख्या

मुस्लिम आबादी का 0.01% है। इतना ही नहीं, बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और अन्य धर्मों के मानने वालों में भी आतंकवाद फैला हुआ है।
इस तरह से हम किसी भी पुस्तक को पढ़े बिना भी सत्य एवं असत्य के बीच अंतर कर सकते हैं।

कौन-सी चीज़ इस्लाम को सच्चा धर्म बनाती है?

इस्लाम धर्म की शिक्षाएँ लचीली तथा जीवन के सभी पहलुओं को शामिल हैं, इसलिए कि यह इंसानी स्वभाव से जुड़ा हुआ है, जिसपर अल्लाह ने इंसान को पैदा किया है। यह धर्म इस स्वभाव के नियमों के अनुरूप आया है और वे (नियम निम्नलिखित) हैं :
केवल एक अल्लाह पर ईमान और इस बात पर विश्वास कि वही सृष्टिकर्ता है, जिसका कोई साझी नहीं है और न ही कोई संतान है। वह किसी मनुष्य, जानवर, मूर्ति या पत्थर के आकार में प्रकट नहीं होता है और तीनों में से तीसरा भी नहीं है। बिना किसी मध्यस्थ के केवल इसी एक सृष्टिकर्ता की इबादत करना। वही ब्रह्मांड और इसमें मौजूद सारी चीज़ों का निर्माता है। उस जैसा कोई नहीं है। इंसान को केवल उसी सृष्टिकर्ता की इबादत करनी है। किसी गुनाह से तौबा करते या उससे मदद माँगते समय किसी पुजारी, संत या किसी मध्यस्थ के बिना सीधे उसी से संबंध स्थापित करना है। सारे संसारों का पालनहार अपनी सृष्टि पर उससे कहीं अधिक दयालु है, जितना एक माँ अपनी संतान पर होती है। वह उन्हें तब-तब क्षमा कर देता है, जब-जब वे उसकी ओर लौटते हैं और तौबा करते हैं। अल्लाह का अधिकार है कि केवल उसी की इबादत की जाए एवं इंसान का अधिकार यह है कि उसका उसके रब के साथ सीधा संबंध हो। इस्लाम धर्म का अक़ीदा स्पष्ट, प्रमाणित एवं सरल है। अंधविश्वास से बिल्कुल दूर। इस्लाम दिल और अंतरात्मा को संबोधित करने और विश्वास के आधार के रूप में उनपर भरोसा करने पर बस नहीं करता है, बल्कि साथ-साथ संतोषजनक तर्क, स्पष्ट दलील एवं सही कारण भी बताता है, जो दिमागों पर छा जाते हैं और दिलों में घर कर जाते हैं और यह हुआ :
अस्तित्व का उद्देश्य, उसके स्रोत एवं मृत्यु के बाद के अंजाम के बारे में इंसानी दिमाग में घूमने वाले स्वाभाविक प्रश्नों का उत्तर देने के लिए रसूलों को भेजकर। यह ब्रह्मांड से, इंसानी जान से एवं इतिहास से अल्लाह के पूज्य होने पर, उसके एकेश्वरवाद पर, उसकी पूर्णता पर तर्क पेश करता है। साथ ही दोबारा उठाए जाने के विषय में, इंसान के पैदा करने, आकाशों एवं धरती के पैदा करने तथा धरती की मृत्यु के बाद उसके दोबारा ज़िन्दा किए जाने की संभावना से संबंधित प्रमाण प्रस्तुत करता है। अच्छों को प्रतिफल से नवाज़ने एवं बुरों को सज़ा देने की बात से अपनी हिकमत को प्रमाणित करता है।
इस्लाम धर्म का नाम ही अपने आप में सारे संसारों के पालनहार के साथ इंसान के रिश्ते को प्रतिबिंबित करता है। यह अन्य धर्मों के विपरीत किसी व्यक्ति या स्थान के नाम का प्रतिनिधित्व नहीं करता। जबकि यहूदियत (यहूदी धर्म) ने अपने धर्म का नाम यहूज़ा बिन याक़ूब -उनपर अल्लाह की शांति हो- से लिया है, मसीहियत (ईसाई धर्म) ने अपना नाम मसीह -अलैहिस्सलाम- से लिया है और हिन्दू मत का नाम उस धरती का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ यह पला-बढ़ा है।

ईमान के स्तंभ :

ईमान के कितने स्तम्भ हैं, जिनके बिना मुसलमान का ईमान सही नहीं होता है?

ईमान के स्तम्भ निम्नलिखित हैं :
अल्लाह पर ईमान : "इस बात का दृढ़ विश्वास कि अल्लाह हर चीज़ का रब एवं मालिक है। वही अकेला सृष्टिकर्ता है। वही इबादत, दीनता और अधीनता का अधिकारी है। वह पूर्णता की विशेषताओं से विशिष्ट है। हर कमी से पाक है। इन बातों पर प्रतिबद्धता हो एवं उनके अनुसार अमल किया जाए।" [70] "सियाज अल-अक़ीदह अल-ईमान बिल्लाह", अब्दुल अज़ीज़ अल-राजिही, पृष्ठ: 9
फ़रिश्तों पर ईमान : उनके अस्तित्व को सच मानना और इस बात पर विश्वास रखना कि वे नूर से बनी सृष्टि हैं, जो अल्लाह का अज्ञापालन करती है और उसकी अवज्ञा नहीं करती।
आकाशीय पुस्तकों पर ईमान : इसमें हर वह पुस्तक शामिल है, जिसे अल्लाह ने अपने रसूलों पर उतारा है। उनमें से एक पुस्तक तौरात है, जो मूसा -अलैहिस्सलाम- पर उतारी गयी थी। दूसरी इंजील है, जो ईसा -अलैहिस्सलाम- पर उतारी गई थी। तीसरी ज़बूर है, जो दाऊद -अलैहिस्सलाम- पर उतारी गई थी। इसके अलावा मूसा एवं इब्राहीम -अलैहिमस्सलाम- के सहीफ़े भी हैं। [71] इसी तरह क़ुरआन, जो मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर उतारा गया था। इन पुस्तकों की मूल प्रतियों में एकेश्वरवाद का संदेश अर्थात सृष्टिकर्ता पर ईमान और केवल उसी की इबातद करने का संदेश मौजूद था, मगर वो विकृति का शिकार हो गईं, इसलिए क़ुरआन के उतरने एवं इस्लामी शरीयत के लागू होने के बाद इन्हें निरस्त कर दिया गया।
नबियों और रसूलों पर ईमान :
आख़िरत के दिन पर ईमान : क़यामत के दिन को सच मानना, जिस दिन अल्लाह लोगों को हिसाब-किताब एवं बदले के लिए उठाएगा।
निर्णय एवं तक़दीर पर ईमान : इस बात को सच मानना कि अल्लाह ने अपने पहले के ज्ञान एवं अपनी हिकमत के अनुसार कायनात का पूरा अंदाज़ा लगा लिया था (और सबकी तक़दीर लिख दी थी)।
ईमान के बाद एहसान का दर्जा आता है। यह दीन का सबसे उच्च स्थान है। एहसान का अर्थ रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के इन शब्दों से स्पष्ट है : "एहसान का सारांश यह है कि आप अल्लाह की उपासना इस प्रकार करें कि मानो आप उसको देख रहे हैं। यदि यह कल्पना उत्पन्न न हो सके कि आप उसको देख रहे हैं, तो (यह स्मरण रखें कि) वह आपको अवश्य देख रहा है।" [72] हदीस-ए-जिबरील, इसे इमाम बुख़ारी (4777) ने तथा इमाम मुस्लिम (9) ने रिवायत किया है।
कामों को, आर्थिक बदला या इंसान से किसी धन्यवाद या प्रशंसा की आशा किए बिना केवल अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए ठीक से करने तथा इस रास्ते में पूरी कोशिश करने को एहसान कहते हैं। इबादतों को इस तरीक़े पर अदा करना कि वो

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के अनुसार हों, अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए हों और उसकी निकटता प्राप्त करने के इरादे से हों। अच्छे और अच्छी तरह काम करने वाले समाज के सफल रोल मॉडल होते हैं, जो दूसरों को भी उनकी तरह सिर्फ अल्लाह के लिए दीन या दुनियावी नेक कामों के करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसी गिरोह के हाथों समाज विकसित होता है, आगे बढ़ता है, इंसानी जीवन आनंदमय होता है एवं देश तरक़्क़ी करता है और फलता-फूलता है।

क्या पूर्व रसूलों पर ईमान इस्लामी अक़ीदे का बुनियादी हिस्सा है?

मानवता के मार्गदर्शन लिए भेजे गए सभी नबियों एवं रसूलों पर ईमान, ईमान के स्तम्भों में से एक स्तम्भ है। इसके बगैर किसी का ईमान सही नहीं होता है। किसी भी नबी या रसूल का इंकार दीन की बुनियादी बातों के ख़िलाफ़ है। अल्लाह के सभी नबियों ने अंतिम रसूल -उनपर अल्लाह की शांति हो- के आने का सुसमाचार दिया था। इसी प्रकार विभिन्न समुदायों की ओर अल्लाह के द्वारा भेजे गए नबियों एवं रसूलों के नामों का उल्लेख क़ुरआन में हुआ है, जैसा कि नूह, इब्राहीम, इसमाईल, इसहाक़, याक़ूब, यूसुफ, मूसा, दाऊद, सुलैमान, ईसा आदि -उन सब पर अल्लाह की शांति अवतरित हो-। जबकि कुछ नबियों एवं रसूलों के नाम नहीं भी लिए गए हैं। यह सम्भव है कि हिन्दू एवं बौद्ध मत के कुछ धार्मिक प्रतीक जैसे राम, कृषणा और गौतम बुद्ध भी नबी हों, जिन्हें अल्लाह ने भेजा हो। परन्तु क़ुरआन में इसका कोई प्रमाण नहीं है, इस कारण मुसलमान इसकी पुष्टि नहीं करते हैं। विभिन्न धर्मों में उस समय कई अंतर प्रकट हो गए, जब लोग अपने नबियों के सम्मान में सीमा से आगे बढ़ गए और अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करने लगे। "तथा (ऐ नबी!) हम आपसे पहले बहुत-से रसूलों को भेज चुके हैं, जिनमें से कुछ ऐसे हैं जिनका हाल हम आपसे वर्णन कर चुके हैं तथा उनमें से कुछ ऐसे हैं जिनके हाल का वर्णन हमने आपसे नहीं किया है। तथा किसी रसूल के वश में यह नहीं था कि वह अल्लाह की अनुमति के बिना कोई आयत (चमत्कार) ले आए। फिर जब अल्लाह का आदेश आ गया, तो सत्य के साथ निर्णय कर दिया गया और उस समय झूठे लोग घाटे में रहे।" [73] “रसूल उस चीज़ पर ईमान लाए जो उसकी तरफ़ अल्लाह की ओर से उतारी गई है और मुसलमान भी ईमान लाए। यह सब अल्लाह, उसके फरिश्तों, उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए। उसके रसूलों में से किसी के बीच हम फर्क नहीं करते। उन्होंने कहा कि हमने सुना और अनुसरण किया। हम तुझसे क्षमा माँगते हैं हे हमारे रब! और हमें तेरी ही तरफ़ लौटना है।" [74] [सूरा ग़ाफ़िर : 78] "(ऐ मुसलमानो!) तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाए तथा उस (क़ुरआन) पर जो हमारी ओर उतारा गया और उसपर जो इब्राहीम, इसमाईल, इसहाक़, याक़ूब तथा उनकी संतानों की ओर उतारा गया और जो मूसा तथा ईसा को दिया गया तथा जो दूसरे नबियों को उनके पालनहार की ओर से दिया गया। हम इनमें से किसी के बीच अंतर नहीं करते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।" [75] [सूरा अल-बक़रा : 285] फ़रिश्ता, जिन्न एवं शैतान में क्या अंतर है?

[सूरा अल-बक़रा : 136]

जहाँ तक फ़रिश्तों की बात है, तो यह अल्लाह की सृष्टियों में से एक महान सृष्टि हैं, जो नूर से पैदा किए गए हैं। उन्हें अच्छा करने के लिए बनाया गया है। वे अल्लाह के आदेशों का पालन करते हैं। अल्लाह की पाकी बयान करते हैं। इबादत करते हैं। न थकते हैं और न आलस्य करते हैं।

"वे रात और दिन उसकी पवित्रता का गान करते हैं तथा आलसस्य नहीं करते।" [76] "वे अवज्ञा नहीं करते अल्लाह के आदेश की तथा वही करते हैं, जिसका आदेश उन्हें दिया जाए।" [77] [अल-अंबिया : 20] उनपर ईमान मुसलमानों, यहूदियों एवं ईसाइयों के बीच एक साझे की चीज़ है। उनमें से एक फ़रिश्ते का नाम जिबरील -अलैहिस्सलाम- है, जिन्हें अल्लाह ने अपने एवं अपने रसूलों के बीच मध्यस्थ बनाया है। वह उनके पास वह्य (प्रकाशना) लेकर आते थे। एक और फ़रिश्ता मिकाईल -अलैहिस्सलाम- हैं। उनका काम बारिश बरसाना एवं पौधे उगाना है। एक और फ़रिश्ता इसराफील -अलैहिस्सलाम- हैं।। उनकी ज़िम्मेदारी क़यामत के दिन सूर फूंकना है। इस तरह के और भी फ़रिश्ते हैं।

[सूरा अत-तहरीम : 6]

जहाँ तक जिन्नात की बात है, तो वह एक गैबी दुनिया के प्राणी हैं। जिन्नात इस धरती में हमारे साथ रहते हैं। उन्हें इंसान की तरह अल्लाह के अज्ञापालन का आदेश दिया गया है और उसकी अवज्ञा से मना किया है। परन्तु हम उन्हें देख नहीं सकते। वे आग से पैदा किए गए हैं, जबकि इंसान मिट्टी से पैदा किया गया है। अल्लाह ने बहुत सारे क़िस्से बयान किये हैं, जो जिन्नात की शक्ति एवं उनकी क्षमता को स्पष्ट करते हैं। भौतिक हस्तक्षेप के बिना दिलों में भ्रम पैदा करने या बात डालने की क्षमता उनके पास है। परन्तु वे परोक्ष का ज्ञान नहीं रखते और मज़बूत ईमान वाले मोमिन को कष्ट नहीं दे सकते। "और शैतान अपने दोस्तों के दिलों मे बात डालते हैं, ताकि वे आपसे लड़ सकें।" [78] शैतान : शैतान हर विद्रोही का नाम है। चाहे वह इंसानों में से हो या जिन्नों में से।

[सूरा अल-अनआम : 121]

मृत्यु के बाद दोबारा जीवित होकर उठने का क्या प्रमाण है?

अस्तित्व और घटनाओं के दृष्टांत, सभी इस बात को इंगित करते हैं कि जीवन में हमेशा निर्माण और पुनर्निर्माण का काम चलता रहता है। इसके बहुत सारे उदाहरण हैं, जैसा कि धरती की मृत्यु के बाद बारिश के द्वारा उसे दोबारा जीवित किया जाना इत्यादि।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"वह जीवित को मृत से निकालता है तथा मृत को जीवित से निकालता है और धरती को उसके मृत हो जाने के बाद जीवित करता है। और इसी प्रकार, तुम (भी) निकाले जाओगे।" [79] मरने के बाद जीवित होकर उठने का और एक प्रमाण ब्रह्मांड की मज़बूत व्यवस्था है, जिसमें कोई खराबी नहीं है। यहाँ तक कि परमाणु में मौजूद एक असीम रूप से छोटा इलेक्ट्रॉन भी एक कक्षा से दूसरी कक्षा में तब तक नहीं जा सकता, जब तक कि वह अपनी गति के बराबर ऊर्जा नहीं देता या नहीं लेता। आप इस प्रणाली में कैसे कल्पना कर सकते हैं कि रोई हत्यारा या उत्पीड़क सारे संसार के रब द्वारा हिसाब-किताब लिए जाने या दंडित किए बिना भाग सकेगा?

[सूरा अल-रूम : 19]

अल्लाह तआला ने कहा है :
"क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हमने तुम्हें बेकार ही पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही नहीं जाओगे। तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति। नहीं है कोई सच्चा पूज्य, परन्तु वही महिमावान अर्श (सिंहासन) का स्वामी।" [80] तथा अल्लाह ने आकाशों और धरती को हक़ के साथ पैदा किया और ताकि हर व्यक्ति को उसका बदला दिया जाए जो उसने कमाया तथा उनपर अत्याचार नहीं किया जाएगा।" [81] [सूरा अल-मोमिनून : 115,116] "या वे लोग जिन्होंने बुराइयाँ की हैं, यह समझ रखा है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे, जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए? उनका जीना और उनका मरना समान होगा? बहुत बुरा है, जो वे निर्णय कर रहे हैं। [सूरा अल-जासिया : 21, 22] क्या हम यह नहीं देखते कि इस जीवन में हम अपने कई रिश्तेदारों और दोस्तों को खो देते हैं और जानते हैं कि हम एक दिन उन ही की तरह मर जाएंगे। लेकिन हमारे दिल की गहराई में यह एहसास होता है कि हम हमेशा जीवित रहेंगे। यदि मानव शरीर भौतिक नियमों के भीतर और भौतिक जीवन के ढांचे के भीतर भौतिक होता तथा उसमें ऐसी कोई आत्मा न होती, जिसे दोबारा उठाया जाए और जवाबदेह ठहराया जाए, तो स्वतंत्रता की इस स्वभाविक भावना का कोई अर्थ न होता। आत्मा समय से ऊपर होती है और मौत को पीछे छोड़ देती है।

अल्लाह मुर्दों को कैसे ज़िन्दा करेगा?

अल्ला मुर्दों को उसी तरह ज़िन्दा करेगा, जिस तरह उन्हें पहली बार पैदा किया है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"ऐ लोगो! यदि तुम (मरणोपरांत) उठाए जाने के बारे में किसी संदेह में हो, तो निःसंदेह हमने तुम्हें तुच्छ मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य की एक बूँद से, फिर रक्त के थक्के से, फिर माँस की एक बोटी से, जो चित्रित तथा चित्र विहीन होती है, ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी शक्ति को) स्पष्ट कर[3] दें, और हम जिसे चाहते हैं गर्भाशयों में एक नियत समय तक ठहराए रखते हैं, फिर हम तुम्हें एक शिशु के रूप में निकालते हैं, फिर ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो, और तुममें से कोई वह है जो उठा लिया जाता है, और तुममें से कोई वह है जो जीर्ण आयु की ओर लौटाया जाता है, ताकि वह जानने के बाद कुछ न जाने। तथा तुम धरती को सूखी (मृत) देखते हो, फिर जब हम उसपर पानी उतारते हैं, तो वह लहलहाती है और उभरती है तथा हर प्रकार की सुदृश्य वनस्पतियाँ उगाती है।" [82] कह दीजिए कि उन्हें वह ज़िन्दा करेगा, जिसने उन्हें पहली बार पैदा किया, जो सब प्रकार की पैदाइश को अच्छी तरह जानने वाला है।" [83] [सूरा अल-हज्ज : 5] "क्या इंसान को इतना भी ज्ञान नहीं कि हमने उसे वीर्य (नुत्फ़ा) से पैदा किया है? फिर भी वह खुला झगड़ालू बन बैठा। और उसने हमारे लिए मिसाल बयान की और अपनी असल पैदाईश को भूल गया, कहने लगा इन गली सड़ी हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है? "तो देखो अल्लाह की दया की निशानियों को, वह कैसे जीवित करता है धरती को, उसके मरण के पश्चात्, निश्चय वही जीवित करने वाला है मुर्दों को, तथा वह सब कुछ करने पर क़ादिर है।" [84] [सूरा यासीन : 77-79] एक ही समय में अल्लाह अपने बंदों का कैसे हिसाब लेगा?

[सूरा अल-रूम : 50]

जिस प्रकार अल्लाह अपने बन्दों को एक ही समय में जीविका प्रदान करता है, उसी प्रकार वह उन का हिसाब लेगा।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"और तुम्हें उत्पन्न करना और पुनः जीवित करना केवल एक प्राण के समान है। निःसंदेह, अल्लाह सब कुछ सुनने-जानने वाला है।" [85] [सूरा लुक़मान : 28]

एक मुसलमान आत्माओं के आवागवन के सिद्धांत में विश्वास क्यों नहीं करता है?

ब्रह्मांड में सब कुछ अल्लाह के नियंत्रण में है। वह अकेला ही व्यापक ज्ञान, पूर्ण जानकारी और सब कुछ अपनी इच्छा के अधीन करने की क्षमता और शक्ति रखता है। सृष्टि की शुरुआत से ही सूर्य, ग्रह और आकाशगंगाएँ अत्यधिक सटीकता के साथ काम कर रही हैं और यह सटीकता और क्षमता मनुष्य की रचना पर समान रूप से लागू होती है। मानव शरीर और उनकी आत्माओं के बीच मौजूद सामंजस्य से पता चलता है कि इन आत्माओं का जानवरों के शरीर में वास करना संभव नहीं है और वे पौधों, कीड़ों और यहाँ तक कि लोगों के बीच भी चक्कर नहीं लगा सकतीं। अल्लाह ने मनुष्य को बुद्धि और ज्ञान से दिया है, उसे धरती पर खलीफा बनाया है, उसे श्रेष्ठता दी है, सम्मान दिया है एवं दूसरी बहुत सारी सृष्टियों पर उसके दर्जा को ऊँचा किया है। सृष्टिकर्ता की हिकमत एवं न्याय की माँग यह थी कि क़यामत का दिन हो, जिस दिन अल्लाह सभी सृष्टियों को दोबारा उठाएगा और अकेला ही उनका हिसाब लेगा। फिर उसके बाद उनका ठिकाना जन्नत होगा या जहन्नम और उस दिन हर तरह के बुरे या अच्छे कामों को तौला जाएगा।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"तो जिसने कण के बराबर भी पुण्य (नेकी) किया होगा, वह उसे देख लेगा। और जिसने कण के बराबर भी पाप किया होगा, वह उसे देख लेगा।" [86] अल्लाह लोगों से अपने अज़ली (जो हमेशा से है) ज्ञान के अनुसार लिखे गए कर्मों का हिसाब कैसे लेगा, जिसे क़ज़ा एवं क़द्र के नाम से जाना जाता है?

[सूरा अल-ज़लज़ला : 7,8]

उदाहरण के तौर पर जब कोई व्यक्ति किसी स्टोर से कुछ खरीदना चाहे और अपने बड़े बेटे को वह चीज़ खरीदने को भेजने का फैसला करे कि उसे पहले से मालूम था कि उसका यह बेटा समझदार है, वह सीधे जाएगा और वह चीज़ खरीद लाएगा, जो उसका पिता चाहता है, जबकि उसे पता हो कि उसका दूसरा बेटा अपने साथियों के साथ खेलने लगेगा और पैसा नष्ट कर देगा। वास्तव में, यह एक कल्पना है, जिसपर पिता ने अपने निर्णय की बुनियाद रखी है।
भाग्यों की जानकारी हमारे एख्तियार के इरादे के विरुद्ध नहीं है। हमारी नीयतों एवं एख़्तियारों के बारे में अपने पूर्ण ज्ञान की बुनियाद पर अल्लाह हमारे कामों को जानता है। दरअसल अल्लाह इन्सान के मिज़ाज को जानता है। उसने हम सब को पैदा

किया है और हमारे दिलों में भलाई या बुराई की जो इच्छाएँ हैं, वह उन्हें जानता है। वह हमारी नीयतों एवं कामों का भी ज्ञान रखता है। इस ज्ञान का उसके पास लिखा हुआ होना हमारे चयन करने के इरादे के विरुद्ध नहीं है। साथ ही यह भी ज्ञात हो कि अल्लाह का ज्ञान व्यापक है और मानव की आशाएँ कभी सच साबित होती हैं, तो कभी झूठ।

हो सकता है कि इंसान ऐसा काम करे जो अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो, परन्तु उसका यह काम अल्लाह के इरादे के विरूद्ध नहीं है। अल्लाह ने अपनी सृष्टि को चुनने का इरादा दिया है, मगर उनके यह काम, यद्यपि उनमें गुनाह हों, अल्लाह के इरादे के तहत ही हैं। ये उसके इरादे के ख़िलाफ़ नहीं हो सकते। इसलिए कि अल्लाह ने अपने इरादे से आगे बढ़ने की अनुमति किसी को नहीं दी है।

हम अपने दिलों पर ज़बरदस्ती नहीं कर सकते हैं और न अपनी चाहत के विरूद्ध किसी चीज़ को स्वीकार करने पर उन्हें मजबूर कर सकते। इसलिए कि हो सकता है कि हम किसी को डांट-डपट कर अपने साथ रहने पर मजबूर कर सकें, मगर हम उसे हमसे मोहब्बत करने पर मजबूर नहीं कर सकते। अल्लाह ने हमारे दिलों को हर तरह की मजबूरी से सुरक्षित रखा है। यही कारण है कि वह हमारी नीयतों एवं हमारे दिलों में जो कुछ है, उसके आधार पर हमारा हिसाब लेगा एवं हमें प्रतिफल देगा।

जीवन का उद्देश्य :

सांसारिक जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

जीवन का मुख्य उद्देश्य सुख की अस्थायी अनुभूति का आनंद लेना नहीं, बल्कि अल्लाह को जानकर और उसकी आराधना करके गहरी आंतरिक शांति प्राप्त करना है।

इस लक्ष्य को प्राप्त करना शाश्वत आनंद और सच्चे सुख की ओर ले जाएगा। अतः, जब यह हमारा प्राथमिक लक्ष्य है, तो इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किसी भी समस्या या परेशानी का सामना करना आसान होगा।

आएँ किसी ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें, जिसने कभी किसी पीड़ा या दर्द का अनुभव नहीं किया है। वह व्यक्ति, अपने विलासितापूर्ण जीवन के कारण, अल्लाह को भूल गया है और इस प्रकार वह वह कार्य करने में विफल रहा जिसके लिए उसे बनाया गया था। इस व्यक्ति की तुलना किसी ऐसे व्यक्ति से करें, जिसके कष्ट और पीड़ा के अनुभवों ने उसे अल्लाह तक पहुँचाया है और उसने जीवन में अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लिया है। इस्लामी शिक्षाओं के दृष्टिकोण से, वह व्यक्ति जिसकी पीड़ा उसे अल्लाह की ओर ले गई, उस व्यक्ति से बेहतर है, जिसने कभी दुख नहीं उठाया और जिसके आनंदों ने उसे अल्लाह से दूर कर दिया। प्रत्येक मनुष्य इस जीवन में किसी लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त करना चाहता है और लक्ष्य अक्सर उसके अंदर मौजूद विश्वास पर आधारित होता है। जिस चीज़ को हम धर्म में पाते हैं लेकिन विज्ञान में नहीं पाते, वह वह कारण या औचित्य है, जिसके लिए मनुष्य प्रयास करता है।

धर्म उस कारण को बताता और स्पष्ट करता है, जिसके लिए मनुष्य की सृष्टि हुई है और जीवन अस्तित्व में आया है, जबकि विज्ञान एक साधन है और इसके पास इरादे या उद्देश्य की कोई परिभाषा नहीं है।

धर्म की ओर लौटते समय एक व्यक्ति को जिस चीज़ से सबसे ज़्यादा डर लगता है, वह है जीवन के सुखों से वंचित होना। लोगों के बीच साधारण धारणा यह है कि धर्म का अर्थ अनिवार्य रूप से अलग रहना है। धर्म में कुछेक चीज़ों को छोड़कर, जिनको उसने हलाल किया है, सारी चीज़ें हराम हैं।

यही वह ग़लती है, जिसके कारण बहुतों ने खुद को धर्म से अलग कर लिया। इस्लाम धर्म इसी अवधारणा को सही करने के लिए आया है। उसने बताया है कि कि इंसान के लिए असलन सारी चीज़ें हलाल हैं। हराम चीज़ें चंद ही हैं। इस बात पर कहीं कोई मतभेद भी नहीं है।

धर्म व्यक्ति को समाज के सभी सदस्यों के साथ मिलजुल कर रहने का आह्वान करता है। इसी प्रकार धर्म आत्मा और शरीर की आवश्यकताओं और दूसरों के अधिकारों के बीच संतुलन की मांग करता है।

धर्म से दूर समाजों के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यह है कि इंसानों के साथ कैसा व्यवहार किया जाए और उसके बुरे कामों से कैसे निपटा जाए। इन समाजों को विकृत आत्माओं के मालिकों को रोकने के लिए कठोर दंड के अलावा कुछ नहीं मिलता।

"जिसने पैदा किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें किसका कर्म अधिक अच्छा है?" [87] सांसारिक जीवन का क्या मूल्य है?

[सूरा अल-मुल्क : 2]

परीक्षा छात्रों के रैंक और ग्रेड निर्धारित करने के लिए आयोजित की जीती है, जब वे नया व्यवहारिक जीवन शुरू करते हैं। हालांकि परीक्षा छोटी चीज़ होती है, परन्तु यह आगे के नए जीवन में छात्र के भाग्य का फैसला करती है। इसी तरह, इस संसार का जीवन छोटा होने के बावजूद, मनुष्यों के लिए परीक्षण और परीक्षा के समान है, ताकि जब वे बाद के जीवन की ओर जाएँ, तो उनके ग्रेड और रैंक का निर्धारण किया जा सके। इंसान इस दुनिया से भौतिक चीज़ों के साथ नहीं, बल्कि अपने कार्यों के साथ जाता है। इंसान को समझना चाहिए कि उसे इस दुनिया में आख़िरत के जीवन और उसमें बदला पाने के लिए काम करना है।

इंसान को सुख कैसे प्राप्त हो सकता है?

इंसान को सुख अल्लाह के सामने झुकने, उसकी आज्ञा का पालन करने और उसके निर्णय और भाग्य से संतुष्ट होने से प्राप्त होता है।

बहुत-से लोग दावा करते हैं कि सब कुछ आंतरिक रूप से अर्थहीन है, इस लिए हम एक आनंदपूर्ण जीवन पाने के उद्देश्य से अपने लिए (जीवन) का स्वयं एक अर्थ (लक्ष्य) बना सकते हैं। हमारे अस्तित्व के उद्देश्य को नकारना वास्तव में अपने आप को धोखा देना है। जैसे हम अपने आप से कह रहे हों कि "आइए कल्पना करें या दिखावा करें कि हमारे जीवन का एक उद्देश्य है।" जैसे हम उन बच्चों की तरह हैं जो डॉक्टर और नर्स या माता और पिता बनकर खेलने का नाटक करते हैं। जब तक हम

जीवन के उद्देश्य को जान नहीं लेते, तब तक हमें सुख नहीं मिल सकता। यदि किसी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध लग्जरी ट्रेन में बिठा दिया जाए। वह प्रथम श्रेणी में यात्र कर रहा हो, एक शानदार और आरामदायक अनुभव हो और विलासिता की पराकाष्ठा हो। क्या वह उसके दिमाग में घूम रहे इन सवालों के जवाब मिले बिना इस यात्रा से खुश हो सकेगा कि वह मैं ट्रेन में कैसे चढ़ा? इस यात्रा का उद्देश्य क्या है? ट्रेन कहाँ जा रही है? यदि ये प्रश्न अनुत्तरित रहें, तो वह कैसे प्रसन्न हो सकता है? भले ही वह अपने तहत सभी विलासिता का आनंद लेना शुरू कर दे, फिर भी वह कभी भी सच्चा और सार्थक आनंद प्राप्त नहीं करे सकेगा। क्या इस यात्रा में स्वादिष्ट भोजन उसके इन सवालों को भूलने के लिए पर्याप्त है? दरअसल इस तरह की खुशी अस्थायी और नकली होगी और इन महत्वपूर्ण सवालों के जवाब खोजने के विषय को जानबूझकर अनदेखा करके ही ऐसी खुशी प्राप्त किया जा सकती है। यह नशे की वजह से पैदा होने वाली एक हालत की तरह है, जो नशा करने वाले को विनाश की ओर ले जाती है। इस प्रकार, मनुष्य को सच्चा सुख तब तक प्राप्त नहीं हो सकता, जब तक कि वह इन अस्तित्वगत प्रश्नों के उत्तर न खोज ले।

सच्चे धर्म की उदारता :

क्या इस्लाम ग्रहण करना सबके लिए उपलब्ध है?

हाँ, इस्लाम सबके लिए उपलब्ध है। हर बच्चा अपनी असली फ़ितरत पर पैदा होता है। बिना किसी मध्यस्थ के अपने अल्लाह की इबादत करने वाला (मुसलमान) होकर। माता-पिता, स्कूल या किसी धार्मिक पक्ष के हस्तक्षेप के बिना, वह वयस्क होने तक सीधे अल्लाह की इबादत करता है। फिर वह अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार और जवाबदेह बन जाता है। वयस्क होने के बाद या तो मसीह -अलैहिस्सलाम- को अपने और अल्लाह के बीच मध्यस्थ बना लेता है और फलस्वरूप ईसाई बन जाता है, बुद्ध को मध्यस्त बना लेता है और नतीजे के तौर बौद्ध हो जाता है, कृष्ण को को मध्यस्थ बनाकर हिन्दू हो जाता है, मुहम्मद को मध्यस्थ बनाकर इस्लाम से बिल्कुल दूर हो जाता है या फिर दीन-ए-फ़तरत पर बाक़ी रहता है और एकमात्र अल्लाह की इबादत करता है। मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के द्वारा अपने रब के पास से लाए हुए संदेश का पालन करना ही सत्य धर्म है और यही धर्म सही फ़ितरत के अनुरूप भी है। उसके अतिरिक्त जो कुछ भी है, वह विकृत है, यद्यपि मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को इंसान एवं अल्लाह के बीच मध्यस्थ बनाना ही क्यों न हो। "प्रत्येक पैदा होने वाला शिशु फितरत (इसलाम) पर जन्म लेता है। फिर उसके माता-पिता उसे यहूदी बना देते हैं, ईसाई बना देते हैं या मजूसी (अग्नि पूजक) बना देते हैं।" [88] विभिन्न धर्मों के बीच संवाद के बारे में इस्लाम की क्या राय है?

[सहीह मुस्लिम]

सृष्टिकर्ता की तरफ से आने वाला सत्य धर्म अनेक नहीं, केवल एक है। वह है, एक अल्लाह पर ईमान और केवल उसकी इबादत करना। उसके अतिरिक्त जितने भी धर्म हैं, सब मानव निर्मित हैं। उदाहरण स्वरूप हम भारत की यात्रा करें और लोगों के सामने कहें कि सृष्टिकर्ता एक है, तो सभी एक आवाज़ में कहेंगे कि हाँ, हाँ, सृष्टिकर्ता एक है और वास्तव में यही उनकी पवित्र पुस्तकों में लिखा हुआ भी है। [89] परन्तु एक मुख्य बिंदु पर वे मतभेद करेंगे और लड़ पड़ेंगे और हो सकता है कि एक-दूसरे की हत्या पर उतर आएँ। वह है, वह छवि और रूप जिसे धारण करके ईश्वर पृथ्वी में प्रकट होता है। उदाहरण के तौर पर भारतीय ईसाई कहेंगे ईश्वर एक है, लेकिन वह तीन व्यक्तियों (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) में देहधारी होता है। जबकि भारतीय हिन्दुओं में से कुछ कहेंगे कि ईश्वर जानवर, इंसान या मूर्ति के रूप में प्रकट होता है। हिंदू धर्म के (चंदुजा उपनिषद 6 : 1-2) में है: "वह केवल एक पूज्य है, उसका कोई दूसरा नहीं है।" (वेद, स्वेता स्वातार उपनिषद :19ः4, 20ः4, 6:9) में है : "पूज्य के न तो पिता हैं और न ही स्वामी।" "उसे देखना संभव नहीं, उसे कोई आँख से नहीं देखता।" "उस जैसा कोई नहीं है।" (यजुर्वेद 40:9) में है : "अंधेरे में प्रवेश करते हैं, जो लोग प्राकृतिक तत्वों (वायु, जल, अग्नि आदि) की उपासना करते हैं। अंधेरे में डूबते हैं : जो संबुति (हाथ से बनी हुई चीज़ें जैसे मुर्ति एवं पत्थर आदि।) की पूजा करने वाले हैं। ईसाई धर्म में : (मैथ्यू 4:10) में है : "उस समय यसू ने उससे कहा : जाओ हे शैतान, यह लिखा हुआ है, तेरे पूज्य रब के लिए सजदा कर और उसी की इबादत कर।" (निर्गमन 20: 3-5) में है : "मेरे सामने और कोई देवता न रखना। न तो अपने लिये तराशी हुई मूरत बनाना, और न कोई चित्र, न ऊपर आकाश में, न नीचे पृथ्वी पर, और न पृथ्वी के नीचे जल के अंदर। उनकी उपासना न कर। क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर ईर्ष्यालु (गैरतमंद) पूज्य हूं, जो मुझसे बैर रखने वालों की तीसरी और चौथी पीढ़ी के पितरों के पापों को प्रायश्चित करता है।" यदि इंसान गहराई से सोचे तो पाएगा कि धार्मिक गिरोहों और स्वयं धर्मों के बीच सभी समस्याओं एवं मतभेदों का कारण वह मध्यस्थ हैं, जिन्हें इंसान उनके एवं उनके सृष्टिकर्ता के बीच बना लेता है। उदाहरण के तौर पर कैथोलिक एवं प्रोटेस्टेंट आदि संप्रदाय, हिंदू संप्रदाय से निर्माता के साथ संवाद करने के तरीके पर भिन्न हैं, स्वयं निर्माता के अस्तित्व की अवधारणा पर नहीं। यदि वे सभी सीधे ईश्वर की इबादत करें, तो एक हो जाएंगे। उदाहरण के तौर पर पैगंबर इब्राहिम -उनपर शांति हो- के समय में एक अल्लाह की इबादत करने वाला इस्लाम धर्म पर था। वही सत्य धर्म माना जाता था। लेकिन किसी पुजारी या संत को अपने और अपने रचयिता के बीच मध्यस्थ बनाने वाला गलत था। इब्राहीम -उनपर शांति हो- के अनुयायी केवल एक अल्लाह की पूजा करने तथा यह गवाही देने पर बाध्य थे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं है और इब्राहीम अल्लाह के रसूल हैं। अल्लाह तआलान ने मूसा -उनपर शांति हो- को इब्राहीम -उनपर शांति हो- के संदेश की पुष्टि के लिए भेजा, तो इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- के अनुयायियों पर नए नबी को स्वीकार करना और यह गवाही देना ज़रूरी हो गया कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है तथा मूसा व इब्राहीम अल्लाह के रसूल हैं। उस समय जो बछड़े की पूजा करता था, वह ग़लत रास्ते पर था।

जब ईसा -अलैहिस्सलाम- मूसा -अलैहिस्सलाम- के संदेश की पुष्टि के लिए आए, तो मूसा के अनुयायियों पर ईसा को सच मानना, उनकी पैरवी करना और यह गवाही देना ज़रूरी हो गया कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई माबूद नहीं है और ईसा, मूसा और इब्राहीम अल्लाह के रसूल हैं। अब जिसने तीन माबूदों की आस्था रखी और ईसा तथा उनकी माँ सत्यवादी मरयम की इबादत की, वह ग़लती पर था।

इसी तरह जब मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अपने पूर्व के नबियों के पैग़ाम की पुष्टि के लिए आए, तो ईसा और मूसा -उन दोनों पर शांति हो- के अनुयायियों पर नए नबी को स्वीकार करना और यह गवाही देना अनिवार्य हो गया कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद, ईसा, मूसा और इब्राहीम अल्लाह के रसूल हैं। अब जो मुहम्मद की इबादत करे या उनसे मदद माँगे, वह असत्य एवं ग़लत पर है। इस्लाम उन आकाशीय धर्मों की पुष्टि करता है, जो उससे पहले उसके ज़माने तक आते रहे। इस्लाम यह मानता है कि रसूलगण जो धर्म लाए वो अपने-अपने युग के लिए उपयुक्त थे। परन्तु आवश्यकता के बदलने के साथ-साथ नए धर्म की बारी आती है, जो मूल में तो पूर्व के धर्म के साथ सहमत होता है, परन्तु ज़रूरतों के अनुसार आदेशों एवं निर्देशों में भिन्न होता है। वह अपने पूर्व के धर्मों के एकेश्वरवाद की पुष्टि करता है और वह संवाद का रास्ता अपनाकर सृष्टिकर्ता के संदेश के स्रोत के एक होने की हक़ीक़त को पूरी तरह स्वीकार करने वाला होगा। धर्मों के बीच संवाद इसी मूल अवधारणा पर आधारित होना चाहिए, ताकि एक सच्चे धर्म की अवधारणा और अन्य धर्मों के बातिल होने पर जोर दिया जा सके।
संवाद के कुछ अस्तित्वगत और धार्मिक उसूल हैं। एक व्यक्ति के लिए यह जरूरी है कि वह उनका सम्मान करे और दूसरे के साथ संवाद करने के लिए उन ही को आधार बनाए। क्योंकि इस संवाद का उद्देश्य कट्टरता और मनमानी से छुटकारा पाना है, जो पक्षपातपूर्ण अंधी संबद्धता को मिटाने का नाम है, जो मनुष्य को शुद्ध एकेश्वरवाद की वास्तविकता से दूर रखती है और लड़ाई तथा विनाश की ओर ले जाती है, जैसा कि इस समय हमारी स्थिति है।

क्या इस्लाम सहिष्णुता का आह्वान करता है?

इस्लाम धर्म आह्वान, सहिष्णुता और अच्छे तरीके से की जाने वाली बहस पर आधारित है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"(ऐ नबी!) आप उन्हें अपने पालनहार के मार्ग (इस्लाम) की ओर हिकमत तथा सदुपदेश के साथ बुलाएँ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करें, जो सबसे उत्तम है। निःसंदेह आपका पालनहार उसे सबसे अधिक जानने वाला है, जो उसके मार्ग से भटक गया और वही सीधे मार्ग पर चलने वालों को भी अधिक जानने वाला है।" [90] [सूरा अल-नह्ल : 125] पवित्र क़ुरआन अंतिम आकाशीय पुस्तक है और पैगंबर मुहम्मद अंतिम पैगंबर हैं। चुनांचे इस्लाम की अंतिम शरीयत सभी के लिए बातचीत करने और धर्म की बुनियादों और सिद्धांतों पर चर्चा करने का मार्ग खोलती है। यह सिद्धांत कि "धर्म में कोई बाध्यता नहीं है" इस्लामी धर्म के साये में संरक्षित है। वह, दुसरों के सम्मान का ख़याल रखते हुए, किसी को भी सटीक एवं स्वाभाविक इसलामी विश्वास को अपनाने पर मजबूर नहीं करता। लेकिन दूसरों को भी अपने धर्म पर बने रहने एवं अमन और सुरक्षा प्राप्त करने के बदले में इस्लामी राष्ट्र के नियमों का पालन करना है।
उदाहरण के तौर पर हम उमरी चार्टर को देख सकते हैं। उमरी चार्टर एक पत्र है, जिसे ख़लीफ़ा उमर बिन ख़त्ताब -अल्लाह उनसे राज़ी हो- ने ईलिया (फलस्तीन) वालों के लिए लिखा था, जब उसे मुसलमानों ने 638 ई० में फ़त्ह किया था। उसमें उन्होंने उनको उनके चर्चों और धन-संपत्ति की सुरक्षा प्रदान की थी। उमर पैक्ट को यरूशलम के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेजों में से एक माना जाता है।
उस में है : "शुरू अल्लाह के नाम से। यह पत्र उमर बिन ख़त्ताब की ओर से शहर ईलिया वालों के लिए लिखा जा रहा है। उनकी जानें, औलाद, माल एवं चर्च सुरक्षित हैं। उन्हें न गिराया जाएगा और न ही उनमें दूसरों को बसाया जाएगा।" [91] इब्न अल-बतरीक़: "अल-तारीख़ अल-मजमू अला अल-तहक़ीक़ व अल-तसदीक़" भाग 2, पृष्ठ : 147 ख़लीफ़ा उमर -अल्लाह उनसे राज़ी हो- यह संधि लिखा रहे थे कि नमाज़ का समय हो गया। पैट्रिआर्क सोफ्रोनियस ने उन्हें नमाज़ के लिए क़यामत चर्च में आमंत्रित किया, जहाँ वे थे। परन्तु ख़लीफ़ा ने इनकार कर दिया और उनसे कहा कि मुझे डर है कि अगर मैं इस गिर्जा में नमाज़ पढ़ूँ, तो मुसलमान तुमसे यह गिर्जा ले लें और कहें कि "यहाँ ईमान वालों के ख़लीफ़ा ने नमाज़ अदा की है।" [92] तारीख़ अल-तबरी और मुजीरुद्दीन अल-उलैमी अल-मक़दिसी
इसी तरह इस्लाम गैर-मुस्लिमों के साथ की गई संधियों एवं वादों का सम्मान करता है और उनको पूरा करता है। परन्तु वह धोखा करने वालों एवं वचनों का उल्लंघन करने वालों पर सख़्त है। साथ ही वह मुसलमानों को इन धोखेबाजों से दोस्ती करने से मना भी करता है।
"ऐ ईमान वालो! उन लोगों को जिन्होंने तुम्हारे धर्म को उपहास और खेल बना लिया, उन लोगों में से जिन्हें तुमसे पहले पुस्तक दी गई है और काफ़िरों को मित्र न बनाओ और अल्लाह से डरो, यदि तुम ईमान वाले हो।" [93] [सूरा अल-माइदा : 57] पवित्र क़ुरआन मुसलमानों से लड़ने और उन्हें उनके घरों से निकालने वालों से मोहब्बत न रखने के बारे में एक से अधिक स्थानों पर स्पष्ट और साफ़ है।
"अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों से अच्छा व्यवहार करो और उनके साथ न्याय करो, जिन्होंने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। निश्चय अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है। अल्लाह तो तुम्हें केवल उन लोगों से मैत्री रखने से रोकता है, जिन्होंने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध किया तथा तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हें निकालने में एक-दूसरे की सहायता की। और जो उनसे मैत्री करेगा, तो वही लोग अत्याचारी हैं।" [94] क़ुरआन करीम मसीह और मूसा के समुदायों में से उनके ज़माने के एकेश्वरवादी लोगों की सराहना करता है।
[सूरा अल-मुमताहिना: 8,9]
"वे सभी समान नहीं हैं; किताब वालों में एक समूह (सत्य पर) स्थापित है, जो रात की घड़ियों में अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वे सजदे करते हैं। वे अल्लाह तथा अंतिम दिन (क़यामत) पर ईमान रखते हैं और भलाई का आदेश देते हैं और बुराई से रोकते हैं और भलाई के कामों में जल्दी करते हैं और वही अच्छे लोगों में से हैं।" [95] "और निःसंदेह अह्ले किताब (अर्थात यहूद और ईसाई) में से कुछ ऐसे भी हैं, जो अल्लाह पर तथा तुम्हारी ओर जो उतारा गया है उसपर ईमान रखते हैं, अल्लाह से डरे रहते हैं और उसकी आयतों को थोड़ी-थोड़ी क़ीमतों पर नहीं बेचते हैं। उनका बदला उनके रब के पास है। निःसंदेह अल्लाह जल्दी हिसाब लेने वाला है।" [96] [सूरा आल-ए-इमरान : 113,114] "वस्तुतः, जो ईमान लाये तथा जो यहूदी हुए और नसारा (ईसाई) तथा साबी, जो भी अल्लाह तथा अन्तिम दिन (क़यामत) पर ईमान लायेगा और सत्कर्म करेगा, उनको प्रतिफल उनके

पालनहार के पास है और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न ही वे उदासीन होंगे।" [97] [सूरा आल-ए-इमरान : 199] ज्ञानोदय (enlightenment) की अवधारणा पर इस्लाम की राय क्या है?

[सूरा अल-बक़रा : 62]

ज्ञानोदय की इस्लामी अवधारणा विश्वास और विज्ञान की ठोस नींव पर आधारित है, जो विवेक के ज्ञान और हृदय के ज्ञान को पहले अल्लाह पर ईमान के साथ और फिर विज्ञान के साथ जोड़ती है, जो ईमान से अलग नहीं हो सकता।
यूरोपीय ज्ञानोदय की अवधारणा को अन्य पश्चिमी अवधारणाओं की तरह इस्लामी समाजों में स्थानांतरित कर दिया गया है। इस्लामी अवधारणा में ज्ञानोदय केवल ऐसे दिमाग पर निर्भर नहीं होता है, जिसे ईमान का प्रकाश प्राप्त न हो। उसी तरह किसी व्यक्ति को अपने ईमान का लाभ नहीं होता है, यदि वह बुद्धि की नेमत को, सोच, चिंतन, विचार और मामलों को इस तरह से प्रबंधित करने में उपयोग नहीं करता है, जिससे सार्वजनिक हित प्राप्त हो, जो लोगों को लाभान्वित करता हो और धरती पर बाक़ी रहता हो।
मध्य काल के अंधकार में मुसलमानों ने सभ्यता के प्रकाश को बहाल किया, जो पश्चिम और पूरब के सभी देशों, यहाँ तक कि कांस्टेंटिनोपल में भी बुझ चुका था।
यूरोप में ज्ञानोदय आंदोलन चर्च के अधिकारियों द्वारा तर्क और मानवीय इच्छा के खिलाफ किए गए अत्याचार की एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया था। जबकि यह स्थिति इस्लामी सभ्यता में कभी पैदा नहीं हुई।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"अल्लाह उनका सहायक है जो ईमान लाए। वह उनको अंधेरों से निकालता है और प्रकाश में लाता है, और जो काफ़िर (विश्वासहीन) हैं, उनके सहायक ताग़ूत (उनके मिथ्या पूज्य) हैं, जो उन्हें प्रकाश से अंधेरों की ओर ले जाते हैं। यही लोग जहन्नम जाने वाले हैं, और वे उसमें सदैव रहेंगे।" [98] इसलिए कि इंसान जिसे अल्लाह अज्ञानता, बहुदेववाद और अंधविश्वास के अंधेरों से ईमान, ज्ञान, जानकारी एवं सत्य के प्रकाश की ओर निकालता है, वह बुद्धि, अंतर्दृष्टि और एहसास का प्रकाशित व्यक्ति है। [सूरा अल-बक़रा : 257] क़ुरआन की इन आयतों में सोच-विचार करने से हम पाते हैं कि इंसान को अंधेरे से निकालने के पीछे अल्लाह का इरादा ही काम करता है और यही इंसान के लिए रब का मार्गदर्शन है, जो अल्लाह की अनुमति से ही अंजाम पाता है।
जैसा कि अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन को नूर (प्रकाश) कहा है :
"और अल्लाह की तरफ से आपके पास नूर और खुली किताब आ गई है।" [99] महान अल्लाह ने अपने रसूल मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर क़ुरआन उतारा, और अपने रसूल मूसा एवं ईसा -उन दोनों पर अल्लाह की शांति हो- पर तौरात और इंजील उतारा, ताकि वे लोगों को अंधेरों से प्रकाश की ओर निकालें और इस तरह उसने मार्गदर्शन को नूर से जोड़कर दिखाया।
[सूरा अल-माइदा : 15]
अल्लाह तआला ने कहा है :
"बेशक हमने तौरात उतारी, जिसमें हिदायत और रोशनी है।" [100] “और हमने उनको (ईसा अलैहिस्सलाम को) इन्जील प्रदान की, जिसमें मार्गदर्शन एवं ज्योति है, तथा वह अपने से पूर्व किताब तौरात की पुष्टि करती है तथा वह परहेज़गारों के लिए मार्गदर्शन एवं सदुपदेश है।” [101] [सूरा अल-माइदा : 44] अल्लाह की तरफ से आई रोशनी के बिना मार्गदर्शन नहीं हो सकता, और जो भी रोशनी इंसान के हृदय एवं जीवन को रौशन करती है, वह अल्लाह की अनुमति से करती है।
[सूरा अल-माइदा : 15]
अल्लाह तआला ने कहा है :
"अल्लाह आकाशों तथा धरती का नूर है।" [102] यहां हम देख रहे हैं कि क़ुरआन में नूर एकवचन ही आया है, जबकि अंधेरा बहुवचन। इसमें बहुत बारीकी के साथ स्थितियों को बयान किया गया है। [सूरा अल-नूर : 35] लेख "इस्लाम में ज्ञानोदय", डा० अल-तुवैजरी। लेख का लिंक: https://www.albayan.ae/five-senses/2001-11-16-1.1129413

अस्तित्व की उत्पत्ति के सिद्धांतों पर इस्लाम की राय : प्राकृतिक चयन के सिद्धांत पर इस्लाम की क्या राय है? **Atheism A Giant Leap of Faith. Dr. Raida Jarrar** डार्विन के कुछ अनुयायी, जो प्राकृतिक चयन (एक तर्कहीन भौतिक प्रक्रिया) को एक अनूठा रचनात्मक शक्ति मानते थे, जो बिना किसी वास्तविक प्रायोगिक आधार के सभी कठिन विकासवादी समस्याओं को हल करती है। बाद में उन्होंने जीवाणु कोशिकाओं की संरचना और कार्य में डिजाइन की जटिलता की खोज की। उन्होंने "स्मार्ट" बैक्टीरिया, "माइक्रोबियल इंटेलिजेंस", "निर्णय की रचना" और "समस्या को सुलझाने वाले बैक्टीरिया" जैसे वाक्यांशों का उपयोग करना शुरू कर दिया। इस तरह बैक्टीरिया उनका नया भगवान बन गया। **[104]**

सृष्टिकर्ता ने अपनी पुस्तक में तथा अपने रसूल की ज़ुबान में यह स्पष्ट किया है कि स्मार्ट बैक्टीरिया के साथ जिन कार्यों का संबंध जोड़ा जाता है, वे वास्तव में संसारों के रब के कार्य हैं, जो उसके ज्ञान और इच्छा के अनुसार सम्पन्न होते हैं।

अल्लाह तआला ने कहा है :
"अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला तथा वही प्रत्येक वस्तु का रक्षक है।" [105] [सूरा अल-ज़ुमर : 62] "जिसने ऊपर-तले सात आकाश बनाए। तुम अत्यंत दयावान् की रचना में कोई असंगति नहीं देखोगे। फिर पुनः देखो, क्या तुम्हें कोई दरार दिखाई देता है?" [106] [सूरा अल-मुल्क : 3]
एक अन्य स्थान में फ़रमाया है :
"निःसंदेह हमने प्रत्येक वस्तु को एक अनुमान के साथ पैदा किया है।" [107] वैज्ञानिक एक सृष्टिकर्ता के अस्तित्व में विश्वास और धर्म की धारणा से बचने के व्यर्थ प्रयासों में सृष्टिकर्ता को अन्य नामों से संदर्भित करते हैं। मसलन माँ प्रकृति, ब्रह्मांड के नियम, प्राकृतिक चयन "डार्विन का सिद्धांत" आदि। [सूरा अल-क़मर : 49] हम पाते हैं कि डिजाइन, फाइन-ट्यूनिंग, गुप्त भाषा (code language), तीक्ष्नता, आशय (नीयत), जटिल प्रणाली, परस्पर जुड़े कानून, आदि ऐसे शब्द हैं, नास्तिक जिनका स्रोत बेतरतीबी और संयोग को क़रार देते हैं, हालांकि वे इसे कभी स्वीकार नहीं करते हैं।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"वास्तव में, ये कुछ केवल नाम हैं, जो तुमने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं। अल्लाह ने इनका कोई प्रमाण नहीं उतारा है। वे केवल अनुमान तथा अपनी मनमानी पर चल रहे हैं। जबकि उनके पास उनके पालनहार की ओर से मार्गदर्शन आ चुका है।" [108] अल्लाह के अतिरिक्त कोई दूसरा नाम प्रयोग करना, उसके कुछ परम गुणों को छीन लेता है और अधिक प्रश्न उठाता है। उदाहरण स्वरूप :
[सूरा अल-नज्म : 23]
अल्लाह के ज़िक्र से बचने के लिए, सार्वभौमिक कानूनों और जटिल परस्पर जुड़ी प्रणालियों के निर्माण का श्रेय यादृच्छिक प्रकृति को दिया जाता है, और मनुष्य की दृष्टि और बुद्धि को एक अंधी और मूर्ख बुनियाद की ओर लौटाया जाता है।

एक मुसलमान इस विचार को क्यों स्वीकार नहीं करता है कि वानर मनुष्य की उत्पत्ति की असल है?

इस्लाम इस विचार को पूरी तरह से खारिज करता है और क़ुरआन ने यह स्पष्ट किया है कि अल्लाह तआला ने इंसान के सम्मान के तौर पर आदम -अलैहिस्सलाम- को दूसरी सभी सृष्टियों से अलग करके पैदा किया है, ताकि उसको धरती पर अपना ख़लीफ़ा बनाने के रब के उद्देश्य की प्राप्ति हो।
डार्विन के अनुयायी ब्रह्मांड के निर्माता के अस्तित्व में विश्वास करने वाले को एक पिछड़ा इंसान मानते हैं, क्योंकि वह उस चीज़ में विश्वास रखता है, जिसे उसने नहीं देखा है। मोमिन उसपर विश्वास रखता है, जो उसकी स्थिति को ऊंचा करता है और उसके दर्जे को बुलंद करता है, जबकि नास्तिक उसपर विश्वास रखते हैं, जो उन्हें नीचा और कम करता है। जो भी हो, प्रश्न यह है कि बाकी वानर अब तक बाकी इंसान के रूप में विकसित क्यों नहीं हुए? सिद्धांत परिकल्पनाओं का एक समूह है। ये परिकल्पनाएँ किसी विशेष प्रत्यक्ष को देखने या उसपर विचार करने से आती हैं और इन परिकल्पनाओं को सिद्ध करने के लिए, सफल प्रयोग या प्रत्यक्ष अवलोकन की आवश्यकता होती है, जो इस परिकल्पना को वैधता प्रदान करे। यदि सिद्धांत से संबंधित परिकल्पनाओं में से कोई एक सिद्ध न की जा सके, न तो प्रयोग द्वारा और न ही प्रत्यक्ष अवलोकन से, तो सिद्धांत पर पूरी तरह से पुनर्विचार किया जाएगा। यदि हम 60,000 साल से भी पहले हुए विकास का उदाहरण लें, तो सिद्धांत का कोई अर्थ नहीं होगा। अगर हम इसे नहीं देखते या इसका पालन नहीं करते हैं, तो इस तर्क को स्वीकार करने की कोई गुंजाइश नहीं है। अगर हाल ही में यह देखा गया कि पक्षियों की कुछ प्रजातियों में चोंच ने अपना आकार बदल लिया है, परन्तु वे पक्षियाँ ही रहीं, हालाँकि इस सिद्धांत के आधार पर अनिवार्य था कि पक्षियाँ दूसरी प्रजाति में विकसित हों। ."Chapter 7: Oller and Omdahl." Moreland, J. P. The Creation Hypothesis: Scientific वास्तव में, यह विचार कि इंसान का मूल वानर था या वह वानर से विकसित हुआ है, यह कभी भी डार्विन के विचारों में से नहीं था। उसने केवल यह कहा है कि इंसान और वानर एक सामान्य और अज्ञात मूल से निकले हैं। इसे उन्होंने (द मिसिंग लिंक) कहा है, जिसका विशेष विकास हुआ और वह इंसान में बदल गया। हालाँकि मुसलमान डार्विन की बातों को पूरी तरह से खारिज करते हैं, परन्तु उन्होंने यह नहीं कहा है, जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं कि वानर मनुष्य का पूर्वज है। इस सिद्धांत को पेश करने वाले स्वयं डार्विन ने कहा है कि उन्हें कई संदेह हैं। उन्होंने अपने साथियों को कई चिट्ठियाँ लिखी थीं, जिनमें उन्होंने अपने संदेह और खेद व्यक्त किए थे। [109] विकासवाद के सिद्धांत पर इस्लाम की क्या राय है? यह प्रमाणित हो चुका है कि डार्विन एक पूज्य [110], के अस्तित्व पर विश्वास करते थे, परन्तु यह विचार कि इंसान जानवर से विकसित हुआ है, यह डार्विन के अनुयायियों की तरफ से उनके सिद्धांत में ज़्यादा किया गया है। उनके अनुयायी वास्तव में नास्तिक थे। मुसलमान इस बात पर अटल विश्वास रखते हैं कि अल्लाह ने आदम को सम्मानित किया, उन्हें धरती पर ख़लीफ़ा बनाया और इस खलीफा के स्थान के लिए उपयुक्त नहीं है कि वह जानवर या इस तरह की चीज़ से विकसित हो।

डार्विन की जीवनी, लंदन प्रकाशन, कोलिंज, 1958, पृष्ठ : 92,93

विज्ञान एक सामान्य वंश से विकास की अवधारणा पर ठोस सबूत प्रदान करता है, जिसका जिक्र पवित्र क़ुरआन ने किया है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"और हमने पानी से हर जीवित चीज़ बनाई है। क्या वे ईमान नहीं लाते?" [111] अल्लाह तआला फ़रमाता है : [सूरा अल-अंबिया : 30] सर्वशक्तिमान ईश्वर ने जीवित प्राणियों को बुद्धिमान और फितरी तौर पर ऐसा बनाया है कि वे अपने आसपास के वातावरण के अनुकूल हों। वे आकार, शक्ल या लंबाई में विकसित हो सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, अन्य देशों के विपरीत ठंडे देशों में भेड़ों का एक विशिष्ट आकार और खाल होती है, जो उन्हें ठंड से बचाती है। हवा के तापमान के अनुसार ऊन बढ़ता या घटता है। पर्यावरण के अनुसार आकार और प्रकार भिन्न होते हैं। यहाँ तक कि मनुष्य भी अपने रंग, गुण, भाषा और आकार में भिन्न होते हैं कि कोई भी मनुष्य दूसरे जैसा नहीं है। परन्तु, वे मनुष्य ही रहते हैं, दूसरे प्रकार के पशु में परिवर्तित नहीं होते हैं। "और उसकी निशानियों में से आसमानों और ज़मीन को पैदा करना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का

अलग-अलग होना भी है। नि:संदेह इसमें जानने वालों के लिए निशानियाँ मौजूद हैं।" [112] "अल्लाह ही ने प्रत्येक जीवधारी को पानी से पैदा किया है। तो उनमें से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं, और कुछ दो पैर पर तथा कुछ चार पैर पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहे, पैदा करता है। वास्तव में, अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।" [113] [सूरा अल-रूम : 22] [सूरा अल-नूर : 45] विकासवाद का सिद्धांत, जिसका उद्देश्य एक निर्माता के अस्तित्व को नकारना है, यह सभी जीवित चीजों, जानवरों और पौधों की उत्पत्ति के सामान्य स्रोत के बारे में बताता है। यह बताता है कि वे एक ही पूर्वज यानी एकल-कोशिका वाले जीव से विकसित हुए हैं। उसके अनुसार पहली कोशिका का निर्माण पानी में अमीनो एसिड के संयोजन का परिणाम था, जिसने बदले में डीएनए की पहली संरचना बनाई, जो एक जीव के आनुवंशिक लक्षणों को वहन करता है। इन अमीनो एसिड के संयोजन से, जीवित कोशिका का पहला ढांचा बनाया गया था। विभिन्न पर्यावरणीय और बाहरी कारकों के परिणामस्वरूप इन कोशिकाओं का प्रसार हुआ, जिसने पहले शुक्राणु का निर्माण किया, फिर जोंक में विकसित हुआ और फिर भ्रूण में विकसित हुआ। जैसा कि हम यहां देख रहे हैं, ये चरण मां के गर्भ में मानव निर्माण के चरणों से बहुत मिलते हैं। हालाँकि, जीवित जीव इस बिंदु पर बढ़ना बंद कर देते हैं। डीएनए में रखी गई आनुवंशिक विशेषताओं के अनुसार एक जीव का निर्माण होता है। उदाहरण के तौर पर मेंढक अपना विकास पूरा करते हैं, पर वे मेंढक ही रहते हैं। इसी तरह, प्रत्येक जीवित जीव अपनी आनुवंशिक विशेषताओं के अनुसार विकसित होता है। भले ही हम नए जीवों के उद्भव में आनुवंशिक उत्परिवर्तन और आनुवंशिक लक्षणों पर उनके प्रभाव के विषय को स्वीकार करें, यह सृष्टिकर्ता की क्षमता और इच्छा का खंडन नहीं करता है। परन्तु, नास्तिक लोग कहते हैं कि यह बिना किसी इरादे के ही अंजाम पा जाता है। जबकि हम देखते हैं कि सिद्धांत इस बात की पुष्टि करता है कि विकास के ये चरण केवल एक जानकार विशेषज्ञ के इरादे और माप के साथ ही हो सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं। इस प्रकार, निर्देशित विकास, या ईश्वरीय विकास की अवधारणा को अपनाना संभव है, जो जैविक विकास की बात करता है और यादृच्छिकता को अस्वीकार करता है। और विकास के पीछे एक बुद्धिमान, सक्षम और वैज्ञानिक का होना ज़रूरी है, जिसका अर्थ है कि हम विकास को स्वीकार कर सकते हैं, लेकिन डार्विनवाद को पूरी तरह से अस्वीकार करते हैं। महान जीवाश्म विज्ञानी और जीवविज्ञानी स्टीफन जोल कहते हैं : "या तो मेरे आधे साथी बहुत मूर्ख हैं या डार्विनवाद धर्म के साथ चलने वाली धारणाओं से भरा है।"

क़ुरआन ने विकासवाद की अवधारणा को कैसे सही किया?

पवित्र क़ुरआन ने आदम -अलैहिस्सलाम- की रचना की कहानी बताकर विकासवाद की अवधारणा को ठीक किया है :
जब इंसान का कोई अस्तित्व नहीं था :
"निश्चय इनसान पर ज़माने का एक ऐसा समय भी गुज़रा है, जब वह कोई ऐसी चीज़ नहीं था जिसका (कहीं) उल्लेख हुआ हो।" [114] आदम -अलैहिस्सलाम- की रचना का अरंभ मिट्टी से हुआ :
[सूरा अल-इंसान : 1]
"और निःसंदेह हमने मनुष्य को तुच्छ मिट्टी के एक सार से पैदा किया।" [115] "जिसने अच्छा बनाया हर चीज़ को जो उसने पैदा की और उसने मनुष्य की रचना मिट्टी से शुरू की।" [116] [सूरा अल-मोमिनून : 12] "निःसंदेह ईसा का उदाहरण अल्लाह के निकट आदम के उदाहरण की तरह है कि उसे थोड़ी-सी मिट्टी से बनाया, फिर उसे कहा : "हो जा", तो वह हो जाता है।" [117] [सूरा अल-सजदा: 7] मानव पिता आदम का सम्मान :
[सूरा आल-ए-इमरान : 59]
"(अल्लाह ने) कहा : ऐ इबलीस! तुझे किस चीज़ ने रोका कि तू उसके लिए सजदा करे जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया? क्या तू बड़ा बन गया, या तू था ही ऊँचे लोगों में से?" [118] मानव पिता आदम का सम्मान केवल इसलिए नहीं है कि वह स्वतंत्र रूप से मिट्टी से बनाये गये थे, बल्कि इसलिए है कि उन्हें सीधे सारे संसारों के रब के हाथों से बनाया गया था, जैसा कि इस पवित्र आयत में इशारा किया गया है। साथ ही अल्लाह ने अपने आज्ञापालन के तौर पर फ़रिश्तों से आदम को सजदा करने को भी कहा।
[सूरा स़ाद : 75]
"जब हमने फ़रिश्तों को आदेश दिया कि वे आदम को सजदा करे, तो इबलीस के सिवा सभी लोगों ने सजदा किया। उसने इंकार किया और घमंड किया और वह काफ़िरों में से था।" [119] आदम -अलैहिस्सलाम- की संतान की रचना :
[सूरा अल-बक़रा : 34]
"फिर उसके वंश को एक तुच्छ पानी के निचोड़ (वीर्य) से बनाया।" [120] फिर हमने उस वीर्य को एक जमा हुआ रक्त बनाया, फिर हमने उस जमे हुए रक्त को एक बोटी बनाया, फिर हमने उस बोटी को हड्डियाँ बनाया, फिर हमने उन हड्डियों को कुछ माँस पहनाया, फिर हमने उसे एक अन्य रूप में पैदा कर दिया। तो बहुत बरकत वाला है अल्लाह, जो बनाने वालों में सबसे अच्छा है।" [121] [सूरा अल-सजदा : 8] "फिर हमने उसे वीर्य बनाकर एक सुरक्षित स्थान में रख दिया। "तथा वही है, जिसने पानी (वीर्य) से मनुष्य को उत्पन्न किया, फिर उसके वंश तथा ससुराल के संबंध बना दिये। आपका पालनहार अति सामर्थ्यवान है।" [122] [सूरा अल-मोमिनून : 13-14] आदम -अलैहिस्सलाम- की संतान का सम्मान :
[सूरा अल-फ़ुरक़ान : 54]
"निश्चय ही हमने आदम की संतान को सम्मान प्रदान किया, और उन्हें थल और जल में सवार[44] किया, और उन्हें अच्छी-पाक चीज़ों की रोज़ी दी, तथा हमने अपने पैदा किए हुए बहुत-से प्राणियों पर उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की।" [123] हम यहां आदम की नस्लों की उत्पत्ति के चरणों (तुच्छ पानी, शुक्राणु, जोंक, भ्रूण) और जीवित जीवों की उत्पत्ति और उनके प्रजनन के तरीकों से संबंधित विकास के सिद्धांत में समानता देखते हैं।
[सूरा अल- इसरा : 70]
"(वह) आकाशों तथा धरती का रचयिता है। उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी अपनी ही जाति से जोड़े बनाए तथा पशुओं से भी जोड़े। वह तुम्हें इसमें फैलाता है। उसके जैसी कोई चीज़ नहीं और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।" [124] [सूरा अल-शूरा : 11] अल्लाह ने आदम की संतान को बनाने की शुरूआत तुच्छ पानी से की, ताकि सृष्टि के स्रोत की एकता और

सृष्टिकर्ता की एकता की ओर इंगित किया जा सके। इसी तरह उसने आदम -अलैहिस्सलाम- को उनके सम्मान के तौर पर दूसरी सभी सृष्टियों से अलग पैदा किया, ताकि धरती पर उनको अपना ख़लीफ़ा बनाए जाने की अल्लाह तआला की हिकमत की प्राप्ति हो। अल्लाह ने आदम -अलैहिस्सलाम- को बिना बाप-माँ के पैदा किया, ताकि अपनी असीम क़ुदरत को प्रमाणिक करे। इसका एक दूसरा उदाहरण ईसा -अलैहिस्सलाम- को बिना बाप के पैदा करके पेश किया, ताकि यह उसकी असीम क्षमता को प्रमाणित करने वाला चमत्कार और लोगों के लिए एक निशानी हो। "निःसंदेह ईसा का उदाहरण अल्लाह के निकट आदम के उदाहरण की तरह है कि उसे थोड़ी-सी मिट्टी से बनाया, फिर उसे कहा : "हो जा", तो वह हो जाता है।" [125]
[आल-ए-इमरान : 59]
बहुत-से लोग विकासवाद के सिद्धांत के आधार पर जिसका इनकार करने की कोशिश करते हैं, वह (सिद्धांत स्वयं) उनके ख़िलाफ सबूत है।

इस्लाम अस्तित्व के स्रोत के सिद्धांतों को एक सच्चे सत्य की अनिवार्यता में सीमित क्यों करता है?

लोगों के बीच विभिन्न सिद्धांतों और विश्वासों के पाए जाने का मतलब यह नहीं है कि एक सच्चे सत्य का अस्तित्व नहीं है। उदाहरण के तौर पर एक काली कार के मालिक द्वारा उपयोग किए जाने वाले यातायात के साधन के बारे में लोगों की अवधारणाएं और कल्पनाएं चाहे कितनी ही क्यों न हों, इस बात का इनकार नहीं किया जा सकता कि उसके पास एक काली कार है। अब अगर पूरी दुनिया माने कि इस व्यक्ति की कार लाल है, तो यह विश्वास इसे लाल नहीं बनाता है। केवल एक ही सच्चाई है और वह यह है कि यह एक काली कार है।
उसी प्रकार किसी चीज़ की वास्तविकता के बारे में अवधारणाओं और कल्पनाओं की बहुलता इस चीज़ के लिए एक निश्चित वास्तविकता के अस्तित्व को नकारती नहीं है।
अस्तित्व की उत्पत्ति के बारे में लोगों की जितनी भी धारणाएं और कल्पनाएं हों, यह इस सत्य के अस्तित्व को नकारती नहीं हैं कि वह एक अकेला सृष्टिकर्ता है, उसका कोई आकार नहीं है जिसे मानव जानता हो, न उसका कोई साझी है और न ही कोई संतान। उदाहरण के तौर पर अगर पूरी दुनिया यह मान ले कि सृष्टिकर्ता जानवर या इंसान के रूप में अवतरित होता है, तो वह ऐसा नहीं हो जाएगा। अल्लाह तआला इन सब चीज़ों से पाक एवं उच्च है।

क्या एक मुसलमान नैतिकता और इतिहास आदि के सापेक्षवादी सिद्धांतों को स्वीकार करता है?

यह अतार्किक है कि अपनी ख़्वाहिश से निर्देशित मानव निर्धारित करे कि बलात्कार बुरा है कि नहीं। यह स्पष्ट है कि बलात्कार अपने आप में मानव अधिकार का उल्लंघन और उसके महत्व एवं स्वतंत्रता को छीन लेना है। यही प्रमाण है इस बात का कि बलात्कार बुरी चीज़ है। साथ ही समलैंगिकता और शादी के अलावा रिश्ते, सार्वभौमिक मानदंडों का उल्लंघन हैं। सही ग़लत नहीं होगा यद्यपि पूरी दुनिया उसे ग़लत कहने पर उतर आए। इसी तरह ग़लत भी सूरज की तरह स्पष्ट है, यद्यपि पूरी मानव जाति उसे सही कहने पर सहमत हो जाए। इसी तरह इतिहास की बात है। यदि हम यह मान लें कि हर युग के लिए उचित है कि वह अपने दृष्टिकोण के अनुसार इतिहास लिखे, इसलिए कि महत्वपूर्ण एवं अहम चीज़ को परखने की कसौटी हर युग की दूसरे युग से अलग होती है। परन्तु यह इतिहास को सापेक्ष नहीं बनाता है। इसलिए कि यह इस बात को नकारता नहीं है कि घटनाओं की एक ही वास्तविकता होती है। हम मानें या न मानें। घटनाओं की विकृति तथा अशुद्धता की संभावना रखने वाला और ख़्वाहिश पर आधारित मानव इतिहास सारे संसारों के रब के द्वारा बताए गए इतिहास से अलग है, जिसमें भूत, वर्तवान एवं भविष्य की घटनाओं को बयान करने में कमाल दर्जे की सूक्ष्मता दिखलाई गई है।

मूल अस्तित्व और नैतिकता के एक व्यापक सत्य के अस्तित्व का क्या प्रमाण है?

एक व्यापक वास्तविकता के अस्तित्व का न होना, जिसे बहुत-से लोग अपनाए हुए हैं, यह अपने आप में ऐसी चीज़ पर ईमान लाना है, जो सही भी है और ग़लत भी। वे इसे दूसरों पर लागू करने की कोशिश करते हैं। वे व्यवहार का एक मानक अपनाते हैं और सभी को इसका पालन करने के लिए मजबूर करते हैं। ऐसा करके, वे उसी चीज़ का उल्लंघन कर रहे होते हैं, जिसे वे धारण करने का दावा करते हैं। यह एक विरोधाभासी मत है।
एक व्यापक सत्य के अस्तित्व के प्रमाण इस प्रकार हैं :
अंतरात्मा : (आंतरिक आवाज़) नैतिक दिशानिर्देश के नियमों का संग्रह, जो मानव व्यवहार को नियमित करता है। यह दरअसल इस बात का प्रमाण है कि विश्व एक विशेष रास्ते पर चलता है, जिसमें सही भी है और ग़लत भी। यह नैतिक उसूल कुछ सामाजिक पालनों का नाम है, जिनका विरोध करना या उन्हें पूछे जाने का विषय बनाना संभव नहीं है। वे सामाजिक वास्तविकताएं हैं, जिनके अंतर्वस्तु या अर्थ से बेपरवाह होना समाज के लिए संभव नहीं है। जैसा कि माँ-बाप का सम्मान न करने या चोरी करने को हमेशा घृणित व्यवहार माना जाता है। उसे कभी भी सच या सम्मान बताकर उचित ठहराया नहीं जा सकता। यह बात सामान्य रूप से हर समय सभी संस्कृतियों पर लागू होती है। विज्ञान : चीज़ों की वास्तविकता को जानने को विज्ञान कहते हैं। विज्ञान, ज्ञान और निश्चितता का नाम है। इसलिए, विज्ञान अनिवार्य रूप से इस विश्वास पर निर्भर है कि दुनिया में वस्तुनिष्ठ तथ्य हैं, जिनकी खोज करना एवं जिनको साबित करना संभव है। यदि साबित तथ्य न हों तो क्या अध्ययन किया जा सकता है? किसी को कैसे पता चलेगा कि वैज्ञानिक निष्कर्ष वास्तविक हैं? वास्तव में, वैज्ञानिक आधार स्वयं व्यापक तथ्यों के अस्तित्व पर आधारित हैं। धर्म : दुनिया के सभी धर्म जीवन की एक अवधारणा, अर्थ और परिचय देते हैं। यह गहनतम प्रश्नों के उत्तर को पाने की अति मानवीय इच्छा का परिणाम है। धर्म के माध्यम से, मनुष्य अपने स्रोत, अंजाम तथा आंतरिक शांति की खोज करता है, जिसे इन उत्तरों को तलाश किए बिना नहीं पाया जा सकता है। धर्म का पाया

जाना अपने आप में इस बात का सबूत है कि इंसान केवल विकसित जानवर से बढ़कर है। साथ ही इस जीवन का एक उच्च लक्ष्य है। यह एक सृष्टिकर्ता के अस्तित्व का प्रमाण भी है, जिसने हम सब को एक उद्देश्य के तहत पैदा किया है और इंसान के हृदय में उसकी जानकारी प्राप्त करने की इच्छा रख दी है। वास्तव में, सृष्टिकर्ता का अस्तित्व ही परम सत्य का मानक है।
तर्क : सभी मनुष्यों के पास सीमित ज्ञान है और सीमित धारणा के दिमाग हैं, इसलिए अनियत रूप से नकारात्मक कथनों को अपनाना तार्किक रूप से असंभव है। कोई तार्किक रूप से नहीं कह सकता कि "पूज्य नहीं है", क्योंकि किसी व्यक्ति को ऐसा कथन कहने के लिए उसके पास शुरू से लेकर अंत तक पूरे ब्रह्मांड का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इसलिए यह मुश्किल है। अपने सीमित ज्ञान की बुनियाद पर तार्किक रूप से इंसान अधिक से अधिक यही कह सकता है कि मैं अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान नहीं रखता हूँ।
अनुकूलता : परम (अनियत) सत्य का इनकार हमें ले जाता है :
विरोधाभास की ओर, हमारे दिल के सही यक़ीन के साथ तथा जीवन के अनुभवों और वास्तविकता के साथ।
अस्तित्व में किसी भी चीज़ के सही या ग़लत न होने की ओर। उदाहरण के तौर पर अगर मेरे लिए सही बात सड़क के नियमों की अनदेखी करना है, तो मैं अपने आसपास के लोगों के जीवन को खतरे में डालूंगा। इस प्रकार, मनुष्यों के बीच सही और गलत के मानकों में टकराव होगा और इस तरह किसी भी चीज़ के बारे में निश्चित होना असंभव हो जाएगा।
एक व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुसार अपराध करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो जाएगी
और क़ानून बनाना या न्याय स्थापित करना मुश्किल हो जाएगा।
पूर्ण स्वतंत्रता वाला व्यक्ति एक बदसूरत प्राणी बन जाता है और जैसा कि यह सिद्ध हो चुका है और इसमें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है कि इंसान इस स्वतंत्रता को सहन करने में असमर्थ है। गलत व्यवहार गलत है, भले ही दुनिया उसके सही होने पर एकमत हो जाए। यह एकमात्र सत्य और वास्तविकता है कि नैतिकता सापेक्ष नहीं है और समय या स्थान के साथ बदलती नहीं है।
व्यवस्था : एक व्यापक (अनियत) सत्य की अनुपस्थिति अराजकता की ओर ले जाती है।
उदाहरण स्वरूप, यदि गुरुत्वाकर्षण का नियम एक वैज्ञानिक सत्य नहीं होता, तो हम एक ही स्थान पर खड़े होने या बैठने पर तब तक निश्चित नहीं होते, जब तक कि हम फिर से हिल नहीं जाते और हम इस बात पर निश्चित नहीं होते कि हर बार एक और एक का योग दो होता है। सभ्यता पर इसका प्रभाव गंभीर होता, विज्ञान और भौतिकी के नियम महत्वहीन हो जाते और लोगों के लिए खरीद-बिक्री का काम करना असंभव हो जाता।

अस्तित्व के स्रोत का एकमात्र परम (अनियत) सत्य क्या है?

अंतरिक्ष में तैर रही पृथ्वी पर मनुष्यों की उपस्थिति ऐसे ही है, जैसे विभिन्न संस्कृतियों से संबंध रखने वाले यात्री एक विमान पर एकत्र हो जाएँ और वह उन्हें अज्ञात दिशा की ओर ले जाए और यह पता न हो कि विमान को चला कौन रहा है। लोग विमान पर ख़ुद अपनी सेवा आप करने और परेशानियों को सहन करने पर मजबूर हों।
ऐसे में उनके पास पायलट की तरफ से केबिन क्रू के एक सदस्य द्वारा एक संदेश आए, जो उन्हें समझाए कि वे वहां क्यों हैं, उन्होंने कहाँ उड़ान भरी और कहां जा रहे हैं और उन्हें पायलट के व्यक्तिगत गुण और उनके साथ सीधे संवाद करने का तरीका बताए।
इसपर पहला यात्री कहे कि हाँ, यह स्पष्ट है कि विमान में एक चालक है और वह दयालु है, क्योंकि उसने इस व्यक्ति को हमारे सवालों के जवाब देने के लिए भेजा है।
दूसरा व्यक्ति कहे कि विमान में कोई चालक नहीं है और मुझे इस भेजे हुए व्यक्ति पर विश्वास नहीं है। हम यूँ ही आ गए हैं और हम यहाँ बिना लक्ष्य के हैं।
तीसरा व्यक्ति कहे कि कोई हमें यहां लाया नहीं है। हम ऐसे ही समूहबद्ध हो गए हैं।
चौथा कहे कि विमान में एक चानक है, लेकिन यह भेजा हुआ व्यक्ति उसका पुत्र है और चालक अपने पुत्र के रूप में हमारे बीच रहने के लिए आया है।
पांचवाँ कहे कि विमान में एक चालक है, लेकिन उसने किसी को संदेश के साथ भेजा नहीं है। विमान का चालक हमारे बीच रहने के लिए किसी भी रूप में आता है, हमारी उड़ान का कोई अंतिम पड़ाव नहीं है और हम हमेशा विमान पर ही रहेंगे।
छठा कहे कि विमान का कोई पायलट नहीं है और मैं अपने लिए एक प्रतीकात्मक काल्पनिक पायलट बनाना चाहता हूं।
सातवाँ कहे कि पायलट मौजूद है, लेकिन उसने हमें विमान में बिठाया और व्यस्त हो गया। वह अब हमारे मामलों में या विमान के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता है।
आठवाँ कहे कि पायलट मौजूद है और मैं उसके दूत का सम्मान करता हूं, लेकिन हमें यह निर्धारित करने के लिए विमान पर कानूनों की आवश्यकता नहीं है कि यह काम अच्छा है या बुरा। हम अपनी इच्छाओं और ख़्वाहिशों के आधार पर एक दूसरे के साथ व्यवहार करना चाहते हैं। इसलिए हम वही करते हैं जो हमें ख़ुशी देता है।
नौवाँ कहे पायलट मौजूद है और वह केवल मेरा पायलट है तथा आप सब यहां मेरी सेवा करने के लिए हैं। किसी भी हाल में आप अपनी मंजिल तक नहीं पहुंचेंगे।
दसवाँ व्यक्ति कहे कि पायलट की उपस्थिति सापेक्ष है। वह उसके अस्तित्व में विश्वास रखने वालों के लिए मौजूद है और उसके अस्तित्व को नकारने वालों के लिए मौजूद नहीं है। इस पायलट, उड़ान के उद्देश्य और विमान के यात्रियों के आपस में व्यवहार के तरीके के बारे में यात्रियों की हर धारणा सही है।
हम इस काल्पनिक कहानी से समझ सकते हैं, जो कहानी अस्तित्व की उत्पत्ति और जीवन के उद्देश्य के बारे में वर्तमान में पृथ्वी पर मानव की वास्तविक धारणाओं की एक झलक देती है :
यह स्वतः स्पष्ट है कि विमान में एक पायलट है, जो नेतृत्व जानता है और एक विशिष्ट लक्ष्य के लिए इसे एक तरफ से दूसरी तरफ ले जा रहा है और कोई भी इस सत्य से असहमत नहीं होगा।

वह व्यक्ति जो पायलट के अस्तित्व से इनकार करता है या उसके बारे में कई धारणाएं रखता है, उसे ही स्पष्टीकरण और व्याख्या देना है और उसी की धारणा सही या गलत हो सकती है।

यदि हम इस प्रतीकात्मक उदाहरण को सृष्टिकर्ता के अस्तित्व की वास्तविकता पर लागू करते हैं, तो हम पाते हैं कि अस्तित्व की उत्पत्ति के सिद्धांतों की बहुलता, एक व्यापक (अनियत) वास्तविक अस्तित्व को नकारती नहीं है। वह व्यापक वास्तविक अस्तित्व है :

एक ऐसा सृष्टिकर्ता, जिसका कोई साझी नहीं है और न औलाद है, वह सृष्टि से अलग अपनी ज़ात रखता है। वह किसी के आकार में प्रकट नहीं होता है। यदि पूरी दुनिया यह कहे कि सृष्टिकर्ता किसी जानवर या इंसान का शरीर धारण करता है, तब भी यह सत्य नहीं है। अल्लाह इन सब बातों से बहुत ऊँचा एवं पाक है।

वह सृष्टिकर्ता पूज्य न्याय प्रिय है। उसके न्याय में से यह है कि वह बदला एवं सज़ा दे और मानव के संपर्क में हो। वह पूज्य कभी नहीं हो सकता था यदि वह अपने बन्दों को पैदा करके छोड़ देता। वह उनकी तरफ रसूलों को भेजता है, ताकि वह उन्हें रास्ता बताए और मानव को अपने मार्ग से अवगत करे। उसका मार्ग यह है कि बिना किसी पुजारी, संत या किसी मध्यस्थ के, केवल उसी की इबादत की जाए और उसी का सहारा लिया जाए। जो इस रास्ते पर चलेगा, वह प्रतिफल का अधिकारी होगा और जो इसके विपरीत चलेगा, वह दंड पाएगा। यह सब कुछ आख़िरत में या तो जन्नत की नेमतों या जहन्नम के अज़ाब के द्वारा होगा।

इसी को "इस्लाम धर्म" कहते हैं। यही वह सत्य धर्म है, जिसको अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए पसंद किया है।

क्या एक गैर-मुस्लिम के लिए काफिर शब्द का इस्तेमाल उसका अपमान है?

उदाहरण के तौर पर क्या ईसाई यह नहीं मानते कि मुसलमान काफ़िर है, क्योंकि वह ट्रिनिटी के सिद्धांत में विश्वास नहीं रखता और उनकी मान्यता अनुसार उसपर विश्वास किए बिना (आकाश में) नेक लोगों के स्थान में प्रवेश संभव नहीं है। शब्द "कुफ़्र" का अर्थ सत्य का इंकार है। एक मुसलमान के लिए सत्य तौहीद (एकेश्वरवाद) है, जबकि ईसाई के लिए सत्य ट्रिनिटी है।

अंतिम ग्रंथ :

क़ुरआन क्या है?

क़ुरआन सारे संसारों के रब द्वारा भेजी गई सबसे आख़िरी किताब है। मुसलमान उन सभी पुस्तकों पर विश्वास रखते हैं, जो क़ुरआन से पहले उतारी गई थीं, जैसे कि इब्राहिम के सहीफ़े, ज़बूर, तोरात और इंजील आदि। मुसलमानों का मानना है कि सभी पुस्तकों का वास्तविक संदेश तौहीद-ए-खालिस (शुद्ध एकेश्वरवाद) अर्थात एक अल्लाह पर ईमान एवं केवल उसी की इबादत था। क़ुरआन पूर्व की दूसरी आकाशीय पुस्तकों के विपरीत किसी विशेष गिरोह या जमात केंद्रित नहीं है। न इसके विभिन्न संस्करण पाए जाते हैं और न इसमें कोई बदलाव आया है, बल्कि तमाम मुसलमानों के लिए इसका एक ही संस्करण है। मूल क़ुरआन अभी भी अपनी मूल भाषा (अरबी) में है। बिना किसी बदलाव, विरूपण या परिवर्तन के॰ वह हमारे समय तक सुरक्षित है और ऐसा ही रहेगा। खुद सारे संसारों के रब ने उसकी सुरक्षा का वचन दिया है। यह सभी मुसलमानों के यहाँ उपलब्ध है, बहुत-से लोगों के सीने में सुरक्षित है और लोगों के पास मौजूद कई भाषाओं में क़ुरआन का वर्तमान अनुवाद, केवल उसके अर्थों का अनुवाद है। अल्लाह ने अरब और गैर-अरब सभी को इस तरह के क़ुरआन की रचना करने की चुनौती दी थी, यह जानते हुए कि उस समय के अरब भाषाज्ञान, साहित्यिक ज्ञान और कविता में दूसरों से अधिक निपुण थे। परन्तु उन लोगों को विश्वास हो गया कि इस क़ुरआन का अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की तरफ से होना असंभव है। यह चुनौती चौदह शताब्दियों से अधिक समय से क़ायम है। परन्तु कोई भी इसे स्वीकार करने में सक्षम नहीं हुआ। यह इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है कि क़ुरआन अल्लाह की किताब है।

क्या पैगंबर मुहम्मद ने क़ुरआन को तौरात से कॉपी किया है?

यदि क़ुरआन यहूदियों के यहाँ से लिया गया होता, तो वे खुद बढ़-चढ़कर इसकी निस्बत अपनी ओर कर लेते। लेकिन क्या यहूदियों ने वह्य के उतरने के समय इस तरह का कोई दावा किया?

क्या नमाज़, हज और ज़कात आदि शरई अहकाम तथा अन्य इस्लामी मामलात यहूदियों से भिन्न नहीं हैं? फिर गैर-मुस्लिमों की गवाही पर विचार करें, जो कहती है कि क़ुरआन दूसरी पुस्तकों से भिन्न है, मानव निर्मित नहीं है तथा वैज्ञानिक चमत्कारों से भरा हुआ है। जब किसी आस्था का मानने वाला, उसकी आस्था के विपरीत आस्था को सही कहे, तो यह उसके सही होने का सबसे बड़ा प्रमाण है। यह संसार के पालनहार का एकमात्र संदेश है और इसे एकमात्र संदेश होना भी चाहिए। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लाया हुआ क़ुरआन आपकी जालसाज़ी की नहीं, बल्कि आपके सच्चे नबी होने की दलील है। अल्लाह ने भाषाज्ञान में माहिर अरब और गैर-अरब सब को चुनौती दी है कि वे इस क़ुरआन की तरह एक क़ुरआन या उसकी किसी आयत की तरह एक आयत ही ले आएँ, परन्तु वे विफल रहे। यह चुनौती आज तक क़ायम है।

क्या क़ुरआन में जो कुछ आया है, उसे पैगंबर मुहम्मद ने पिछली सभ्यताओं से लिया है?

प्राचीन सभ्यताएँ सही ज्ञानों एवं बहुत सारी किंवदंतियों और मिथकों का संग्रह थीं। एक अशिक्षित नबी जो एक बंजर रेगिस्तान में पला-बढ़ा हो, इन सभ्यताओं से केवल सत्य को लेने और किंवदंतियों को छोड़ देने में कैसे सक्षम हो सकता था?

क़ुरआन को अरबी भाषा में क्यों उतारा गया?

दुनिया में हजारों भाषाएं और बोलियां हैं। यदि उनमें से किसी भी एक भाषा में उतारा जाता, तो लोग प्रश्न करते कि दूसरी भाषा में क्यों नहीं उतारा गया? अल्लाह प्रत्येक रसूल को उसके समुदाय की भाषा में भेजता है। उसने अपने रसूल मुहम्मद

-सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को आख़िरी रसूल के तौर पर चुना, क़ुरआन को उनके समुदाय की भाषा में उतारा और उसे क़यामत के दिन तक विकृत होने से सुरक्षित रखा, जैसा कि उसने मसीह की पुस्तक के लिए आरामी भाषा को चुना।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"और हमने हर नबी (संदेशवाहक) को उसकी कौम की भाषा में ही भेजा है, ताकि उनके सामने स्पष्ट तौर से बयान कर दे।" [126] [सूरा इब्राहीम : 4]

नासिख़ और मंसूख़ क्या है?

नासिख़ और मंसूख़ शरीयत के आदेशों में विकास का नाम है। मसलन पूर्व के आदेश को लागू करने से रोक देना, बाद में आने वाले किसी आदेश द्वारा उसे बदल देना, मुतलक़ (अनियत) को मुक़ैयद (नियत) करना या मुक़ैयद को मुतलक़ करना। यह आदम -अलैहिस्सलाम- के युग से ही पूर्व की शरीयतों में प्रचलित है। मसलन आदम -अलैहिस्सलाम- के ज़माना में भाई का अपनी सगी बहन से शादी करना जायज़ था, लेकिन बाद की सारी शरीयतों में नाजायज़ हो गया। इसी प्रकार इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- एवं उनके पहले की सभी शरीयतों में शनिवार के दिन काम करना सही था, फिर मूसा -अलैहिस्सलाम- की शरीयत में यह बुरा हो गया। अल्लाह तआला ने बनी इसराईल की बछड़े की इबादत के बाद उन्हें अपने आपकी हत्या करने का आदेश दिया, फिर बाद में उनसे इस आदेश को निरस्त कर दिया। इसके अलावा भी बहुत सारे उदाहरण हैं। एक आदेश को दूसरे आदेश से बदल देना एक ही शरीयत में या दो शरीयतों के बीच होता रहा है, जैसा कि हमने पिछले उदाहरणों में बयान किया।
उहारण स्वरूप, एक डॉक्टर अपने रोगी का एक विशिष्ट दवा द्वारा इलाज करना शुरू करता है और समय के साथ अपने रोगी के इलाज में क्रमशः दवा की ख़ुराक को बढ़ाता या घटाता जाता है। हम उसे हकीम मानते हैं, जबकि अल्लाह के लिए उच्च उदाहरण हैं। इस्लामी आदेशों में नासिख़ तथा मंसूख़ का पाया जाना, दरअसल महान रचनाकार की हिकमत में से है।

अबू बक्र के समयकाल में क़ुरआन को जमा करने एवं उसमान के दौर में उसे जलाने की क्या कहानी है?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुरआन को अपने विभिन्न साथियों के हाथ में विश्वस्त एवं संकलित रूप में छोड़ा, ताकि उसे पढ़ा और दूसरों को पढ़ाया जा सके। फिर जब अबू बक्र -रज़ियल्लाहु अन्हु- ख़लीफ़ा बने, तो उन्होंने इन बिखरे हुए सहीफ़ों को एक स्थान में जमा करने का आदेश दिया, ताकि उसको स्रोत (reference) के रूप में प्रयोग किया जा सके। फिर जब उसमान -रज़ियल्लाहु अन्हु- का समय आया, तो उन्होंने विभिन्न शहरों में सहाबा के हाथों में विभिन्न शैलियों में मौजूद क़ुरआन की कॉपियों एवं सहीफ़ों को जलाने का आदेश दिया और उनके पास नई कॉपी, जो रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की छोड़ी हुई एवं अबू बक्र के द्वारा जमा की हुई असली कॉपी के अनुरूप थी, उसको भेज दिया। ताकि इस बात की गारंटी रहे कि सभी शहर रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के द्वारा छोड़ी गई एक मात्र असली कॉपी को स्रोत के रूप में इसतेमाल कर रहे हैं।
क़ुरआन बिना किसी बदलाव या परिवर्तन के वैसे ही बना रहा। वह हर ज़माना में हमेशा मुसलमानों के साथ रहा। वे उसको आपस में आदान-प्रदान करते रहे और नमाज़ों में पढ़ते रहे।

क्या क़ुरआन प्रयोगात्मक विज्ञान से टकराता है?

इस्लाम प्रयोगात्मक विज्ञान के विरुद्ध नहीं है। वास्तव में, कई पश्चिमी विद्वान जो अल्लाह में विश्वास नहीं रखते, अपनी वैज्ञानिक खोजों के माध्यम से सृष्टिकर्ता के अस्तित्व की अनिवार्यता तक पहुंच चुके हैं। इस्लाम अक़्ल और विचार के तर्क को प्रधानता देता है और ब्रह्मांड में सोच-विचार करने को कहता है। इस्लाम सभी मनुष्यों को अल्लाह की निशानियों और उसकी सृष्टि की अद्भुत रचना पर विचार करने, पृथ्वी का भ्रमण करने, ब्रह्मांड पर गौर करने, तर्क का उपयोग करने और विचार और तर्क को लागू करने का आह्वान करता है। बल्कि, वह क्षितिजों और अपने भीतर एक से अधिक बार विचार करने के लिए कहता है। ऐसा करने से इनसान निश्चित रूप से उन उत्तरों को पा लेगा, जिनकी वह तलाश कर रहा है। वह सृष्टिकर्ता के अस्तित्व पर ज़रूर विश्वास करने लगेगा, वह पूर्ण विश्वास और निश्चितता तक पहुंच जाएगा कि इस ब्रह्मांड को ध्यान, इरादे तथा एक लक्ष्य के साथ बनाया गया है। इस तरह वह अंततः उस निष्कर्ष पर पहुंचेगा, जिसका इस्लाम आह्वान करता है कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"जिसने ऊपर-तले सात आकाश बनाए। तुम अत्यंत दयावान् की रचना में कोई असंगति नहीं देखोगे। फिर पुनः देखो, क्या तुम्हें कोई दरार दिखाई देता है? फिर बार-बार निगाह दौड़ाओ। निगाह असफल होकर तुम्हारी ओर पलट आएगी और वह थकी हुई होगी।" [127] [सूरा अल-मुल्क : 3,4] "शीघ्र ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उनके भीतर दिखाएँगे, यहाँ तक कि उनके लिए स्पष्ट हो जाए कि निश्चय यही सत्य है।[19] और क्या आपका पालनहार प्रयाप्त नहीं इस बात के लिए कि निःसंदेह वह चीज़ पर गवाह है?" [128] [सूरा फ़ुस्सिलत : 53] "निःसंदेह आकाशों और धरती की रचना तथा रात और दिन के बदलने में, तथा उन नावों में जो लोगों को लाभ देने वाली चीज़ें लेकर सागरों में चलती हैं, और उस पानी में जो जो अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवित कर दिया और उसमें हर प्रकार के जानवर फैला दिए, तथा हवाओं को फेरने (बदलने) में और उस बादल में, जो आकाश और धरती के बीच वशीभूत किया हुआ है, (इन सब चीज़ों में) उन लोगों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं, जो समझ-बूझ रखते हैं।" [129] [सूरा अल-बक़रा : 164] "और उसने तुम्हारे लिए रात्रि तथा दिन को सेवा में लगा रखा है तथा सूर्य और चाँद को, और (हाँ) सितारे उसके आदेश के अधीन हैं। वास्तव में, इसमें कई निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिए, जो समझ-बूझ रखते हैं।" [130] [सूरा अन-नहल : 12] "तथा आकाश को हमने बनाया है हाथों से और हम निश्चय विस्तार करने वाले हैं।" [131] [सूरा अल-ज़ारियात : 47] "क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से कुछ पानी उतारा। फिर उसे स्रोतों के रूप में धरती में चलाया। फिर वह उसके साथ विभिन्न रंगों की खेती निकालता है। फिर वह सूख जाती है, तो तुम उसे पीली देखते हो। फिर वह उसे चूरा-चूरा कर देता है। निःसंदेह इसमें

बुद्धि वालों के लिए निश्चय बड़ी सीख है।" [132] [सूरा अल-ज़ुमर: 21] आधुनिक विज्ञान द्वारा खोजे गए जल चक्र का वर्णन 500 साल पहले किया गया था। इससे पहले, लोगों का मानना था कि पानी समुद्र से आता है और भूमि में प्रवेश करता है और इस प्रकार झरने और भूजल का निर्माण होता है। यह भी माना जाता था कि मिट्टी में नमी संघनित होकर पानी बनाती है। जबकि 1400 साल पहले क़ुरआन में साफ तौर पर बताया गया है कि पानी कैसे बनता है। "क्या जिन लोगों ने कुफ़्र किया यह नहीं देखा कि आकाश और धरती दोनों मिले हुए थे, फिर हमने दोनों को अलग-अलग कर दिया, तथा हमने पानी से हर जीवित चीज़ को बनाया? तो क्या ये लोग ईमान नहीं लाते?" [133] [सूरा अल-अंबिया: 30] केवल आधुनिक विज्ञान ही यह पता लगाने में सक्षम हुआ है कि जीवन पानी से बना है और पहली कोशिका का मुख्य घटक पानी है। यह जानकारी गैर-मुस्लिमों को नहीं थी। इसी तरह पादप दुनिया में संतुलन के बारे में भी उनको पता नहीं था। परन्तु क़ुरआन ने इसको बयान कर दिया, ताकि यह प्रमाणित हो कि मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अपनी इच्छा से कुछ नहीं बोलते थे। "और निःसंदेह हमने मनुष्य को तुच्छ मिट्टी के एक सार से पैदा किया। फिर हमने उसे वीर्य बनाकर एक सुरक्षित स्थान में रखा। फिर हमने उस वीर्य को एक जमा हुआ रक्त बनाया, फिर हमने उस जमे हुए रक्त को एक बोटी बनाया, फिर हमने उस बोटी को हड्डियाँ बनाया, फिर हमने उन हड्डियों को कुछ माँस पहनाया, फिर हमने उसे एक अन्य रूप में पैदा कर दिया। तो बहुत बरकत वाला है अल्लाह, जो बनाने वालों में सबसे अच्छा है।" [134] [सूरा अल-मोमिनून : 12-14] कनाडा के वैज्ञानिक कीथ मूर को दुनिया के सबसे प्रमुख शरीर रचना विज्ञानियों और भ्रूणविज्ञानियों में से एक माना जाता है। उन्होंने कई विश्वविद्यालयों की कई विशिष्ट वैज्ञानिक यात्राएं की हैं और कई अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों की अध्यक्षता की है, जैसे कनाडा और अमेरिका में शरीर रचना विज्ञानियों और भ्रूणविज्ञानियों का संगठन और बायोसाइंसेज संघ की परिषद। उन्हें कनाडा की रॉयल मेडिकल सोसाइटी, इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ साइटोलॉजी, अमेरिकन फेडरेशन ऑफ फिजिशियन ऑफ एनाटॉमी और फेडरेशन ऑफ अमेरिका इन एनाटॉमी का सदस्य भी चुना गया था। कीथ मूर ने 1980 में पवित्र क़ुरआन और भ्रूण के निर्माण से संबंधित उसकी आयतों -जो सभी आधुनिक विज्ञानों से पहले आई थीं- को पढ़ने के बाद इस्लाम ग्रहण करने की घोषणा की। वह इस्लाम ग्रहण करने की अपनी कहानी बयान करते हुए कहते हैं : मुझे वैज्ञानिक चमत्कारों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था, जो सत्तर के दशक के अंत में मास्को में आयोजित किया गया था। कुछ मुस्लिम विद्वानों के ब्रह्मांड से संबंधित आयतों और विशेष रूप से अल्लाह तआला की इस आयत "वह आकाश से धरती तक, सारे मामलों का प्रबंधन करता है। फिर वह काम एक ऐसे दिन में उसकी तरफ चढ़ जाता है, जिसका अनुमान तुम्हारी गिनती के एक हज़ार साल के बराबर है।" [सूरा अल-सजदा : 5] के अध्ययन के दौरान, मुस्लिम विद्वानों ने दूसरी आयतों को भी बयान करना जारी रखा, जिनमें भ्रूण और मानव के गठन के बारे में बात की गई थी। क़ुरआन की अन्य आयतों को जानने और अधिक व्यापक रूप से सीखने में मेरी गहरी रुचि के कारण, मैंने ध्यान देकर सुनना जारी रखा। उन आयतों में सभी के लिए मजबूत जवाब थे और मुझपर उनका एक विशेष प्रभाव पड़ा। मुझे लगने लगा कि यही वह चीज़ है, जिसे मैं चाहता हूं और कई वर्षों से प्रयोगशालाओं और अनुसंधान के माध्यम से और आधुनिक तकनीक का उपयोग कर खोज रहा हूं। परन्तु क़ुरआन इसे तकनीक और विज्ञान से पहले ही व्यापक और पूर्ण रूप से लाया है। "ऐ लोगो! यदि तुम (मरणोपरांत) उठाए जाने के बारे में किसी संदेह में हो, तो निःसंदेह हमने तुम्हें तुच्छ मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य की एक बूँद से, फिर रक्त के थक्के से, फिर माँस की एक बोटी से, जो चित्रित तथा चित्र विहीन होती है, ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी शक्ति को) स्पष्ट कर दें, और हम जिसे चाहते हैं गर्भाशयों में एक नियत समय तक ठहराए रखते हैं, फिर हम तुम्हें एक शिशु के रूप में निकालते हैं, फिर ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो, और तुममें से कोई वह है जो उठा लिया जाता है, और तुममें से कोई वह है जो जीर्ण आयु की ओर लौटाया जाता है, ताकि वह जानने के बाद कुछ न जाने। तथा तुम धरती को सूखी (मृत) देखते हो, फिर जब हम उसपर पानी उतारते हैं, तो वह लहलहाती है और उभरती है तथा हर प्रकार की सुदृश्य वनस्पतियाँ उगाती है।" [135] [सूरा अल-हज्ज: 5] भ्रूण के विकास का यह सटीक चक्र है, जैसा कि आधुनिक विज्ञान ने पता लगाया है।

अंतिम नबी :

नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- कौन हैं और उनके संदेश की सच्चाई का क्या प्रमाण है?

नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिबब बिन हाशिम, अरब के क़बीला क़ुरैश से हैं, जो मक्का में रहता था। आप इस्माईल बिन इब्राहीम -उन दोनों पर अल्लाह की शांति हो- की नस्ल से थे।

जैसा कि ओल्ड टेस्टामेंट में उल्लेख किया गया है, अल्लाह ने इस्माईल को आशीर्वाद देने और उनके वंश से एक महान समुदाय को निकालने का वादा किया था।

"इस्माईल के विषय में मैंने तेरी सुन ली। देख, मैं उसको आशीष दूंगा, उसे प्रदान करूँगा, और बहुत बढ़ाऊंगा, बारह हाकिम, वह जनेगा, और मैं उससे एक बड़ी जाति बनाऊंगा।" [136] ओल्ड टेस्टामेंट, उत्पत्ति पुस्तक 17:20 यह सबसे बड़ा प्रमाण है कि इस्माईल, इब्राहीम -उन दोनों पर अल्लाह की शांति हो- के वैध पुत्र थे। ओल्ड टेस्टामेंट, उत्पत्ति पुस्तक 16:11 "और रब के दूत ने उससे कहा : सुन, तू गर्भवती है, और तेरे यहाँ एक पुत्र होगा, और उसका नाम इस्माईल रखना, क्योंकि रब ने तेरी विनय को सुन लिया है।" [137] ओल्ड टेस्टामेंट, उत्पत्ति पुस्तक 16:3

"इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- की पत्नी सारा ने अपनी मिस्री दासी हाजरा को कनान की भुमि में इब्राहीम के दस साल के निवास के बाद लिया, और उसे इब्राहीम को पत्नी के रूप में प्रदान किया।" [138]

मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- मक्का में पैदा हुए, उनके पैदा होने से पहले उनके पिता की मृत्यु हो गई थी। बचपन में ही आपकी माँ भी चल बसीं, तो आपके दादा ने आपकी देखभाल की। फिर आपके दादा भी चल बसे, तो आपके चचा अबू तालिब ने आपको संभाला। आप अपनी सच्चाई एवं अमानतदारी में प्रसिद्ध थे। आप जाहिलियत के लोगों के साथ न बैठते थे। न उनके साथ मनोरंजन और खेल में और न नृत्य तथा गायन में या शराब पीने में शामिल होते थे और न ही इन कामों के करीब जाते थे। फिर नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- इबादत करने के लिए मक्का के निकट एक पहाड़ में (हिरा गुफा) जाने

लगे। इसी स्थान पर आपपर पहली वह्य (अल्लाह का संदेश) आयी। महान एवं उच्च अल्लाह की ओर से एक फ़रिश्ता आया और आपसे कहा : पढ़, पढ़। नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे। आपने फरमाया : मैं पढ़ना नहीं जानता हूँ। फ़रिश्ते ने दोबारा आग्रह किया। आपने फरि कहा : मैं पढ़ना नहीं जानता हूँ। फ़रिश्ता ने एक बार और आग्रह किया और आपको अपने साथ पकड़ कर इस तरह भींचा कि आपकी हड्डी पसली एक हो गई और फिर कहा : पढ़। आपने फिर कहा : मैं पढ़ना नहीं जानता हूँ। तीसरी बार उन्होंने कहा : "अपने पालनहार के नाम से पढ़, जिसने पैदा किया। जिसने मनुष्य को रक्त को लोथड़े से पैदा किया। पढ़, और तेरा पालनहार बड़ा दयालु है। जिसने लेखनी के द्वारा ज्ञान सिखाया। इन्सान को उसका ज्ञान दिया जिसको वह नहीं जानता था।" [139] आपकी नबूवत का प्रमाण :
[सूरा अल-अलक़ : 1-5]
इसे हम आपकी जीविनी में पाते हैं। आप एक सच्चे एवं अमानतदार व्यक्ति के तौर पर जाने जाते थे। अल्लाह तआला ने कहा है :
"इससे पहले तो आप कोई किताब पढ़ते न थे और न किसी किताब को अपने हाथ से लिखते थे कि यह बातिल की पूजा करने वाले लोग शक में पड़ें।" [140] [सूरा अल-अनकबूत : 48] रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- जिस बात का आह्वान करते, सबसे पहले उसे अपने आप पर लागू करते। आपके काम आपकी बातों की पुष्टि करते। आप अपने आह्वान के लिए कभी भी दुनिया में बदला नहीं चाहते थे। आपने गरीब, उदार, दयालु और विनम्र होकर जीवन बिताया। आप सबसे अधिक बलिदान देने वाले एवं लोगों के पास जो कुछ है, उसके बारे सबसे अधिक विमुख होकर रहे। अल्लाह तआला ने कहा है : "यही वे लोग हैं, जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन प्रदान किया, तो आप उनके मार्गदर्शन का अनुसरण करें। आप कह दें : मैं इस (कार्य) पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता। यह तो सारे संसारों के लिए एक उपदेश के सिवा कुछ नहीं।" [141] [सूरा अल-अनआम : 90]
आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने अपनी नबूवत की सच्चाई पर क़ुरआन द्वारा प्रमाण पेश किए, जो क़ुरआन उन्हीं की भाषा में था और जो बयान एवं वाक्पटुता के शीर्ष पर था, जो उसे मानव की रचना से उपर करती है। अल्लाह तआला ने कहा है :
"क्या वे क़ुरआन पर विचार नहीं करते? यदि वह (क़ुरआन) अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता, तो वे उसमें बहुत अधिक विरोधाभास पाते।" [142] [सूरा अल-निसा : 82] "बल्कि क्या वे कहते हैं कि उसने इस (क़ुरआन) को स्वयं गढ़ लिया है? आप कह दें कि इस जैसी गढ़ी हुई दस सूरतें ले आओ और अल्लाह के सिवा, जिसे बुला सकते हो, बुला लो, यदि तुम सच्चे हो।" [143] [सूरा हूद : 13] "फिर यदि वे आपकी माँग पूरी न करें, तो आप जान लें कि वे केवल अपनी इच्छाओं का पालन कर रहे हैं, और उससे बढ़कर पथभ्रष्ट कौन है, जो अल्लाह की ओर से किसी मार्गदर्शन के बिना अपनी इच्छा का पालन करे? निःसंदेह अल्लाह अत्याचार करने वाले लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।" [144] [सूरा अल-क़सस : 50]
जब मदीने में कुछ लोगों के यहाँ यह बात आम हो गई कि सूरज ग्रहण नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के बेटे इब्राहीम की मौत के कारण लगा है, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक भाषण दिया और एक ऐसी बात कही, जो आज तक सूरज ग्रहण के संबंध में लोगों के बीच प्रचलित अंधविश्वासों का खंडण करती है। इसे आपने चौदह शताब्दियों से भी पहले स्पष्ट और साफ़ रूप से कहा था :
"सूर्य एवं चाँद अल्लाह की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं। उनका ग्रहण किसी के मरने या पैदा होने से नहीं होता। अतः जब तुम लोग ऐसा होते देखो, तो अल्लाह को याद करो और नमाज़ पढ़ो।" [145] [सहीह बुख़ारी]
यदि नबी झूठे होते, तो अनिवार्य रूप से अपने संदेशवाहक होने की बात लोगों को मनवाने के लिए इस अवसर का लाभ उठाते। उनकी नबूवत का एक प्रमाण ओल्ड टेस्टामेंट में उनके नाम एवं गुणों का उल्लेख भी है।
"एक पढ़ना न जानने वाले व्यक्ति को किताब दी जाएगी और उससे कहा जाएगा कि इसे पढ़ो, तो वह कहेगा : मैं पढ़ना नहीं जानता हूँ।" [146] [ओल्ड टेस्टामेंट, यशायाह (Isaiah) की किताब 29:12] मुसलमान इस बात पर विश्वास नहीं रखते कि वर्तमान में मौजूद ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट अल्लाह की तरफ से हैं, क्योंकि उनमें बदलाव हो चुके हैं। परन्तु वे इस बात पर विश्वास रखते हैं कि उन दोनों का स्रोत सही है। दोनों दरअसल तौरात और इंजील हैं, (जिन्हें अल्लाह ने अपने नबियों मूसा एवं ईसा -उन दोनों पर अल्लाह की शांति हो- की ओर वह्यी की थी।। इसलिए ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट में कुछ चीज़ें पाई जाती हैं, जो अल्लाह की ओर से हो सकती हैं। अतः मुसलमान मानते हैं कि यदि यह भविष्यवाणी सही है, तो यह नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के बारे में बताती है और यह सही तौरेत के अवशेषों में से है।
पैगंबर मुहम्मद जिस संदेश की ओर बुलाते थे, वह शुद्ध विश्वास है। वह दरअसल (एक पूज्य पर ईमान और केवल उसी की इबादत करना) है। आपसे पूर्व के सभी नबियों का यही संदेश था, जिसे आप सभी इनसानों के लिए लाए थे, जैसा कि क़ुरआन में आया है :
"(हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि हे मानव जाति के लोगो! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जिसके लिए आकाश तथा धरती का राज्य है। कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही, जो जीवन देता तथा मारता है। अतः अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके उस उम्मी नबी पर, जो अल्लाह पर और उसकी सभी (आदि) पुस्तकों पर ईमान रखते हैं और उनका अनुसरण करो, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।" [147] [सूरा अल-आराफ़ : 158]
मसीह को पृथ्वी पर किसी ने उतना सम्मान नहीं दिया, जितना सम्मान मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- ने उन्हें दिया।
अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "मैं मरयम के बेटे ईसा का लोगों में सबसे निकटमत व्यक्ति हूँ। लोगों ने प्रश्न किया : हे अल्लाह के रसूल! वह कैसे? तो आपने फरमाया : सभी नबी भाई हैं, जैसे एक बाप और विभिन्न माँओं की संतान। उनका धर्म एक है। हमारे बीच कोई और नबी नहीं था (ईसा एवं मेरे बीच)।" (सहीह मुस्लिम)
क़ुरआन में नबी मुहम्मद से ईसा -उन दोनों पर अल्लाह की शांति हो- का अधिक बार उल्लेख (4 बार की तुलना में 25 बार) हुआ है।
क़ुरआन के अनुसार ईसा की माँ मरयम को संसार की दूसरी महिलाओं पर श्रेष्ठता दी गई है।
इसी तरह मरयम वह अकेली महिला हैं, जिनके नाम का क़ुरआन में उल्लेख हुआ है।

क़ुरआन में मरयम के नाम से एक पूरी सूरत मौजूद है। "ऐन अला-अल-हक़ीक़ह" फ़ातिन सब्री, www.fatensabri.com
यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई का सबसे बड़ा प्रमाण है। यदि आप झूठे नबी होते तो आपकी पत्नियों, माँ-बाप या बच्चों का उल्लेख होता। यदि आप झूठे नबी होते तो आप ईसा -अलैहिस्सलाम- की महिमा नहीं करते और उनपर ईमान को मुसलमान के ईमान का एक स्तम्भ घोषित नहीं करते।
नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- एवं हमारे समय के किसी भी संत या पुरोहित के बीच एक हल्की सी तुलना हमें आप -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की सच्चाई का पता देती है। आपने पैसे, प्रतिष्ठा या यहाँ तक कि किसी भी पुरोहित पद से मिलने वाले सभी विशेषाधिकारों को अस्वीकार कर दिया। आपने एतराफ़ को नहीं सुना और न विश्वासियों के पापों को क्षमा कर देने का दावा किया। आपने सीधे सृष्टिकर्ता की ओर लौटने की बात कही।
आपकी नुबवत की सच्चाई के सबसे बड़े प्रमाणों में से एक आपकी दावत का चारों दिशा में फैल जाना, लोगों का उसको स्वीकार करना और उसे अल्लाह की मदद प्राप्त होना है। अल्लाह ने मानव इतिहास में कभी नबी होने का झूठा दावा करने वाले किसी व्यक्ति को सफलता प्रदान नहीं की है।
अंग्रेजी दार्शनिक थॉमस कार्लाइल (1881-1795) ने कहा है: "इस युग के किसी भी सभ्य व्यक्ति के लिए यह सबसे बड़ी शर्म की बात है कि वह कुछ लोगों की कही हुई इस बात को सुने कि इस्लाम एक झूठा धर्म है और मुहम्मद एक धोखेबाज़ हैं। हमें ऐसी बेवक़ूफ़ाना और शर्मनाक बातों तथा अफवाहों के विरुद्ध लड़ना चाहिए। क्योंकि उस दूत ने जो संदेश दिया, वह हम जैसे लगभग दो सौ मिलियन लोगों के लिए बारह शताब्दियों से प्रकाशमान दीपक है। उनको उसी अल्लाह ने पैदा किया है, जिसने हमें पैदा किया है। मेरे भाइयो! क्या आपने कभी देखा है कि एक झूठ बोलने वाला आदमी धर्म बना सकता है और फैला भी सकता है? अल्लाह की शपथ! यह आश्चर्यजनक है। झूठा आदमी ईंटों का एक घर नहीं बना सकता है, यदि वह चूने, प्लास्टर, मिट्टी आदि के गुणों से अवगत नहीं है। वह जो भी घर बनाएगा वह मलबे का ढेर और सामग्री के मिश्रण का टीला होगा। वह अपनी नींव पर बारह शताब्दियों तक रहने योग्य नहीं होगा, जिसमें दो सौ मिलियन लोगों का निवास हो। वह ढह जाएगा और इस तरह नेस्तनाबूद हो जाएगा, जैसे था ही नहीं।" [150] पुस्तक "अल-अब्ताल"

यह कैसे संभव हुआ कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक ही रात में यरुशलम गए, फिर आसमानों की सैर की और उसी रात वापस भी आ गए?

मानव प्रौद्योगिकी ने एक ही क्षण में दुनिया के सभी हिस्सों में मानव आवाज और छवियों को पहुँचा दिया, तो क्या 1400 साल से अधिक पहले मानव जाति के सृष्टिकर्ता के लिए आत्मा और शरीर के साथ अपने पैगंबर को आसमान तक ले जाना संभव नहीं है? नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने जिस जानवर की सवारी की थी, उसका नाम बुराक़ है। बुराक़ एक लंबे और सफ़ेद जानवर का नाम है, जो गधे से बड़ा एवं ख़च्चर से छोटा होता है। जो (इतनी तेज़ छलांग लगाता है कि) अपनी दृष्टि की सीमा पर क़दम रखता है। उसकी एक लगाम एवं एक ज़ीन (काठी) होती है। अंबिया -उन सब पर अल्लाह की शांति हो- उसकी सवारी करते हैं। (यह बुख़ारी एवं मुस्लिम का वर्णन है)
"इसरा एवं मेराज" का सफर अल्लाह की सम्पूर्ण क्षमता एवं उसके इरादे से हुआ है, जो हमारी सोच से ऊपर एवं हमारी जानकारी के सभी क़ानूनों से भिन्न है। यह सारे संसारों के रब की क़ुदरत के प्रमाणों एवं निशानियों में से एक है, क्योंकि उसी ने इन कानूनों को बनाया है।

नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने आयशा से शादी क्यों की, जबकि वह छोटी उमर की थीं?

हम सहीह बुख़ारी (जो हदीस की सबसे प्रामाणिक पुस्तक है) में रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के लिए आयशा -अल्लाह उनसे राज़ी हो- की गहरी मुहब्बत की बात पाते हैं और देखते हैं कि उन्होंने इस शादी की कभी शिकायत नहीं की।
आश्चर्य है कि उस समय रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के दुश्मनों ने आप पर सबसे घटिया आरोप लगाए। आपको कवि कहा, पागल कहा, परन्तु उन्होंने इस बाबत आपपर लांछन नहीं लगाया और न इसका किसी ने उल्लेख किया। मगर इस समय के कुछ स्वार्थी लोगों की तरफ से यह मुद्दा उठाया गया है। यह मामला या तो उन प्राकृतिक चीजों में से एक है, जो उस समय लोगों में आम थीं, जैसा कि छोटी उमर में बादशाहों की शादी की कहानियाँ हमें इतिहास के पन्नों में मिल जाती हैं। ईसाई धर्म में मरयम की उम्र का उदाहरण ले लें। ईसा के उनके गर्भ में आने से पूर्व लगभग नव्वे साल के एक पुरूष की तरफ से उन्हें शादी का पैग़ाम भेजा गया था। उस समय मरयम की उमर रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- से आयशा की शादी के समय आइशा की की उम्र के आसपास ही थी। या 11वीं शताब्दी में इंग्लैंड की रानी इसाबेला की कहानी की ले लें, जिन्होंने आठ साल की उमर में शादी कर ली। इसके और भी दुसरे उदाहरण मौजद हैं। या फिर पैगंबर की शादी की कहानी वैसी नहीं है, जैसी कि लोग कल्पना करते हैं। क्या बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों के हत्याकांड तथा लूटमार एवं हत्या आदि के दंड को अमानवीय न समझा जाए?

http://muslimvilla.smfforfree.com/index.php...https://liguopedia.wordpress.com/.../19/agnes-de-france/...

बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों ने वचन तोड़ा था और मुसलमानों को ख़त्म करने के लिए बहुदेववादियों का साथ दिया था। चुनांचे उनके इस षडयंत्र ने उन्हीं को नष्ट कर दिया, जब उनको धोखे एवं वचन तोड़ने का प्रतिफल दिया गया। वह भी बिल्कुल उनकी शरीयत ही के अनुसार। अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने उनको विकल्प दिया था कि वे अपने बारे में निर्णय लेने के लिए जिसको चाहें, चुन लें। चुनांचे उन्होंने आपके एक साथी को चुना था, जिन्होंने उनकी शरीयत के अनुसार किसास (बदले) का निर्णय दिया था। [153] [तारीख़-ए-इस्लाम : 2/307-318] आज संयुक्त राष्ट्र के क़ानूनों में देशद्रोहियों और गदर

करने वालों की सज़ा क्या है? केवल कल्पना कीजिए कि लोगों के एक समूह ने आपको तथा आपके पूरे परिवार को मार डालने और आपका धन छीन लेने का निश्चय कर लिया हो, तो आप उनके साथ क्या करेंगे? बनू कुरैज़ा के यहूदियों ने वचन तोड़ा और मुसलमानों को ख़त्म करने के लिए बहुदेववादियों के साथ खड़े हो गए। उस समय मुसलमानों को अपनी रक्षा के लिए क्या करना चाहिए था? मुसलमानों ने इस संबंध में जो किया, वह तर्कसम्मत था। उन्हें अपना बचाव करने का अधिकार था।

जब धर्म में कोई ज़बरदस्ती नहीं है, तो अल्लाह क्यों कहता है कि जो अल्लाह को नहीं मानते, उनसे लड़ाई करो?

पहली आयत : "धर्म में कोई ज़बरदस्ती नहीं है। सत्य असत्य से स्पष्ट हो चुका है।" [154] यह आयत एक महान इस्लामी नियम को स्थापित करती है। वह नियम यह है कि धर्म के मामले में ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है। जबकि दूसरी आयत है : "उन लोगों से जिहाद करो, जो अल्लाह एवं आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते।" [155] इस आयत का एक विशेष परिप्रेक्ष्य है। यह आयत उन लोगों के बारे में है, जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं एवं दूसरों को इस्लाम स्वीकार करने से मना करते हैं। इस तरह देखें तो दोनों आयतों के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। [सूरा अल-बक़रा : 256] [सूरा अल-तौबा : 29]

इस्लाम में, इस्लाम छोड़ देने वाले की हत्या क्यों की जाती है?

ईमान बन्दा एवं उसके रब के बीच के रिश्ते को कहते हैं। जिसने उसे काटना चाहा, उसका मामला अल्लाह के हवाले है। मगर जो इसका एलान करना चाहता है और इसे इस्लाम से लड़ने, उसके चेहरे को बिगाड़ने या उसके साथ विश्वासघात करने के ज़रिया के तौर पर लेना चाहता है, खुद मानव निर्मित जंगी क़ानूनों के अनुसार भी उसकी हत्या अनिवार्य है। इससे कोई असहमत नहीं है।

इस्लाम से फिर जाने की सज़ा के हवाले से संदेह की समस्या की जड़ संदेह करने वालों का यह मानना है कि सभी धर्म सही हैं। उनका मानना है कि सृष्टिकर्ता पर ईमान, एकमात्र उसी की इबादत करना एवं उसे हर दोष और कमी से पवित्र समझना, उसके अस्तित्व के इंकार और इस विश्वास के बराबर है कि वह मनुष्य या पत्थर के आकार में प्रकट होता है या उसकी औलाद है। जबकि अल्लाह इन सब चीज़ों से बहुत ऊँचा एवं पाक है। इस भ्रम का कारण कुछ लोगों का यह विश्वास है कि सभी धर्म सत्य पर हो सकते हैं। हालाँकि तर्क की वर्णमाला जानने वाले किसी भी व्यक्ति को यह बात हज़म नहीं हो सकती है। यह स्वतः स्पष्ट है कि ईमान नास्तिक्ता एवं कुफ़्र का उल्टा है। इसलिए सही आस्था रखने वाला व्यक्ति पाता है कि सत्य को सापेक्ष कहना तार्किक लापरवाही और मूर्खता है। इस तरह, दो आपस में विरोधी आस्थाओं को सत्य मानना सही नहीं है।

इन तमाम तथ्यों के अलावा मुर्तद (इस्लाम से फिर जाने वाले) कभी भी सज़ा के हक़दार नहीं ठहरेंगे, यदि वे इसका (रिद्दत का) एलान न करें। वे इस बात को अच्छी तरह जानते भी हैं। परन्तु वे मुस्लिम समाज से माँग करते हैं कि वह बिना किसी रोक-टोक के उनके लिए अल्लाह एवं उसके रसूल के साथ उपहास का दरवाज़ा खोल दें, ताकि वे दूसरों को भी कुफ़्र एवं अवज्ञा पर प्रोत्साहित कर सकें। उदाहरण स्वरूप कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिनको पृथ्वी का कोई भी राजा अपने राज्य की भूमि पर स्वीकार नहीं करता है। मसलन यह कि उसकी प्रजा का कोई व्यक्ति राजा के अस्तित्व को नकारे, उसका या उसके किसी दल का उपहास करे या उसको ऐसे दोष से दोषित करे, जो राजा के तौर पर उसकी स्थिति के योग्य नहीं है। तो राजाओं के राजा के बारे में आप क्या कहोगे, जो हर चीज़ का निर्माता तथा मालिक है?

कुछ लोग यह सोचते हैं कि जब मुसलमान कुफ़्र करे, तो तुरंत उसपर सज़ा लागू की जाती है। जबकि सही बात यह है कि कुछ कारण होते हैं जो असल में उसको काफ़िर क़रार देने के रास्ते में रुकावट बनते हैं, जैसा कि अज्ञानता, ग़लत व्याख्या, मजबूरी या भूल आदि। इसी लिए अधिकांश विद्वानों ने मुर्तद को तौबा करवाने की पुष्टि की है, क्योंकि हो सकता है कि उसे सत्य को समझने में भ्रम हुआ हो। लेकिन उस मुर्तद को तौबा का अवसर नहीं दिया जाएगा, जो युद्ध पर उतर आए। [156]
इब्न-ए-क़ुदामा "अल-मुग़नी" में।

मुसलमान मुनाफ़िक़ों (जो कुफ़्र को सीने में छुपाए रखते थे और मुसलमान होने का दिखावा करते थे) के साथ मुसलमान जैसा ही व्यवहार करते थे। उनके मुसलमान जैसे ही अधिकार थे। हालाँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन लोगों को जानते थे और अपने सहाबी हुज़ैफ़ा को उनके नाम भी बता दिए थे। ऐसा इसलिए कि उन मुनाफ़िक़ों ने अपने कुफ़्र का एलान नहीं किया था।

ईसा -अलैहिस्सलाम- ने अपने शत्रुओं से लड़ाई नहीं की, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्यों की?

पैगंबर मूसा एक योद्ध थे और दाऊद भी एक योद्धा थे। मूसा और मुहम्मद ने, उन दोनों पर अल्लाह की शांति हो, राजनीतिक और सांसारिक मामलों की बागडोर संभाली और दोनों ने बुतपरस्त समुदाय से हिजरत की। मूसा -अलैहिस्सलाम- अपने समुदाय के साथ मिस्र से निकल गए और मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने यसरिब (मदीना) की ओर प्रवास किया। इससे पहले भी आपके अनुयायियों ने हब्शा की ओर हिजरत की थी। ऐसा उन देशों के राजनीतिक और सैन्य प्रभाव से बचने के लिए किया गया था, जहां से वे अपने धर्म के साथ निकल गए थे। इसमें और मसीह -अलैहिस्सलाम- के आह्वान के बीच का अंतर यह था कि मसीह -अलैहिस्सलाम- का आह्वान गैर-बुतपरस्त लोगों के लिए था। अर्थात् यहूदियों के लिए। जबकि मूसा एवं मुहम्मद जिस माहौल (मिस्र तथा अरब) में काम कर रहे थे, वह बुतपरस्तों का था। इन दोनों जगहों की परिस्थितियाँ कहीं ज़्यादा मुश्किल थीं। मूसा एवं मुहम्मद -उन दोनों पर अल्लाह की शांति हो- के आह्वान से जिस बदलाव की आशा की जाती थी, वह एक आमूलचूल और व्यापक परिवर्तन था। बुतपरस्ती से एकेश्वरवाद की ओर एक विशाल परिवर्तन। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय होने वाले युद्धों में मरने वालों की संख्या हज़ार से अधिक नहीं थी। वह भी अपने आपकी रक्षा करते हुए, आक्रामकता की प्रतिक्रिया में या धर्म की रक्षा में यह जानें गईं। जबकि दूसरे धर्मों में धर्म के नाम पर छेड़ी गई जंगों में मरने वालों की संख्या को देखते हैं, तो वह लाखों तक पहुँचती है।

इसी प्रकार मक्का विजय के दिन मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की दया स्पष्ट रूप से सामने आई, जब आपने कहा : आज रहम करने का दिना है। आपने क़ुरैश की व्यापक माफ़ी का ऐलान किया, जिस क़ुरैश ने मुसलमानों को कष्ट पहुँचाने में कोई कमी नहीं की थी। इस बुराई का बदला भलाई एवं बुरे व्यवहार का प्रतिफल अच्छा व्यवहार से दिया।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"भलाई और बुराई बराबर नहीं हो सकते। आप बुराई को ऐसे तरीक़े से दूर करें जो सर्वोत्तम हो। तो सहसा वह व्यक्ति जिसके और आपके बीच बैर है, ऐसा हो जाएगा मानो वह हार्दिक मित्र है।" [157] [सूरा फ़ुस्सिलत : 34]
धर्मपरायण लोगों के कुछ गुण हैं। अल्लाह तआला ने कहा है :
"(धर्मपरायण लोग वे हैं) जो क्रोध को दबा लेते हैं, लोगों को क्षमा कर देते हैं और अल्लाह भलाई करने वालों को पसंद करता है।" [158] [सूरा आल-ए-इमरान : 134]

सच्चे धर्म का प्रचार :

जिहाद क्या है?

जिहाद का अर्थ है : गुनाहों से बचने के लिए अपनी आत्मा से लड़ना। गर्भावस्था का दर्द सहने के लिए गर्भावस्था में मां का संघर्ष भी जिहाद है। एक छात्र का पढ़ाई में मेहनत करना भी जिहाद है। अपने धन, सम्मान एवं धर्म की रक्षा की प्रयास भी जिहाद है। यहाँ तक कि इबादतों में धैर्य रखना जैसे कि रोज़ा रखना एवं समय पर नमाज़ पढ़ना भी जिहाद के प्रकारों में से माना जाता है।
मालूम हुआ कि जिहाद का अर्थ मासूम एवं संधि के साथ रहने वाले गैर-मुस्लिमों की हत्या करना नहीं है, जैसा कि कुछ लोग समझते हैं।
इस्लाम जीवन का सम्मान करता है। उसकी नज़र में संधि के साथ रहने वाले लोगों और आम शहरियों को मारना सही नहीं है। इसी तरह युद्ध के समय भी संपत्तियों, बच्चों एवं महिलाओं की रक्षा करना वाजिब है। मारे जाने वालों की शक्लों को बिगाड़ना या उनका मुसला करना (हाथ, पैर, नाक, कान काटना या आँख फोड़ना) जायज़ नहीं है। यह इस्लामी चरित्र नहीं है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों से अच्छा व्यवहार करो और उनके साथ न्याय करो, जिन्होंने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध नहीं किया और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। निश्चय अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है। अल्लाह तो तुम्हें केवल उन लोगों से मैत्री रखने से रोकता है, जिन्होंने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध किया तथा तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हें निकालने में एक-दूसरे की सहायता की। और जो उनसे मैत्री करेगा, तो वही लोग अत्याचारी हैं।" [159]
क़ुरआन करीम मसीह और मूसा के समुदायों में से उनके ज़माना के एकेश्वरवादी लोगों की सराहना करता है। "इसी कारण, हमने बनी इसराईल पर लिख दिया कि निःसंदेह जिसने किसी प्राणी की किसी प्राणी के ख़ून (के बदले) अथवा धरती में विद्रोह के बिना हत्या कर दी, तो मानो उसने सारे इनसानों की हत्या कर दी, और जिसने उसे जीवन प्रदान किया, तो मानो उसने सारे इनसानों को जीवन प्रदान किया। तथा निःसंदेह उनके पास हमारे रसूल स्पष्ट प्रमाण लेकर आए। फिर निःसंदेह उनमें से बहुत से लोग उसके बाद भी धरती में निश्चय सीमा से आगे बढ़ने वाले हैं।" [160] [सूरा अल- माइदा : 32]
गैर-मुस्लिम इन चारों में से एक होगा :
मुस्तामिन यानी सुरक्षा प्राप्त करके रहने वाला : ऐसा ग़ैर-मुस्लिम जिसे सुरक्षा प्रदान की गई हो।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"और यदि मुश्रिकों में से कोई तुमसे शरण माँगे, तो उसे शरण दे दो, यहाँ तक कि वह अल्लाह की वाणी सुने। फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दो। यह इसलिए कि निःसंदेह वे ऐसे लोग हैं, जो ज्ञान नहीं रखते।" [161] [सूरा अल-तौबा : 6]
मुआहद यानी संधि के आधार पर रहने वाला : ऐसा ग़ैर-मुस्लिम जिसके साथ मुसलमानों ने लड़ाई न करने की संधि कर रखी हो।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"तो यदि वे अपनी शपथ को अपना वचन देने के पश्चात तोड़ दें, और तुम्हारे धर्म की निंदा करें, तो कुफ़्र के प्रमुखों से युद्ध करो। क्योंकि उनकी शपथों का कोई विश्वास नहीं, ताकि वे (अत्याचार से) रुक जाएँ।" [162] [सूरा अल-तौबा : 12] ज़िम्मी : ज़िम्मा वचन को कहते हैं। ज़िम्मा वाला अर्थात ऐसा गैर-मुस्लि जिसने मुसलमानों से इस बात पर समझौता कर रखा हो कि वह अपने धर्म को मानने एवं शांति एवं सुरक्षा प्राप्त करने के बदले कुछ निर्धारित शर्तों के पालन करने के साथ टैक्स अदा करेगा। यह उनकी क्षमता के अनुसार भुगतान की जाने वाली एक छोटी-सी राशि है, जो केवल सक्षम व्यक्ति से लिया जाता है न कि दूसरों से। सक्षम व्यक्ति से मुराद स्वतंत्र वयस्क पुरुष है। महिलाओं, बच्चों और बुद्धि न रखने वालों को इससे अलग रखा गया है। क़ुरआन में आए हुए शब्द "साग़िरून" का अर्थ है अल्लाह के क़ानून के सामने झुके हुए। जबकि आज जो लाखों लोग टैक्स अदा करते हैं, उसमें सभी सदस्य शामिल होते हैं, राशि भी बहुत बड़ी होती है। यह टैक्स हुकूमत द्वारा उनकी देख-भाल किए जाने के बदले में अदा किया जाता है। लाग इस मानव निर्मित क़ानून के सामने भी झुके हुए हैं।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"(ऐ ईमान वालो!) उन किताब वालों से युद्ध करो, जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न अंतिम दिन (क़ियामत) पर, और न उसे हराम समझते हैं, जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हराम (वर्जित) किया है और न सत्धर्म को अपनाते हैं, यहाँ तक कि वे अपमानित होकर अपने हाथ से जिज़या दें।" [163] [सूरा अत-तौबा : 29]
मुहारिब : ऐसा ग़ैर-मुस्लिम जिसने मुसलमानों के विरूद्ध युद्ध का एलान कर रखा हो। उसके साथ न कोई वचन हो, न उसे ज़िम्मा दिया गया हो और न ही उसे सुरक्षा प्रदान की गई हो। इन्हीं लोगों के बारे अल्लाह तआला ने कहा है :
"हे ईमान वालो! उनसे उस समय तक युद्ध करो, यहाँ तक कि फ़ितना (अत्याचार तथा उपद्रव) समाप्त हो जाए और धर्म पूरा अल्लाह के लिए हो जाए। तो यदि वे (अत्याचार से) रुक जाएँ, तो अल्लाह उनके कर्मों को देख रहा है।" [164] [सूरा

अल-अनफ़ाल : 39] युद्ध करने वाले गिरोह का केवल मुक़ाबला करना है। अल्लाह ने उसकी हत्या का आदेश नहीं दिया है। मुक़ाबला और सामना करने का आदेश दिया है। दोनों बातों में बहुत बड़ा अंतर है। इस आयत क़िताल, जंग में आत्मरक्षा में योद्धा का सामना करने के अर्थ में है। यह बात तमाम मानव निर्मित क़ानूनों में भी मौजूद है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"तथा अल्लाह की राह में उनसे युद्ध करो, जो तुमसे युद्ध करते हों और अत्याचार न करो। अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।" [165] [सूरा अल-बक़रा : 190]
हम अक्सर एकेश्वरवादी गैर-मुस्लिमों से सुनते हैं कि उन्हें विश्वास नहीं था कि धरती पर एक ऐसा धर्म भी है, जो केवल एक अल्लाह के पूज्य होने की बात करता है। उनका मानना है कि मुसलमान मुहम्मद की इबादत करते हैं, ईसाई मसीह की पूजा करते हैं और और बौद्ध बुद्ध की पूजा करते हैं। पृथ्वी पर पाया जाने वाला कोई भी धर्म उनके दिलों छूता नहीं है।
यहां हमारे सामने इस्लामी विजयों का महत्व स्पष्ट होता है, जिनका बहुत-से लोगों द्वारा बेसब्री से इंतजार किया गया था और आज भी किया जा रहा है। उन विजयों का उद्देश्य "धर्म के मामले में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है" के दायरे में एकेश्वरवाद के संदेश को पहुँचा देना हौता है। वह भी इस तरह कि दूसरों का सम्मान बाक़ी रहे और वे अपने धर्म पर बाक़ी रहने और अमन तथा सुरक्षा का उपभोग करने के बदले में हुकूमत के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियाँ अदा करें। जैसा कि मिस्र, स्पेन तथा अन्य बहुत-से देशों को विजय करते समय हुआ।

क्या इस्लाम आत्मघाती हमलों की अनुमति देता है और उनके बदले में जन्नत में हूर मिलने की बात करता है?

यह अतार्किक है कि जीवन देने वाला, जिसे जीवन दिया गया है, उसे आदेश दे कि वह अपना या किसी निर्दोष का जीवन बिना किसी अपराध के ले ले। वह तो कहता है : "अपने आपकी हत्या मत करो।" [166] इसके अलावा और भी आयतें हैं, जो बिना किसी कारण, मसलन क़िसास एवं आत्म रक्षा आदि के, किसी की हत्या से रोकती हैं। केवल हूर प्राप्त करने की संकीर्ण सोच में जन्नत की नेमतों को सीमित नहीं करना चाहिए। जन्नत में ऐसी ऐसी नेमतें हैं, जिन्हें न किसी आँख ने देखा है, जिनके बारे न किसी कान ने सुना है और न जिनका ख़याल किसी मनुष्य के दिल में आया है। [सूरा अन-निसा : 29]
आज के युवाओं का आर्थिक परिस्थितियों से दोचार होना और उन भौतिक चीजों को प्राप्त करने में असमर्थ होना, जो उन्हें शादी करने में मदद करें, उन्हें इन घृणित कृत्यों के प्रचारकों के लिए आसान शिकार बना देता है। खासतौर पर किसी लत के शिकार और मानसिक बीमारी से ग्रस्त लोग। यदि इन घृणित कृत्यों के प्रचारक सच्चे होते, तो नौजवानों को इस मिशन पर भेजने से पहले खुद अपने आपसे इसकी शुरूआत करते।

क्या इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है?

शब्द सैफ़ (तलवार) पवित्र क़ुरआन में एक बार भी नहीं आया है। वो देश जहाँ इस्लामी इतिहास ने जंगें नहीं देखीं, वहीं आज दुनिया के अधिकांश मुसलमान रहते हैं। उदाहरण के तौर पर इंडोनेशिया, भारत और चीन आदि को ले सकते हैं। इस्लाम के तलवार के ज़ोर से न फैलने का प्रमाण मुसलमानों द्वारा जीते गए देशों में आज तक ईसाइयों, हिंदुओं और अन्य लोगों का मौजूद रहना है। जबकि जिन देशों पर गैर-मुस्लिमों ने विनाशकारी युद्धों के द्वारा क़ब्जा किया और लोगों को ज़बरदस्ती अपना धर्म अपनाने पर मजबूर किया, उनमें मुसलमानों की संख्या बहुत कम है। आप सलीबी जंगों का इतिहास उठाकर देख सकते हैं। जिनेवा विश्वविद्यालय के डाइरेक्टर एडौर्ड मोंटे ने एक व्याख्यान में कहा है : "इस्लाम एक तेजी से फैलने वाला धर्म है, जो संगठित केंद्रों द्वारा दिए गए प्रोत्साहन के बिना अपने आप फैल रहा है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि हर मुसलमान स्वभाव से एक मिशनरी है। एक मुसलमान विश्वास में मजबूत होता है और उसके विश्वास की तीव्रता उसके दिल और दिमाग पर हावी हो जाती है। इस्लाम का यह गुण किसी और धर्म में नहीं है। इस कारण से, आप देखते हैं कि ईमान के जोश से भरपूर मुसलमान जहाँ भी जाता है और जहाँ भी रुकता है, अपने धर्म का प्रचार करता है। वह जिस बुतपरस्त से भी मिलता है, उस तक ईमान का मज़बूत वायरस ट्रान्सफर कर देता है। आस्था के अलावा, इस्लाम सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुकूल है। इस्लाम के पास माहौल के अनुकूलन होने और इस मजबूत धर्म की आवश्यकता के अनुसार माहौल को अनुकूलित करने की अद्भुत क्षमता है।" "अल-हदीक़ह मजमुअह अदब बारिअ व हिकमह बलीग़ह", सुलैमान बिन सालेह अल-ख़राशी

इस्लाम की विचारधारा :

क्या इस्लाम में पुरोहित (जिन्हें पवित्र समझा जाए कि उनसे गलती नहीं हो सकती) एवं नेक लोग पाए जाते हैं और क्या मुसलमान पैगंबर मुहम्मद के साथियों को पवित्र मानते हैं (इस हद तक कि उनको मध्यस्थ बना लें)?

मुसलमान नेक लोगों और रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के साथियों के मार्ग पर चलते हैं, उनसे मुहब्बत करते हैं, उन्हीं ही तरह नेक बनने की कोशिश करते हैं और उन लोगों की तरह ही एक अल्लाह की इबादत करते हैं। परन्तु वे उनको पवित्र नहीं मानते हैं और न ही अपने एवं अल्लाह के बीच उनमें से किसी को मध्यस्थ बनाते हैं।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"तथा हममें से कोई किसी को अल्लाह के सिवा रब न बनाए।" [168] [सूरा आल-ए-इमरान : 64]

शिया और सुन्नी में क्या अंतर है?

मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- न सुन्नी थे और न शिया। आप शुद्ध मुस्लिम थे। इसी तरह ईसा -अलैहिस्सलाम- न कैथोलिक थे और न और कुछ। दोनों बिना मध्यस्थ के एक अल्लाह के बन्दे थे। ईसा ने स्वयं की इबादत की और न अपनी माँ की। इसी तरह न मुहम्मद ने अपने आपकी इबादत की और न अपनी बेटी की, न दामाद की। राजनैतिक समस्याओं, सत्य धर्म

से दूरी या दूसरे कारणों से इतने सारे गुट प्रकट हो गए हैं। इनका सरल, स्पष्ट एवं सत्य धर्म के साथ कोई लेना-देना नहीं है। बहरहाल, शब्द "सुन्नत" का अर्थ पूरी तरह से पैगंबर की कार्यप्रणाली का पालन करना है। जबकि शब्द "शिया" लोगों का एक गुट है, जो आम मुसलमानों के मार्ग से अलग हो गए हैं। इस तरह, सुन्नी वो हैं जो रसूल की कार्यप्रणाली का पालन करते हैं और वही सामान्य रूप से सही दृष्टिकोण का पालन करते हैं, जबकि शिया एक संप्रदाय हैं, जो इस्लाम के सही दृष्टिकोण से भटक गया है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"जिन लोगों ने अपने धर्म में विभेद किया और कई समुदाय हो गये, (हे नबी!) आपका उनसे कोई संबंध नहीं, उनका निर्णय अल्लाह को करना है, फिर वह उन्हें बताएगा कि वे क्या कर रहे थे।" [169] [सूरा अल-अनआम : 159]

क्या इस्लाम में इमाम, ईसाई धर्म में पादरी की तरह है?

इमाम का अर्थ वह व्यक्ति है, जो लोगों को नमाज़ पढ़ाए, उनकी देख-भाल करे या उनका नेतृत्व करे। यह कुछ खास लोगों तक सीमित धार्मिक पद नहीं है। इस्लाम में कोई जातिवाद या पुरोहितवाद नहीं है। इस्लाम धर्म सभी के लिए है। लोग अल्लाह के सामने कंघे के दांतों की तरह समान हैं। एक अरब या एक गैर-अरब के बीच कोई अंतर नहीं है। अगर है भी तो धर्मपरायणता और अच्छे कामों की बुनियाद पर। नमाज़ पढ़ाने का सबसे ज़्यादा हक़दार वह व्यक्ति है, जिसे क़ुरआन ज़्यादा और अच्छा याद हो और जो नमाज़ से संबंधित नियमों को सबसे अधिक जानने वाला है। मुसलमानों के निकट इमाम का जो भी महत्व हो, वह किसी भी स्थिति में स्वीकारोक्ति नहीं सुनता है और पापों को क्षमा नहीं करता है, जैसा कि पादरी की स्थिति है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"उन्होंने अपने विद्वानों और धर्माचारियों (संतों) को अल्लाह के सिवा पूज्य बना लिया तथा मरयम के पुत्र मसीह को, जबकि उन्हें जो आदेश दिया गया था, वह इसके सिवा कुछ न था कि एक अल्लाह की इबादत (वंदना) करें। कोई पूज्य नहीं है, परन्तु वही। वह उससे पवित्र है, जिसे उसका साझी बना रहे हैं।" [170] [सूरा अल-तौबा : 31] इस्लाम इस बात की पुष्टि करता है कि नबी अल्लाह का जो संदेश पहुँचते हैं, उसमें उनसे कोई त्रुटि नहीं होती। जबकि कोई पुजारी या संत न तो ग़लती से पाक होता है और न उसके पास वह्य आती है। इस्लाम में गैर-अल्लाह से मदद माँगने के लिए उसकी शरण में जाना बिल्कुल हराम है। चाहे यह मदद नबियों ही से क्यों न माँगी जाए। जिसके हाथ में कुछ नहीं है, वह दूसरे को कुछ दे नहीं सकता है। इंसान अल्लाह के अलावा किसी दूसरे से कैसे मदद माँग सकता है, जबकि वह दूसरा अपने आपकी मदद नहीं कर सकता है। अल्लाह से माँगना सम्मान है, जबकि उसके अलावा किसी और से माँगना अपमान है। क्या राजा एवं प्रजा के बीच माँगने में बराबरी करना तार्किक है। तर्क और बुद्धि इस विचार का पूरी तरह से खंडन करती है। पूज्य के अस्तित्व एवं उसके हर चीज़ पर सामर्थ्य होने के ईमान के साथ गैर-अल्लाह से माँगना फ़िज़ूल है, शिर्क है, इस्लाम के विरूद्ध है और सबसे बड़ा पाप है।

अल्लाह तआला रसूल की ज़ुबानी कहता है :

"आप कह दें कि मैं तो अपने लाभ और हानि का मालिक नहीं हूँ, परन्तु जो अल्लाह चाहे, (वही होता है)। यदि मैं ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता, तो मैं बहुत-सा लाभ प्राप्त कर लेता। मैं तो केवल उन लोगों को सावधान करने तथा शुभ सूचना देने वाला हूँ, जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।" [171] [सूरा अल-आराफ़ : 188]

[सूरा अल-मुल्क: 3] और एक अन्य स्थान में फ़रमाया :

"आप कह दें : मैं तो तुम्हारे जैसा ही एक मनुष्य हूँ, मेरी ओर प्रकाशना (वह्य) की जाती है कि तुम्हारा पूज्य केवल एक ही पूज्य है। अतः जो कोई अपने पालनहार से मिलने की आशा रखता हो, उसके लिए आवश्यक है कि वह अच्छे कर्म करे और अपने पालनहार की इबादत में किसी को साझी न बनाए।" [172] [सूरा अल-कह्फ़ : 110] "और मस्जिदें अल्लाह ही के लिए हैं। अतः अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को कदाचित न पुकारो।" [173] [सूरा अल-जिन्न : 18]

नबी एवं रसूल में क्या अंतर है?

नबी वह है जिसकी ओर वह्य (प्रकाशन) भेजी जाती है, परन्तु वह कोई नया संदेश या कार्यप्रणाली लेकर नहीं आता, जबकि रसूल वह है जिसे अल्लाह, उसके समुदाय के अनुरूप नई कार्यप्रणाली एवं शरीयत देकर भेजता है। उदाहरण स्वरूप, तौरात मूसा -अलैहिस्सलाम- पर, इंजील ईसा -अलैहिस्सलाम- पर, ज़बूर दाऊद -अलैहिस्सलाम- पर, सहीफ़े इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- पर तथा क़ुरआन मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- पर उतरे।

अल्लाह तआला लोगों की तरफ उन्हीं की तरह इंसान को रसूल बनाकर क्यों भेजता है, फ़रिश्तों को क्यों नहीं भेजता?

मानव के लिए जो उपयुक्त हो सकता है, वह उन्हीं की तरह मानव ही हो सकता है, जो उन्हीं की भाषा में उनसे बात करे और उनके लिए आदर्श हो। यदि उनकी ओर किसी फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेज जाता और वह कोई मुश्किल काम करता, तो लोग कहते कि फ़रिश्ता जो कर सकता है, हम कर नहीं सकते।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"(हे नबी!) आप कह दें कि यदि धरती में फ़रिश्ते निश्चिंत होकर चलते-फिरते होते, तो हम अवश्य उनपर आकाश से कोई फ़रिश्ता रसूल बनाकर उतारते।" [174] [सूरा अल-इसरा : 95] "और यदि हम उसे फ़रिश्ता बनाते, तो निश्चय उसे आदमी (के रूप में) बनाते और अवश्य उनपर वही संदेह डाल देते, जिस संदेह में वे (अब) पड़े हुए हैं।" [175] [सूरा अल-अन्आम : 9]

वह्य के माध्यम से सृष्टि से सृष्टिकर्ता के संबंध साधने का क्या प्रमाण है?

वह्य के माध्यम से सृष्टिकर्ता के सृष्टि से संबंध साधने के कुछ प्रमाणों इस प्रकार हैं :

1- हिकमत (तत्वज्ञान) : मिसाल के तौर पर देखें कि जब इंसान कोई घर बनाता है और फिर उससे खुद फ़ायदा उठाए बिना या अपनी औलाद या किसी और को फ़ायदा उठाने दिए बिना यूँ ही छोड़ देता है,तो स्वभाविक रूप से हम उसे अविवेकी या

नासमझ कहते हैं। इसलिए यह स्पष्ट है कि ब्रहमांड को बनाने और आकाशों और धरती के बीच की सारी चीज़ों को मनुष्य के लिए उपयोगी बनाने की कोई न कोई हिकमत एवं उद्देश्य ज़रूर है।
2- प्रकृति या स्वभाव : मानव मानस के भीतर अपनी उत्पत्ति, अपने अस्तित्व के स्रोत और अपने अस्तित्व के उद्देश्य को जानने के लिए एक मजबूत जन्मजात प्रेरणा होती है। मानव प्रकृति हमेशा उसे उस शक्ति की खोज करने के लिए प्रेरित करती है, जिसने उसे अस्तित्व प्रदान किया है। मगर इंसान अकेला अपने सृष्टिकर्ता के गुणों, अपने अस्तित्व के उद्देश्य एवं अपने अंजाम की खोज नहीं कर सकता है। इसके लिए एक ग़ैबी शक्ति के हस्तक्षेप की ज़रूरत होती है, जो यह काम रसूलों को भेजकर करती है और हमारे लिए जीवन के राज़ों को खोलती है।
इसलिए हम पाते हैं कि बहुत-से लोगों ने आकाशीय संदेशों के माध्यम से अपना रास्ता खोज लिया है, जबकि बहुत-से लोग तथ्य की तलाश में अभी भी भटक रहे हैं और उनकी सोच की उड़ान सांसारिक भौतिक प्रतीकों तक सीमित होकर रह गई है।
3- नैतिकता : यदि हमें पानी की ज़रूरत हो, तो यह पानी के होने का प्रमाण है, पूर्व इसके कि हम उसके अस्तित्व को जानें। इसी प्रकार न्याय के प्रति हमारी उत्सुकता न्यायकर्ता के होने का प्रमाण है।
जो इंसान इस जीवन में बहुत सारी कमियाँ तथा लोगों को एक-दूसरे पर अत्याचार करते हुए देखता है, वह इस बात से संतुष्ट नहीं हो सकता कि यह जीवन इस तरह समाप्त हो जाए कि ज़ालिम को कोई सज़ा न मिले और मज़लूमों के अधिकार नष्ट हो जाएँ। बल्कि इन्सान को जब दोबारा जीवित होकर उठने, हिसाब-किताब और आख़िरत के जीवन के बारे में बताया जाता है, तो उसे राहत और इत्मीनान का एहसास होता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जिस इन्सान से उसके कर्मों का हिसाब लिया जाना है, उसे रास्ता दिखाए, निर्देश दिए, प्रेरित किए तथा चेतावनी दिए बिना छोड़ दिया जाए और यही तो धर्म की भूमिका है। साथ ही, वर्तमान आकाशीय धर्मों का अस्तित्व, जिनके अनुयायी अपने स्रोत की दिव्यता में विश्वास करते हैं, सृष्टिकर्ता के मनुष्यों के साथ संचार का प्रत्यक्ष प्रमाण है। भले ही नास्तिक सारे संसारों के रब के द्वारा रसूलों एवं आकाशीय पुस्तकों के भेजे जाने का इनकार करें, परन्तु इनका अस्तित्व और बाक़ी रहना इस तथ्य का पर्याप्त प्रमाण है कि मनुष्य की परम इच्छा है कि वह पूज्य के साथ संवाद करे और अपने अंदर मौजूद स्वाभाविक ख़ालीपन को दूर करे।

इस्लाम और ईसाई धर्म का अंतर :

मूल पाप के बारे में इस्लाम की क्या राय है?

मानव पिता आदम -अलैहिस्सलाम- के वर्जित पेड़ से खा लेने के कारण, उनकी तौबा स्वीकार करने के समय अल्लाह ने जो मानव को पाठ पढ़ाया, वह सारे संसारों के रब के द्वारा मानव को क्षमा करने का पहला उदाहरण था। चूँकि आदम से विरासत में मिले पाप का कोई अर्थ नहीं है, जैसा कि ईसाइ मानते हैं, इसलिए कोई किसी के गुनाह का बोझ नहीं उठाएगा। हर व्यक्ति अपने गुनाह का बोझ अकेला उठाएगा। यह हमपर अल्लाह की एक दया है कि इंसान गुनाहों से पाक-साफ़ होकर पैदा होता है और वह वयस्क होने के बाद से ही अपने कर्मों का स्वयं ज़िम्मेदार है। इंसान से उस गुनाह का हिसाब ही नहीं लिया जाएगा, जिसको उसने किया ही नहीं। इसी प्रकार वह अपने ईमान एवं अच्छे कार्य के कारण ही मुक्ति पाएगा। अल्लाह ने इंसान को जीवन दिया तथा उसे आज़माने एवं उसकी परीक्षा लेने के लिए उसे इरादा दिया। वह केवल अपने कर्मों का ज़िम्मेवार है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा। फिर तुम्हें अपने रब की ओर लौटना है, जो तुम्हें तुम्हारे कर्मों के बारे में बता देगा। वह दिलों के भेद को जानता है।" [176] [सूरा अल-ज़ुमर : 7]
ओल्ड टेस्टामेंट में आया है :
"औलाद के बदले बापों को नहीं मारा जाएगा, और बापों के बदले औलाद को नहीं मारा जाएगा। हर इंसान का उसके अपने गुनाह के बदले वध किया जाएगा।" [177] [Book of Deuteronomy : 24:16]
जिस तरह क्षमा न्याय के साथ असंगत नहीं है, वैसे ही न्याय क्षमा और दया को रोकता नहीं है।

ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाने के संबंध में इस्लाम की क्या राय है?

अल्लाह जो सारे संसार का सृष्टिकर्ता है, ज़िन्दा तथा नित्य स्थायी है। बेनियाज़ एवं सक्षम है। उसे मानवता के लिए मसीह का रूप धारण करके सूली पर चढ़कर जान देने की आवश्यकता नहीं है, जैसा कि ईसाई मानते हैं। वही जीवन देता है एवं वही जीवन लेता भी है। इसलिए वह मरा नहीं है और इसी तरह वह किसी का रूप धारण करके दुनिया में आया भी नहीं था। उसने ईसा मसीह -अलैहिस्सलाम- को हत्या एवं सूली पर चढ़ाए जाने से बचाया, जिस प्रकार उसने इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- को आग से बचाया था, मूसा -अलैहिस्सलाम- को फ़िरऔन एवं उसकी फ़ौज से बचाया था और जिस प्रकार वह हमेशा अपने नेक बन्दों की सुरक्षा और हिफ़ाज़त करता आया है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"तथा उनके (गर्व से) यह कहने के कारण कि निःसंदेह हमने ही अल्लाह के रसूल मरयम के पुत्र ईसा मसीह को क़त्ल किया। हालाँकि न उन्होंने उसे क़त्ल किया और न उसे सूली पर चढ़ाया, बल्कि उनके लिए (किसी को मसीह का) सदृश बना दिया गया। निःसंदेह जिन लोगों ने इस मामले में मतभेद किया, निश्चय वे इसके संबंध में बड़े संदेह में हैं। उन्हें इसके संबंध में अनुमान का पालन करने के सिवा कोई ज्ञान नहीं, और उन्होंने उसे निश्चित रूप से क़त्ल नहीं किया। बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी ओर उठा लिया तथा अल्लाह सदा से हर चीज़ पर प्रभुत्वशाली, पूर्ण हिकमत वाला है।" [178] [सूरा अल-निसा : 157-158]

मुसलमान अपनी बेटी की शादी किसी यहूदी या ईसाई से क्यों नहीं करता?

एक मुसलमान पति अपनी ईसाई या यहूदी पत्नी के मौलिक धर्म, उसकी धार्मिक पुस्तक एवं उसके रसूल का सम्मान करता है। बल्कि उसका ईमान इसके बग़ैर पूरा ही नहीं होता है। वह उसे अपने धर्म को मानने की स्वतंत्रता देता है। जबकि इसके विपरीत बात सत्य नहीं है। यहूदी या ईसाई जब इस बात का विश्वास रखेंगे कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई माबूद नहीं है एवं

मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अल्लाह के रसूल हैं, हम अपनी बेटियों की शादी उनसे कर देंगे। इस्लाम अक़ीदे में वृद्धि करता और उसे पूर्णता प्रदान करता है। उदाहरण के तौर पर यदि कोई मुसलमान ईसाई धर्म अपनाना चाहे, तो उसके लिए ज़रूरी हो जाता है कि वह मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- एवं क़ुरआन पर अपने ईमान को खो दे, साथ ही ट्रिनिटी में विश्वास रखे और पादरियों तथा अन्य लोगों का सहारा लेने के कारण सारे संसारों के रब के साथ सीधे संबंध को भी खो दे। और यदि यहूदी धर्म ग्रहण करना चाहे, तो उसके लिए ज़रूरी होगा कि वह मसीह -अलैहिस्सलाम- एवं सही इंजील पर विश्वास न रखे। हालाँकि किसी के पास यहूदी धर्म अपनाने का अवसर ही नहीं है। क्योंकि यह कोई वैश्विक धर्म नहीं, बल्कि एक जाति विशेष का धर्म है। इसमें सांप्रदायिक संकीर्णता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

इस्लामी सभ्यता की विशेषताएँ :

इस्लामी सभ्यता की विशेषताएँ क्या हैं?

इस्लामी सभ्यता ने अपने सृष्टिकर्ता के साथ अच्छा व्यवहार किया है और सृष्टिकर्ता और उसकी सृष्टि के बीच के संबंध को सही जगह पर रखा है। जबकि अन्य मानव सभ्यताओं ने अल्लाह के साथ अच्छा मामला नहीं किया है। उन्होंने उसका इंकार किया है, ईमान एवं इबादत में दूसरे प्राणियों को उसके साथ साझी बनाया है और उसे ऐसे स्थान पर रखा है, जो उसकी शान एवं सामर्थ्य के अनुरूप नहीं है।
एक सच्चा मुसलमान सभ्यता एवं संस्कृति के बीच मिश्रण नहीं करता है। वह विचारों और विज्ञानों से डील करने के तरीक़े को निर्धारित करने एवं उनके बीच अंतर करने में बीच का रास्ता चुनता है।
सांस्कृतिक तत्व : विश्वास संबंधी, वैचारिक तथा बौद्धिक बातों और व्यवहारिक और नैतिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है।
सभ्यता संबंधी तत्व : यह वैज्ञानिक उपलब्धियों, भौतिक खोजों और औद्योगिक आविष्कारों का प्रतिनिधित्व करता है।
मुसलमान इन विज्ञानों और आविष्कारों को अपने ईमान और व्यवहार संबंधी अवधारणाओं के दायरे में रहते हुए अपनाता है।
ग्रीक संस्कृति अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान लाई, लेकिन उसने उसके एक होने से इंकार किया और उसके बारे में बताया कि वह न लाभ पहुँचा सकता है और न हानि करता है।
रोमानी संस्कृति ने आरंभ में सृष्टिकर्ता का इंकार किया और ईसाई धर्म अपनाने के बाद सृष्टिकर्ता का साझी ठहराया। चुनांचे उसकी मान्यताओं में बुतपरस्ती के तत्व, जैसे बुतों एवं शक्तिशाली वस्तुओं की इबादत आदि चीज़ें प्रवेश करती गईं।
इस्लाम से पहले फारसी संस्कृति ने अल्लाह का इंकार किया, उसको छोड़ सूरज की इबादत की, आग को सजदा किया एवं उसको पवित्र जाना।
हिन्दू संस्कृति ने सृष्टिकर्ता की इबादत छोड़कर सृष्टि की पूजा शुरू कर दी, जो पवित्र त्रय का देहधारण करती है, जो तीन दैवीय रूपों से मिलकर बना है : भगवान "ब्रह्मा" सृष्टिकर्ता के रूप में, भगवान "विष्णु" रक्षक के रूप में और भगवान "शिव" विध्वंसक के रूप में।
बौद्ध सभ्यता ने संसार की रचना करने वाले को नकारा और बुद्ध को अपना देवता बना लिया।
साबियों ने, जो अहले किताब में से थे, अपने रब का इनकार किया। उनके कुछ मुस्लिम एकेश्वरवादी गिरोहों -जिनका क़ुरआन ने उल्लेख किया है- को छोड़कर सभी ने ग्रहों और सितारों की पूजा की।
अखेनातेन के शासनकाल के दौरान फैरोनिक सभ्यता एकेश्वरवाद एवं पूज्य की पवित्रता के उच्च स्तर पर पहुँची, मगर उसमें भी पूज्य के भौतिक शरीर होने का दावा करने एवं उसे उसी के कुछ प्राणियों, जैसे सूर्य आदि का सदृश बनाने जैसी बातें पाई जाती थीं, जिन्हें पूज्य के प्रतीक माना जाता था। अल्लाह का इंकार उस समय शिखर पर पहुँच गया, जब मूसा -अलैहिस्सलाम- के समय में फिरऔन ने अल्लाह के अतिरिक्त पूज्य होने का दावा किया और अपने आपको पहला क़ानून साज़ घोषित कर दिया।
अरब सभ्यता ने सृष्टिकर्ता की इबादत को छोड़कर बुतों की इबादत शुरू कर दी।
ईसाई सभ्यता ने अल्लाह के पूर्ण रूप से एक होने का इंकार किया, उसके साथ ईसा मसीह एवं उनकी माँ मरयम को साझी ठहराया और ट्रिनिटी की आस्था को अपनाया। अर्थात इस बात पर ईमान रखा कि अल्लाह तीन-तीन सत्ताओं में है (बाप, बेटा और पवित्र रूह)।
यहूदी सभ्यता ने अपने सृष्टिकर्ता का इंकार किया और अपने लिए एक विशेष पूज्य को चुना, जिसे उसने अपनी जाति का माबूद बनाया, बछड़े की इबादत की और अपनी किताबों में माबूद को मानव विशेषताओं से विशेषित किया, जो उसके योग्य नहीं हैं।
पिछली सभ्यताएं कमज़ोर हुईं और यहूदी एवं ईसाई सभ्यताएं दो गैर-धार्मिक सभ्यताओं में बदल गईं। अर्थात् पूंजीवाद और साम्यवाद। यदि अल्लाह तथा जीवन के बारे में उनकी धारणाओं और विचारों पर गौर किया जाए तो स्पष्ट होगा कि वे नागरिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति में शिखर पर पहुँचे हुए होने के बावजूद पिछड़े, अविकसित, क्रूर और अनैतिक हैं। दरअसल नागरिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति सभ्यताओं के विकसित होने का मानक नहीं है। सही सभ्यतागत प्रगति की कसौटी इसका तर्कसंगत प्रमाणों और अल्लाह, मनुष्य, ब्रह्मांड और जीवन के संबंध में सही विचार पर आधारित होना है। सही और उन्नत सभ्यता वह है जो अल्लाह और उसके प्राणियों के साथ उसके संबंध, इनसान के अस्तित्व के स्रोत, उसके परिणाम के ज्ञान के बारे में सही अवधारणाओं की ओर ले जाती है और इस संबंध को सही स्थान पर रखती है। इस तरह हम पाते हैं कि इस्लामी सभ्यता सभी सभ्यताओं के बीच अकेली विकसित सभ्यता है। क्योंकि इसने ज़रूरी संतुलन को बाक़ी रखा है। पुस्तक "इसाअह अल-रासमालिय्यह व अल-शुयूईय्यह इला अल्लाह", प्रो. डॉ. गाजी इनाया।

क्या यह विरोधाभास नहीं है कि इस्लाम धर्म इतना तार्किक है और मुसलमानों की स्थिति इतनी कुव्यवस्था की शिकार है?

धर्म अच्छे आचरण और बुरे कर्मों से बचने का आह्वान करता है। इस प्रकार, कुछ मुसलमानों का बुरा व्यवहार उनकी सांस्कृतिक आदतों या उनके धर्म की अज्ञानता और सच्चे धर्म से उनकी दूरी के कारण होता है।
इसलिए कोई विरोधाभास नहीं है। क्या लक्ज़री कार चालक का सही ड्राइविंग के नियमों से अज्ञानता के कारण किसी भयानक दुर्घटना का शिकार हो जाना, उस कार की श्रेष्ठता की वास्तविकता का खंडन करता है?

धर्म को राज्य से अलग क्यों न किया जाए और क्यों न इनसान की राय ही संदर्भ (reference) हो, जैसा कि पश्चिम में है?

पश्चिमी अनुभव मध्य युग में लोगों की क्षमताओं और दिमागों पर चर्च और राज्य के प्रभुत्व और गठबंधन की प्रतिक्रिया के रूप में आया। इस्लामिक व्यवस्था की व्यवहारिकता और तर्क को देखते हुए इस्लामी जगत ने कभी भी इस समस्या का सामना नहीं किया है। वास्तव में, हमें एक दृढ़ दिव्य नियम की आवश्यकता है, जो मनुष्य के लिए उसकी सभी स्थितियों में उपयुक्त हो। हमें ऐसे संदर्भों की आवश्यकता नहीं है, जो मानवीय ख़्वाहिशों, इच्छाओं और मिजाज के अनुसार हों! जैसा कि सूदखोरी, समलैंगिकता और अन्य चीज़ों को वैध ठहराने में होता है। इसी तरह हमें ऐसे संदर्भों की भी आवश्यकता नहीं है, जो ताक़तवरों की तरफ से लिखे जाएं, ताकि कमज़ोरों के लिए बोझ बन जाएं, जैसा कि पूंजीवादी व्यवस्था में होता है। हमें साम्यवाद भी नहीं चाहिए, जो संपत्ति के मालिक होने की इच्छा की प्रकृति का विरोध करता है।

क्या इस्लाम लोकतंत्र को मान्यता देता है?

मुसलमानों के पास लोकतंत्र से बेहतर व्यवस्था है, जिसे शूरा व्यवस्था (विचार विमर्श पर आधारित व्यवस्था) कहते हैं।
लोकतंत्र : उदाहरण के तौर पर परिवार के संबंध में एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय, जब आप राय देने वाले व्यक्ति के अनुभव, उम्र या ज्ञान की परवाह किए बिना अपने परिवार के सभी सदस्यों की राय को ध्यान में रखते हैं और मकतब के बच्चे से लेकर बुद्धिमान दादाजी तक सभी की राय को समान मानते हैं, इसे लोकतंत्र कहा जाता है।
शूरा व्यवस्था (विचार विमर्श पर आधारित व्यवस्था) : यह बड़ी उम्र, बड़े स्थान एवं अनुभव वाले से इस बात पर मश्वरा करना है कि क्या सही है और क्या गलत?
अंतर बहुत स्पष्ट है। लोकतंत्र की सबसे बड़ी कमी कुछ देशों में ऐसे कामों की अनुमति देना है, जो अपने आप में प्रकृति, धर्म, रीति रिवाज एवं परंपराओं के ख़िलाफ़ हैं। मसलन सूदखोरी और समलैंगिकता आदि घिनौने कामों की अनुमति देना। ऐसा केवल वोट में बहुमत हासिल करने के कारण किया जाता है। यदि अधिकांश वोट नैतिक पतन का आह्वान करे, तो लोकतंत्र भी अनैतिक समाजों के निर्माण में योगदान करता है। इस्लामिक शूरा व्यवस्था और पश्चिमी लोकतंत्र के बीच अंतर क़ानूनसाज़ी में संप्रभुता के स्रोत के साथ खास है। लोकतंत्र में क़ानूनसाज़ी की संप्रभुता जनता एवं समुदाय से शुरू होती है, जबकि इस्लामी शूरा व्यवस्था में क़ानूनसाज़ी का मुख्य स्रोत अल्लाह के आदेश हैं, जो शरीयत की शक्ल में हमारे सामने मौजूद हैं। यह किसी मनुष्य का निर्माण नहीं है। इनसान को अपने क़ानूनों की बुनियाद इसी अल्लाह की शरीयत पर रखनी होगी। इसी प्रकार जिस संबंध में कोई आदेश नहीं आया है, उसमें उसे इजतिहाद का अधिकार है, मगर शर्त यह है कि वह इसी शरई हलाल व हराम के अंतर्गत हो।

इस्लामी शरीयत एक अनोखा धार्मिक क़ानून है, जो तर्क के विरूद्ध नहीं है, तो हुदूद क्यों?

पृथ्वी पर उपद्रव का इरादा रखने वालों को रोकने और दंडित करने के लिए सीमाएँ निर्धारित की गई हैं। इसकी दलील यह है कि भूख और अत्यधिक आवश्यकता के कारण चोरी करने या ग़लती से हत्या करने के मामलों में इसे लागू नहीं किया जाता। हुदूद नाबालिग, पागल या मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति पर लागू नहीं होती हैं। यह मुख्य रूप से समाज की रक्षा के लिए हैं। जहाँ तक इसके सख़्त होने की बात है, तो यह भी समाज के हित में है। इससे समाज के लोगों को ख़ुश होना चाहिए। इन (दंडों) का अस्तित्व लोगों के लिए रहमत है, जिससे उनको सुरक्षा प्राप्त होती है। केवल अपराधी, डाकू और भ्रष्ट लोग ही इन दंडों पर आपत्ति करेंगे, क्योंकि उनको अपनी जान का ख़तरा है। इनमें से कुछ हुदूद तो मानव निर्मित क़ानूनों में भी मौजूद हैं, जैसा कि मृत्यु दंड इत्यादि।
जो लोग इन दंडों के बारे में बुरा-भला कहते हैं, वे अपराधी के हित के बारे में सोचते हैं और समाज के हित को भूल जाते हैं। वे अपराधी पर दया करते हैं और पीड़ित की उपेक्षा करते हैं। वे सज़ा को कठोर कहते हैं और अपराध की गंभीरता की उपेक्षा करते हैं।
यदि वे दंड के साथ अपराध की तुलना करें, तो इन शर्ई दंडों में न्याय पर आधारित पाएंगे एवं उनको इन दंडों का अपराधों के समान होने का यक़ीन हो जाएगा। उदाहरण स्वरूप, यदि चोर के काम को देखें, वह अंधेरे में छुप-छुपाकर चलता है, ताला तोड़ता है, हथियार लहराता है और अमन से रह रहे लोगों को डराता है। वह घरों के सम्मान को पामाल करता है, जो मुक़ाबला करता है उसकी हत्या करने पर उतर आता है और अधिकांश समय में हत्या का अपराध कर डालता है, ताकि अपनी चोरी पूरी कर सके एवं उसके बाद आराम से भाग सके। वह बिना किसी अंतर के हत्या करता है। जब हम चोर के इन काले करतूतों पर विचार करते हैं, तो शरीयत के दंडों की सख़्ती में छुपी मसलहत को जान जाते हैं।
यही स्थिति दूसरे दंडों की है। हमें अपराधों एवं उनमें जो ख़तरे, नुक़सान, अत्याचार एवं आक्रामकता हैं, उनमें विचार करना चाहिए, ताकि हमें विश्वास हो जाए कि अल्लाह ने हर अपराध के लिए उचित दंड निर्धारित किया है और बदला भी कर्म की कोटि का ही रखा है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"और आपका रब किसी पर अत्याचार नहीं करता।" [180] **** इस्लाम ने प्रतिरोधक दंड निर्धारित करने से पहले शिक्षा और बचाव के ऐसे तरीके पेश किए हैं, जो अपराधियों को अपराध से दूर रखने के लिए पर्याप्त हैं, यदि उनके पास समझने वाले दिल एवं दया करने वाली आत्माएँ हों। फिर शरीयत उस समय तक दंड लागू नहीं करती है, जब तक यह गारंटी नहीं मिल जाती है

कि व्यक्ति विशेष ने जो अपराध किया है, वह बिना किसी औचित्य और बिना किसी मजबूरी के किया है। इन सब के बावजूद उसका अपराध करना उसके सबसे अलग होने और सज़ा का हक़दार होने का प्रमाण है। इस्लाम ने न्याय के साथ दौलत को बांटने का काम किया है और अमीरों के धनों में ग़रीबों के लिए एक निर्धारित भाग रखा है। पत्नी एवं रिश्तेदारों पर खर्च को वाजिब किया है। मेहमान का सम्मान एवं पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया है। राज्य को ज़िम्मेदार बनाया है कि वह अपने लोगों की तमाम ज़रूरतें जैसा कि खाने, पहनने और रहने की ज़रुरत आदि इस तरह पूरी करे कि लोग एक सम्माननीय जीवन गुज़ार सकें। इसी प्रकार राज्य अपने नागरिकों में से सशक्त व्यक्तियों के लिए सम्माननीय काम के दरवाज़े खोले, हर शक्ति वाले को उसकी शक्ति के अनुसार काम करने का अवसर प्रदान करे और बराबर के अवसर सभी को उपलब्ध कराए।

मान लें कि एक व्यक्ति अपने घर लौटे और पाए कि किसी व्यक्ति के हाथों चोरी के उद्देश्य से या प्रतिशोध के तौर पर उसके परिवार के सदस्यों की हत्या हो गई है। फिर सरकारी अधिकारी आएँ और अपराधी को गिरफ्तार करके एक निश्चित अवधि के लिए -चाहे वह लंबी हो या छोटी- कारावास में बंद कर दे। वह वहां खाए और जेल में मौजूद उन सेवाओं का लाभ उठाए, जिनको उपलब्ध कराने में खुद पीड़ित व्यक्ति स्वयं कर चुकाकर अपना योगदान दे रहा होता है।

तो ऐसी स्थिति में उस पीड़ित व्यक्ति की क्या प्रतिक्रिया होगी? वह अंत में या तो पागल हो जाएगा या फिर अपना दर्द भूलने के लिए नशे का आदी हो जाएगा। यदि यही स्थिति किसी ऐसे देश में उत्पन्न हो, जहाँ इस्लामी शरीयत लागू हो, तो अधिकारी अलग तरह से कार्रवाई करेंगे। इस अपराधी को पीड़ितों के परिवार के पास लाया जाएगा, ताकि वे उस अपराधी के संबंध में निर्णय लें कि उसके साथ क्या करना है? वे या तो प्रतिषोध लें, जो बिल्कुल न्याय है या दियत पर राज़ी हो जाएं, जो कि एक आज़ाद व्यक्ति की हत्या की क़ीमत है या फिर क्षमा कर दें और क्षमा कर देना ही उत्तम है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"और यदि तुम माफ़ करो तथा दरगुज़र करो और क्षमा कर दो, तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील, अत्यंत दयावान् है।" [181] [सूरा अल-तग़ाबुन : 14]

इस्लामी शरीयत का हर अध्ययन करने वाला इस तथ्य को जानता है कि हुदूद प्रतिषोध या हुदूद को लागू करने की इच्छा के आधार पर किए जाने वाले कार्य से अधिक एक निवारक शैक्षिक पद्धति है। उदाहरण स्वरूप :

सज़ा देने से पहले सावधान एवं सतर्क रहना, बहाने तलाशना और संदेह को दूर करना आवश्यक है। क्योंकि अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की हदीस है : "शरई दंडों को संदेहों के द्वारा टाल दिया करो।"

जिसने ग़लती की और अल्लाह ने उसको छुपा लिया, लोगों के सामने उसके गुनाह को ज़ाहिर नहीं किया, उसपर कोई दंड नहीं है। यह इस्लामी शिक्षा नहीं है कि लोगों की गुप्त बातों के पीछे पड़ा जाए एवं उनकी जासूसी की जाए।

पीड़ित का अपराधी को माफ़ कर देना दंड को रोक देता है।

"फिर जिसे उसके भाई की ओर से कुछ भी क्षमा[96] कर दिया जाए, तो ऐसे में सामान्य रीति के अनुसार (क़ातिल का) अनुसरण करना चाहिए और भले तरीक़े से उसके पास पहुँचा देना चाहिए। यह तुम्हारे पालनहार की ओर से एक प्रकार की सुविधा तथा एक दया है।" [182] [सूरा अल-बक़रा : 178]

यह अनिवार्य है कि अपराधी ने अपनी इच्छा से अपराध किया हो और उसे मजबूर न किया गया हो। मजबूर पर हद लागू नहीं होगी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है :

"मेरी उम्मत के लिए ग़लती से, याद न रहने के कारण और मजबूरी में किए गए गुनाहों को माफ़ कर दिया गया है।" [183] [यह हदीस सहीह है।]

शर्ई दंड जैसा कि हत्यारे की हत्या, व्यभिचारी को संगसार करना, चोर का हाथ काटना इत्यादि, जिसे क्रूरता और बर्बरता बताया जाता है, इसे सख़्त करने की हिकमत यह है कि इन अपराधों को बिगाड़ की जननी माना जाता है। इनमें से हर अपराध पांच प्रमुख हितों (धर्म, जान, माल, वंश, बुद्धि) में से एक या अधिक पर हमला करता है, जिनकी सुरक्षा एवं हिफ़ाज़त की अनिवार्यता पर सभी शरीयतों एवं मानव निर्मित क़ानूनों ने हर युग में सहमति जताई है। क्योंकि इनके बिना जीवन सुचारु रूप से नहीं चल सकता है।

इसी कारण से मुनासिब है कि इनमें से किसी अपराध को अंजाम देने वाले पर सख़्त दंड लागू किया जाए, ताकि उसके लिए फटकार एवं दूसरे के लिए रोक हो।

इस्लामी तरीक़ा को समग्र रूप से लिया जाना ज़रूरी है और इस्लामी हुदूद को इस्लाम की शिक्षाओं से अलग करके लागू नहीं किया जा सकता है, विशेषकर जो आर्थिक और सामाजिक तरीक़े से संबंधित है। धर्म की सही शिक्षाओं से लोगों की दूरी ही कुछ लोगों को अपराध करने के लिए प्रेरित करती है। यही वह बड़े अपराध हैं, जो इस्लामी क़ानून को लागू न करने वाले कई देशों को तबाह कर रहे हैं, हालांकि उनके पास सभी क्षमताएँ एवं संभावनाएँ उपलब्ध हैं, जो उन्हें तकनीकी प्रगति प्रदान करती हैं। पवित्र क़ुरआन में आयतों की संख्या 6348 है, जबकि हुदूद की आयतों की संख्या दस से अधिक नहीं है, जो तत्वज्ञ एवं हर चीज़ की ख़बर रखने वाले अल्लाह की तरफ से बड़ी हिकमत के साथ उतारी गई हैं। क्या कोई व्यक्ति केवल इन दस आयतों में छिपी हिकमत से अज्ञानता के कारण इस महान पद्धति को पढ़ने एवं उसे लागू करने के आनंद लेने का अवसर खो देगा, जिसे बहुत-से गैर-मुस्लिम अद्वितीय मानते हैं।

इस्लाम का मॉडरेशन :

इस्लाम ने सामाजिक संतुलन को किस तरह सुनिश्चित किया है?

इस्लाम का एक सामान्य नियम यह है कि सभी प्रकार के धन अल्लाह के हैं और लोग इसके प्रभारी मात्र हैं और धन को केवल अमीरों के बीच घूमते रहना नहीं चाहिए। इस्लाम ने ज़कात के रास्ते से फ़क़ीरों एवं मिस्कीनों के लिए एक तय प्रतिशत ख़र्च किए बिना धन इकट्ठा करने से मना किया है। ज़कात एक इबादत है जो इंसान को ख़र्च करने एवं देने के गुणों को अपनाने तथा कंजूसी एवं बखीली की भावनाओं से दूर रहने में मदद करती है।

अल्लाह तआला ने कहा है :
"अल्लाह ने जो कुछ भी इन बस्तियों वालों (के धन) से अपने रसूल पर लौटाया, तो वह अल्लाह के लिए और रसूल के लिए और (रसूल के) रिश्तेदारों, अनाथों, निर्धनों तथा यात्री के लिए है; ताकि वह (धन) तुम्हारे धनवानों ही के बीच चक्कर लगाता न रह जाए, और रसूल तुम्हें जो कुछ दें, उसे ले लो और जिस चीज़ से रोक दें, उससे रुक जाओ। तथा अल्लाह से डरते रहो। निश्चय अल्लाह बहुत कड़ी यातना देने वाला है।" [184] [सूरा अल-हश्र : 7] "अल्लाह तथा उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसमें से खर्च करो जिसमें उसने तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया है। फिर तुममें से जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ख़र्च किए, उनके लिए बहुत बड़ा प्रतिफल है।" [185] [सूरा अल-हदीद : 7] "जो लोग सोना तथा चाँदी जमा करते हैं और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते हैं, तो उन्हें कष्टदायक यातना की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।" [186] [सूरा अल-तौबा : 34]
इसी तरह इस्लाम हर सक्षम व्यक्ति से काम करने का आग्रह करता है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को वशीभूत कर दिया, अतः उसके रास्तों में चलो-फिरो तथा उसकी प्रदान की हुई रोज़ी में से खाओ। और उसी की ओर तुम्हें फिर जीवित हो कर जाना है।" [187] [सूरा अल-मुल्क : 15]
इस्लाम वास्तव में अमल का धर्म है। अल्लाह पाक ने हमें भरोसा करने का आदेश दिया है, न कि साधनों को अपनाना छोड़कर सुस्त पड़े रहने का। भरोसे के लिए दृढ़ संकल्प, क्षमता का प्रयोग करने, साधनों को अपनाने और फिर उसके बाद अल्लाह के निर्णय और फ़ैसला के प्रति समर्पण की आवश्यकता होती है।
अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस व्यक्ति से फ़रमाया, जो अपनी ऊँटनी को अल्लाह पर भरोसा करते हुए खुली छोड़ देना चाहता था :
"उसे बाँध दो, फिर अल्लाह पर भरोसा करो।" [188] [सहीह तिर्मिज़ी]
इस प्रकार, एक मुसलमान आवश्यक संतुलन हासिल करने वाला हो सकता है।
इस्लाम ने फिज़ूलखर्ची को हराम किया है और जीवन स्तर को नियमित करने के लिए व्यक्तियों का स्तर बढ़ाया है, इस तरह। धनवान होने की इस्लामी अवधारणा केवल आवश्यक जरूरतों की पूर्ति नहीं है, बल्कि एक व्यक्ति के पास इतना हो कि उससे वह खाए, पहने, घर बनाए, शादी करे, हज करे और दान भी दे।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"तथा वे लोग कि जब खर्च करते हैं, तो न फ़िज़ूल-खर्ची करते है और न ख़र्च करने में तंगी करते हैं, और (उनका ख़र्च) इसके बीच में मध्यम होता है।" [189] [सूरा अल-फ़ुरक़ान : 67] इस्लाम की नजर में गरीब वह है जो अपने शहर के जीवन स्तर के अनुसार अपनी ज़रूरतें पूरी न कर सके। अब यह जीवन स्तर जिसका जितना फैला हुआ होगा, गरीबी का वास्तविक अर्थ भी उतना बड़ा होगा। उदाहरण स्वरूप, यदि किसी शहर या देश में आम तौर पर हर परिवार के पास एक अलग घर है, अब अगर किसी विशेष परिवार के पास अलग घर नहीं है, तो उसे ग़रीबी का एक प्रकार माना जाएगा। इस तरह, संतुलन अर्थात हर व्यक्ति (मुस्लिम हो या ज़िम्मी) के अमीर होने का मापदंड भी उस समय के समाज की संभावनाओं के अनुसार तय किया जाएगा। इस्लाम समाज के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करता है और यह सामाजिक गारंटी के द्वारा होता है। एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है और उसकी देख-रेख उसपर अनिवार्य है। इस प्रकार मुसलमानों पर वाजिब है कि उनके बीच कोई ज़रूरतमंद न रहे।
अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है :
"एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। इसलिए न वो उसपर ज़ुल्म करे और न ही उसे ज़ुल्म के हवाले करे। जो आदमी अपने भाई की ज़रूरत पूरी करने में लगा रहता है, अल्लाह उसकी मुराद पूरी करने में लगा रहता है, और जो आदमी किसी मुसलमान की मुसीबत दूर करता है, अल्लाह क़यामत के दिन उसकी मुसीबत दूर करेगा, और जो आदमी मुसलमान का दोष छुपाएगा, क़यामत के दिन अल्लाह उसके दोषों को छुपाएगा।" [190] [सहीह बुख़ारी]

इस्लाम ने आर्थिक संतुलन को किस तरह सुनिश्चित किया है?

उदाहरण के तौर पर इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था और पूंजीवाद तथा समाजवाद के बीच एक सरल तुलना से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम ने यह संतुलन कैसे सुनिश्चित किया है।
स्वामित्व की स्वतंत्रता के संबंध में :
पूंजीवाद में : निजी संपत्ति ही सामान्य सिद्धांत है।
समाजवाद में : सार्वजनिक स्वामित्व ही सामान्य सिद्धांत है।
जबकि इस्लाम में : विभिन्न प्रकारों के स्वामित्व की अनुमति है :
सार्वजनिक स्वामित्व : यह सभी मुसलमानों के लिए सामान्य है। जैसे आबाद भूमि।
राज्य का स्वामित्व : वन और खनिज जैसे प्राकृतिक संसाधन।
निजी संपत्ति : यह केवल निवेश कार्य के माध्यम से इस तरह से अर्जित की जाती है कि उससे सामान्य संतुलन को खतरा न हो।
आर्थिक स्वतंत्रता के संबंध में :
पूंजीवाद में : आर्थिक स्वतंत्रता असीमित है।
समाजवाद में : आर्थिक स्वतंत्रता पर पूर्ण कंट्रोल है।
इस्लाम में, आर्थिक स्वतंत्रता को एक सीमित दायरे में मान्यता प्राप्त है, जिसका प्रतिनिधित्व निम्न में होता है :
इस्लामी शिक्षा और समाज में इस्लामी अवधारणाओं के प्रसार के आधार पर आत्मा की गहराइयों से उत्पन्न होने वाली आंतरिक हदबंदी।
निष्पक्ष हदबंदी, जिसका प्रतिनिधित्व सीमित करने वाले क़ानूनों के द्वारा होता है, जो विशिष्ट कार्यों पर रोक लगाते हैं जैसे : धोखा, जुआ, सूदखोरी इत्यादि।

अल्लाह तआला ने कहा है :
"ऐ ईमान वालो! कई-कई गुणा करके ब्याज न खाओ। तथा अल्लाह से डरो, ताकि तुम सफल हो।" [191] [सूरा आल-ए-इमरान : 130] "और तुम ब्याज पर जो (उधार) देते हो, ताकि वह लोगों के धनों में मिलकर अधिक हो जाए, तो वह अल्लाह के यहाँ अधिक नहीं होता। तथा तुम अल्लाह का चेहरा चाहते हुए जो कुछ ज़कात से देते हो, तो वही लोग कई गुना बढ़ाने वाले हैं।" [192] [सूरा अल-रूम : 39] "(ऐ नबी!) वे आपसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं। आप बता दें कि इन दोनों में बड़ा पाप है तथा लोगों के लिए कुछ लाभ हैं, और इन दोनों का पाप इनके लाभ से बड़ा है। तथा वे आपसे पूछते हैं कि क्या चीज़ ख़र्च करें। (उनसे) कह दीजिए जो आवश्यकता से अधिक हो। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों को स्पष्ट करता है, ताकि तुम सोच-विचार करो।" [193] [सूरा अल-बक़रा : 219] पूंजीवाद ने मनुष्य के लिए एक स्वतंत्र पद्धति तैयार किया है, और वह उसी के अनुसार चलने का आह्वान करता है। पूंजीवाद का यह दावा है कि यह उदार पद्धति है, जो इंसान को विशुद्ध सुख की ओर ले जाएगा। लेकिन मनुष्य अंततः खुद को एक वर्गों में बटे हुए समाज में गोता लगाता हुआ पाता है, जहाँ या तो दूसरों पर अत्याचार पर आधारित बहुत ज़्यादा मालदारी होती है या नैतिक रूप से प्रतिबद्ध लोगों के लिए घोर गरीबी होती है। साम्यवाद आया और सभी वर्गों को निरस्त कर दिया तथा अधिक ठोस सिद्धांत बनाने की कोशिश की, लेकिन इसने ऐसे समाजों का निर्माण किया, जो दूसरों की तुलना में अधिक गरीब, अधिक दुखी और अधिक उपद्रवी हैं।
मगर इस्लाम ने संतुलन को सुनिश्चित किया। मुस्लिम समुदाय एक संतुलित समुदाय है। इसने मानवता को एक महान व्यवस्था प्रदान की, जिसकी गवाही खुद इस्लाम के दुश्मनों ने भी दी है। फिर भी कुछ मुसलमान इस्लाम के महान मूल्यों का पालन करने में विफल हैं।

क्या इस्लाम एक अतिवादी धर्म है?

अतिवाद, कठोरता और असहिष्णुता यह ऐसे गुण हैं, जिनसे सच्चे धर्म ने मूल रूप से मना किया है। पवित्र क़ुरआन ने कई आयतों में व्यवहार में दया और करुणा को अपनाने और क्षमा और सहिष्णुता के सिद्धांत पर चलने का आह्वान किया है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"अल्लाह की दया के कारण (ऐ नबी!) आप उनके लिए सरल स्वभाव के हैं। और यदि आप प्रखर स्वभाव और कठोर हृदय के होते, तो वे आपके पास से छट जाते। अतः आप उन्हें माफ़ कर दें और उनके लिए क्षमा याचना करें। तथा उनसे मामलों में परामर्श करें। फिर जब आप दृढ़ संकल्प कर लें, तो अल्लाह पर भरोसा करें। निःसंदेह अल्लाह भरोसा करने वालों को पसंद करता है।" [194] [सूरा आल-ए-इमरान : 159] "(ऐ नबी!) आप उन्हें अपने पालनहार के मार्ग (इस्लाम) की ओर हिकमत तथा सदुपदेश के साथ बुलाएँ और उनसे ऐसे ढंग से वाद-विवाद करें, जो सबसे उत्तम है। निःसंदेह आपका पालनहार उसे सबसे अधिक जानने वाला है, जो उसके मार्ग से भटक गया और वही सीधे मार्ग पर चलने वालों को भी अधिक जानने वाला है।" [195] [सूरा अल-नह्ल : 125]
धर्म में असल हलाल है, सिवाय कुछ गिने चुने हराम चीज़ों के, जिनका क़ुरआन में स्पष्ट उल्लेख हुआ है, जिनसे कोई असहमत नहीं है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"ऐ आदम की संतान! प्रत्येक नमाज़ के समय अपनी शोभा धारण करो। तथा खाओ और पियो और हद से आगे न बढ़ो। निःसंदेह वह हद से आगे बढ़ने वालों से प्रेम नहीं करता। (ऐ नबी!) कह दें : किसने अल्लाह की उस शोभा को, जिसे उसने अपने बंदों के लिए पैदा किया है तथा खाने-पीने की पवित्र चीज़ों को हराम किया है? आप कह दें : ये चीज़ें सांसारिक जीवन में (भी) ईमान वालों के लिए हैं, जबकि क़ियामत के दिन केवल उन्हीं के लिए विशिष्ट होंगी। इसी तरह, हम निशानियों को उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करते हैं, जो जानते हैं। (ऐ नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने तो केवल खुले एवं छिपे अश्लील कर्मों को तथा पाप एवं नाहक़ अत्याचार को हराम किया है, तथा इस बात को कि तुम उसे अल्लाह का साझी बनाओ, जिस (के साझी होने) का कोई प्रमाण उसने नहीं उतारा है तथा यह कि तुम अल्लाह पर ऐसी बात कहो, जो तुम नहीं जानते।" [196] [सूरा अल-आराफ़ : 31-33]
धर्म ने अतिवाद, सख़्ती और बिना शर्ई प्रमाण के किसी चीज़ को वर्जित करने को शैतानी कार्य कहा है तथा इससे धर्म का कोई संबंध नहीं है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
“ऐ लोगो! उन चीज़ों में से खाओ जो धरती में हलाल, पाकीज़ा हैं और शैतान के पदचिह्नों का अनुसरण न करो। निःसंदेह वह तुम्हारा खुला शत्रु है। वह तो तुम्हें बुराई और निर्लज्जता ही का आदेश देता है और यह कि तुम अल्लाह पर वह बात कहो, जो तुम नहीं जानते।” [197] [सूरा अल-बक़रा : 168,169] "और मैं उन्हें अवश्य पथभ्रष्ट करूँगा, और उन्हें अवश्य आशाएँ दिलाऊँगा और उन्हें अवश्य आदेश दूँगा तो वे पशुओं के कान चीरेंगे तथा निश्चय उन्हें आदेश दूँगा, तो वे अवश्य अल्लाह की रचना में परिवर्तन करेंगे। तथा जो अल्लाह को छोड़कर शैतान को अपना मित्र बना ले, वह निश्चय खुले घाटे में पड़ गया।” [सूरा अल-निसा : 119]

क्या इस्लाम एक संतुलित तथा आसान धर्म है?

धर्म मूल रूप से लोगों को उनके द्वारा खुद पर लगाए गए कई प्रतिबंधों से राहत दिलाने के लिए आता है। उदाहरण स्वरूप, इस्लाम से पूर्व जाहिलियत के समय कई घिनौनी प्रथाएँ फैल गई थीं, जैसे लड़कियों को ज़िंदा दफ़न कर देना, कुछ प्रकार के खानों को मर्दों के लिए हलाल एवं औरतों के लिए हराम कर देना, औरतों को विरासत से महरूम कर देना, इसी तरह मुरदार खाना, व्यभिचार, शराब पीना, यतीम का माल खाना और सूदखोरी आदि दूसरे ग़लत कार्य। लोगों के धर्म से विमुख होने और भौतिक विज्ञान को ही अपना लेने का एक प्रमुख कारण कुछ लोगों के यहाँ कुछ धार्मिक अवधारणाओं में अंतर्विरोधों का पाया जाना है। इसलिए, जो कारण तथा विषेशताएँ लोगों को सही धर्म अपनाने के लिए आमंत्रित करती हैं, उनमें सबसे महत्वपूर्ण कारण उसका संतुलित होना है और यह बात हम इस्लाम धर्म में स्पष्ट रूप से पाते हैं।
अन्य धर्मों की समस्या, जो एक सच्चे धर्म की विकृति से उत्पन्न हुई है :

शुद्ध आध्यात्मिकता है, जो अपने अनुयायियों को वैराग्य तथा एकांतवाद के लिए प्रोत्साहित करती है
शुद्ध भौतिकवाद।
यह पिछले संप्रदायों और जातियों के बहुत-से लोगों को आम तौर पर धर्म से दूर करने का कारण बना।
साथ ही हम कुछ अन्य लोगों के यहाँ बहुत सारे गलत क़ानून, आदेश और प्रथाएँ पाते हैं, जिन्हें धर्म से जोड़ दिया गया है, ताकि लोगों को उनका पालन करने पर मजबूर किया जा सके, जिन्होंने लोगों को सही रास्ता एवं स्वाभाविक धर्म की अवधारणा से दूर कर दिया। इस तरह बहुत सारे लोग धर्म की सच्ची अवधारणा, जो मनुष्य की स्वाभाविक ज़रूरतों को पूरा करता है और जिससे कोई असहमत नहीं है, तथा बाप-दादा से विरासत में पाए कामों, आदतों, रस्म-रिवाजों एवं मानव निर्मित क़ानूनों के बीच अंतर करने की क्षमता खो देते हैं, जो बाद में धर्म को आधुनिक विज्ञान से बदलने की मांग को जन्म देता है।
सच्चा धर्म वह है जो लोगों को राहत देने और उनके दुखों को दूर करने और ऐसे नियमों और क़ानूनों को स्थापित करने के लिए आता है, जिनका पहला उद्देश्य लोगों के लिए आसानी पैदा करना है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
“और तुम अपने आप को क़त्ल न करो। बेशक अल्लाह तुमपर दया करने वाला है।" [199] [सूरा अल-निसा : 29] "और अपने आपको विनाश में न डालो तथा नेकी करो, निःसंदेह अल्लाह नेकी करने वालों से प्रेम करता है।"। [200] [सूरा अल-बक़रा : 195] "तथा उनके लिए पाकीज़ा चीज़ों को हलाल (वैध) करता और उनपर अपवित्र चीज़ों को हराम (अवैध) ठहराता है और उनसे उनका बोझ और वह तौक़ उतारता है, जो उनपर पड़े हुए थे।" [201] [सूरा अल-आराफ़ : 157]
तथा अल्लाह के नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- का फ़रमान है :
"आसानी पैदा करो और कठिनाई में न डालो, तथा सुसमाचार सुनाओ एवं नफ़रत न दिलाओ।" [202] [सहीह बुख़ारी]
यहाँ हम उन तीन व्यक्तियों की कहानी का उल्लेख करना चाहेंगे, जो आपस में बात कर रहे थे। उनमें से एक ने कहा कि मैं पूरी रात नमाज़ पढ़ूँगा, दूसरे ने कहा कि मैं पूरे साल रोज़ा रखूँगा और कभी बेरोज़ा नहीं रहूँगा। जबकि तीसरे ने कहा कि मैं औरत से दूर रहूँगा और कभी शादी नहीं करूँगा। चुनाँचे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास आए और फरमाया :
"तुम लोग यह और यह कह रहे थे? अल्लाह की क़सम, मैं तुम्हारे अंदर अल्लाह से सबसे अधिक डरने वाला और उसका सबसे अधिक भय करने वाला हूँ। परन्तु मैं रोज़ा रखता हूँ, बेरोज़ा भी रहता हूँ, नमाज़ पढ़ता हूँ, सोता भी हूँ और औरतों से शादी भी करता हूँ। अतः जो मेरी सुन्नत से मुँह मोड़ेगा वह मुझमें से नहीं है।" [203] [सहीह बुख़ारी]
आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बात अब्दुल्लाह बिन अम्र के सामने भी स्पष्ट रूप से कह दी थी, जब आपको मालूम हुआ था कि वह पूरी रात नमाज़ पढ़ते हैं, पूरे साल रोज़ा रखते हैं और हर रात एक क़ुरआन ख़त्म करते हैं। आपने फरमाया था : "ऐसा मत करो। नमाज़ भी पढ़ो और सोओ भी, रोज़ा भी रखो और बेरोज़ा भी रहो। इसलिए कि तुम्हारे शरीर का तुमपर हक़ है, तुम्हारी आँख का तुमपर हक़ है, तुम्हारे अतिथियों का तुमपर हक़ है और तुम्हारी पत्नी का तुमपर हक़ है।" [204] [सहीह बुख़ारी]

इस्लाम में स्त्री का स्थान :
मुस्लिम महिलाएँ पर्दा क्यों करती हैं?

अल्लाह तआला ने कहा है :
"ऐ नबी! अपनी पत्नियों, अपनी बेटियों और ईमान वाले लोगों की स्त्रियों से कह दें कि वे अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें। यह इसके अधिक निकट है कि वे पहचान ली जाएँ, फिर उन्हें कष्ट न पहुँचाया जाए। और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला, अत्यंत दयावान् है।" [205] [सूरा अल-अहज़ाब : 59] मुस्लिम महिला विशिष्टता शब्द के अर्थ को अच्छी तरह समझती है। जब वह अपने बाप, भाई, बेटा एवं पति से प्यार करती है, तो समझती है कि उनमें से हर एक के साथ प्यार की एक विशिष्टता है। अपने पति, अपने पिता या अपने भाई से उसकी मोहब्बत उनमें से हर एक को उसका अधिकार देने की माँग करती है। उसके पिता का उसपर अधिकार है कि उसका सम्मान हो, भलाई के साथ पेश आया जाए, इसी तरह उसके बेटे का उसपर हक़ है कि उसकी देख-भाल हो एवं शिक्षा दी जाए। वह अच्छी तरह समझती है कि कब, कैसे और किसके सामने अपनी शोभा ज़ाहिर करनी है। वह किसी अजनबी के साथ मिलते समय उस तरह का कपड़ा नहीं पहनती, जिस तरह का कपड़ा किसी क़रीबी के साथ मिलते समय पहनती है। वह एक ही हालत में सबके सामाने नहीं आती। मुसलमान महिला एक स्वतंत्र महिला है। उसने दूसरों की ख़्वाहिश और फैशन के सामने बंदी बनने से इनकार कर दिया है। वह, उस तरह कपड़ा पहनती है जो उसके लिए उचित हो, जो उसे ख़ुशी प्रदान करे और उसके सृष्टिकर्ता को राज़ी करे। देखिए, कैसे पश्चिम में महिलाएँ फैशन और फैशन हाउसों की गुलाम बन गई हैं। यदि उनसे कहा जाए कि इस साल का फैशन छोटी, टाइट पैंट पहनने का है, तो महिलाएँ उसे पहनने के लिए दौड़ पड़ती हैं और यह नहीं देखती हैं कि यह उनके लिए फिट है या उसे पहनने में उन्हें आराम महसूस होता है या नहीं। आज महिलाओं की स्थिति किसी से छिपी नहीं है, जब उन्हें एक वस्तु बना दिया गया है। लगभग हर विज्ञापन या प्रकाशन में नग्न महिला की तस्वीर होती है, जो पश्चिमी महिलाओं को इस युग में उनके मूल्य का एक अप्रत्यक्ष संदेश देता है। मुस्लिम महिला का अपनी ख़ूबसूरती को छुपाना, यह पूरी दुनिया को एक संदेश है कि वह बहुमूल्य इंसान और अल्लाह की ओर से सम्मानीय है। जो उससे बरताव करना चाहे उसके लिए अनिवार्य है कि वह उसके ज्ञान, सभ्यता, उसके दृढ़ विश्वास और विचार को देखकर निर्णय ले, न कि उसके जिस्म की ख़ूबसूरती को देखकर। मुस्लिम महिला इस बात को भी समझती है कि मानव स्वभाव, जिसपर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है, उसकी मांग यह है कि समाज की रक्षा और अपने आपको कष्ट से बचाने के लिए वह अपनी ख़ूबसूरती को अजनबियों के सामने प्रकट न करे। मैं समझता हूँ कि इस तथ्य का कोई इंकार नहीं करेगा कि एक ख़ूबसूरत लड़की जो खुलेआम अपनी ख़ूबसूरती जाहिर करने में गर्व महसूस करती है, जब वह बुढ़ापे को पहुँचती है, तो यह इच्छा करती है कि काश सभी महिलाएँ पर्दा करतीं। लोगों को आज प्लास्टिक सर्जरी के कारण होने वाली मृत्यु और अपंगता दर के आँकड़ों पर विचार करना चाहिए कि किस चीज़ ने महिला को यह सब पीड़ा सहने के लिए प्रेरित किया? बात

दरअसल यह है कि पुरुषों ने उसे बौद्धिक सुंदरता के बजाय शारीरिक सुंदरता की प्रतिस्पर्धा में शामिल होने पर मजबूर किया, जिसने उसके सही मूल्य को, यहाँ तक कि उसके जीवन को भी नष्ट कर दिया।

क्या महिला का सर ढाँपना रूढ़िवादिता और पिछड़ापन है?

यदि सर ढ़ाँपना पिछड़ापन है तो क्या आदम -अलैहिस्सलाम- के पीछे भी कोई युग है? जबसे अल्लाह ने आदम -अलैहिस्सलाम- एवं उनकी पत्नी को पैदा किया और उन्हें जन्नत में जगह दी, उसी समय से उनके लिए पर्दा एवं लिबास उपलब्ध कराया है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"निःसंदेह तुम्हारे लिए यह है कि तुम इसमें न भूखे होगे और न नग्न होगे।" [206] [सूरा ताहा: 118] इसी प्रकार अल्लाह ने आदम की संतान के लिए लिबास उतारा, ताकि वे उससे पर्दा करें एवं शोभा एख़्तियार करें। उसी समय से मनुष्य अपने लिबास को विकसित करता रहा। जातियों के विकास को कपड़ों और पर्दे के विकास से मापा जाता है। यह ज्ञात है कि सभ्यता से अलग-थलग रहने वाले लोग, जैसे कि कुछ अफ्रीकी जाति, गुप्त अंग को ढकने के अलावा कुछ नहीं पहनते हैं।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"ऐ आदम की संतान! निश्चय हमने तुमपर वस्त्र उतारा है, जो तुम्हारे गुप्तांगों को छिपाता है और शोभा भी है। और तक़्वा (अल्लाह की आज्ञाकारिता) का वस्त्र सबसे अच्छा है। यह अल्लाह की निशानियों में से है, ताकि वे उपदेश ग्रहण करें।" [207] [सूरा अल-आराफ़ : 26] एक पश्चिमी व्यक्ति अपनी दादी की स्कूल जाते समय की तस्वीरों को देख सकता है और देख सकता है कि उसने क्या पहना था। जब पहली बार स्विमवियर सामने आया, तो उसके खिलाफ यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में प्रदर्शन हुए, क्योंकि यह प्रवृत्ति और प्रथा के खिलाफ था। इन प्रदर्शनों के पीछे धार्मिक कारण नहीं थे। चुनांचे निर्माण कंपनियों ने पांच साल की लड़कियों का उपयोग करके व्यापक विज्ञापन बनाने पर काम किया, ताकि वे शुरुआत में इसमें दिखाई दें, ताकि महिलाओं को इसे पहनने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। स्विमवियर पहनकर चलने वाली पहली बच्ची बहुत शर्मीली दिखाई दी और वह शो जारी नहीं रख सका। उस समय महिला और पुरुष पूरे शरीर को ढकने वाले काले और सफेद स्विमसूट में तैरते थे

इस्लाम में पुरुष और महिलाएं अपने शरीर को एक समान क्यों नहीं ढकते हैं?

पुरुषों और महिलाओं के बीच शारीरिक संरचना में अंतर है, इस बात पर दुनिया एकमत है। इसका एक स्पष्ट प्रमाण यह है कि पुरुषों की तैराकी के कपड़े पश्चिम में महिलाओं के कपड़ों से अलग हैं। फ़ितना को दूर करने के लिए महिला अपना पूरा शरीर ढाँपती है। क्या किसी ने कभी किसी महिला के किसी पुरुष का बलात्कार करने की घटना सुनी है? पश्चिम में महिलाएं उत्पीड़न या बलात्कार से सुरक्षित जीवन के अपने अधिकारों की मांग को लेकर प्रदर्शनों में भाग लेती रहती हैं, जबकि हमने पुरुषों द्वारा इस तरह के प्रदर्शनों के बारे में कभी नहीं सुना है।

क्या इस्लाम ने स्त्रियों के लिए पुरुषों के साथ बराबरी सुनिश्चित की है?

मुस्लिम महिलाएं न्याय चाहती हैं, समानता नहीं। पुरुषों के साथ समानता से वह अपने कई अधिकारों और विशेषताओं को खो देंगी। मान लीजिए किसी व्यक्ति के दो पुत्र हैं। उनमें से एक की उम्र पांच साल और दूसरे की उम्र अठारह साल है। वह व्यक्ति दोनों के लिए एक-एक शर्ट खरीदना चाहता है। अब यहाँ समानता उसी स्थिति में प्राप्त होगी जब दोनों शर्ट एक ही माप की खरीदी जाए, जो दोनों के लिए परेशानी का कारण बनेगा। लेकिन न्याय यह है कि उनमें से प्रत्येक के लिए उचित माप की शर्ट खरीदी जाए। इस प्रकार दोनों खुश हो जाएँगे। इस समय महिलाएं यह साबित करने की कोशिश कर रही हैं कि वे वह सब कुछ कर सकती हैं जो एक पुरुष कर सकता है। जबकि, वास्तव में महिलाएं इस स्थिति में अपनी विशिष्टता और विशेषाधिकार दोनों खो देती हैं। अल्लाह ने उन्हें वह करने के लिए बनाया है, जो कोई पुरुष नहीं कर सकता है। यह साबित हो चुका है कि प्रसव और प्रसव पीड़ा सबसे गंभीर पीड़ाओं में से एक है। इस परेशानी के बदले धर्म महिलाओं को आवश्यक सम्मान देने आया है। उसे गुज़ारा भत्ता और काम की ज़िम्मेदारी न लेने का अधिकार देता है, यहां तक कि उसके पति को यह अधिकार नहीं कि पत्नी के निजी धन में अपना हिस्सा तक लगाए, जैसा कि पश्चिम में करते हैं। दूसरी तरफ़ अल्लाह ने आदमी को बच्चे के जन्म के दर्द को सहन करने की ताकत नहीं दी है। लेकिन, उदाहरण के तौर पर उसने उसे पहाड़ों पर चढ़ने की क्षमता दी है। अगर एक महिला को पहाड़ों पर चढ़ना, काम करना और मेहनत करना पसंद हो और वह दावा करती हो कि वह एक पुरुष की तरह ही ऐसा कर सकती है, तो वह ऐसा करती तो है, लेकिन अंत में, उसी को बच्चों को जन्म भी देना होगा, उनकी देख-भाल भी करनी होगी एवं उन्हें दूध भी पिलाना होगा। क्योंकि मर्द यह काम किसी भी स्थिति में नहीं कर सकता है। यह औरत पर दोहरा बोझ होगा, जिससे वह बच सकती थी।

इस तथ्य को बहुत-से लोग नहीं जानते हैं कि जब कोई मुस्लिम महिला संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से अपने अधिकारों की माँग करती है और इस्लाम में मिले अपने अधिकारों को त्याग देना चाहती है, तो नुक़सान उसी का होता है। इसलिए कि उसे इस्लाम में अधिक अधिकार प्राप्त हैं। इस्लाम उस एकीकरण को प्राप्त करता है, जिसके लिए पुरुष और महिला को बनाया गया है, जो सभी को खुशी प्रदान करता है।

इस्लाम बहुविवाह की अनुमति क्यों देता है?

वैश्विक आँकड़ों के अनुसार, पुरुषों और महिलाओं का जन्म लगभग समान दर से होता है। यह वैज्ञानिक रूप से ज्ञात है कि महिला बच्चों के बचने और जीवित रहने की संभावना लड़कों की तुलना में अधिक होती है। युद्धों में पुरुषों की हत्या का प्रतिशत महिलाओं की तुलना में अधिक होता है। इसी तरह यह भी वैज्ञानिक रूप से ज्ञात है कि महिलाओं का औसत जीवनकाल पुरुषों की तुलना में अधिक होता है। नतीजतन, दुनिया में महिला विधवाओं का प्रतिशत पुरुष विधवाओं की तुलना में अधिक है। इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि विश्व में स्त्रियों की जनसंख्या पुरुषों की जनसंख्या से अधिक है। तदनुसार, प्रत्येक पुरुष को एक पत्नी तक सीमित रखना व्यवहारिक दृष्टि से उचित नहीं हो सकता है। ऐसे समाजों में, जहां बहुविवाह कानूनी रूप से प्रतिबंधित है, पुरुषों के लिए पत्नी के अतिरिक्त कई प्रेमिकाएं और विवाहेतर संबंध होना आम बात है। यह बहुविवाह की एक अंतर्निहित स्वीकृति है, लेकिन यह उनके यहाँ अवैध है। इस्लाम से पहले यही स्थिति आम थी।

इस्लाम इसे ठीक करने, महिलाओं के अधिकारों और सम्मान की रक्षा करने और उन्हें एक प्रेमिका से एक ऐसी पत्नी में बदलने के लिए आया है, जिसके पास अपने और अपने बच्चों के लिए गरिमा और अधिकार हों। आश्चर्यजनक रूप से, इन समाजों को गैर-विवाहित संबंधों या समलैंगिक विवाहों को स्वीकार करने में कोई समस्या नहीं है। साथ ही स्पष्ट जिम्मेदारी के बिना स्थापित रिश्तों को स्वीकार करने या यहां तक कि बिना पिता के बच्चों को स्वीकार करने में भी कोई परेशानी नहीं है। परन्तु, यह एक पुरुष और एक से अधिक महिलाओं के बीच क़ानूनी विवाह को बर्दाश्त नहीं करते हैं। दूसरी तरफ़ इस्लाम इस मामले में बुद्धिमान है। वह महिलाओं की गरिमा और अधिकारों को बनाए रखने के लिए पुरुष को कई पत्नियां रखने की अनुमति देता है, जब तक उसकी चार से कम पत्नियाँ हों और न्याय और क्षमता की शर्त पाई जाए। उसने यह अनुमति उन महिलाओं की समस्या को हल करने के लिए दी है, जो एक अविवाहित पति नहीं पाती हैं और उनके पास विवाहित पुरुष से शादी करने या रखैल बनने के लिए मजबूर होने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता है।
हालाँकि इस्लाम बहुविवाह की अनुमति देता है, लेकिन ऐसा नहीं है जैसा कि कुछ लोग समझते हैं कि एक मुसलमान को एक से अधिक महिलाओं से शादी करने के लिए मजबूर किया जाता है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"और यदि तुम्हें डर हो कि अनाथ लड़कियों (से विवाह) के मामले में न्याय न कर सकोगे, तो अन्य औरतों में से जो तुम्हें पसंद हों, दो-दो, या तीन-तीन, या चार-चार से विवाह कर लो। लेकिन यदि तुम्हें डर हो कि (उनके बीच) न्याय नहीं कर सकोगे, तो एक ही से विवाह करो अथवा जो दासी तुम्हारे स्वामित्व में हो (उससे लाभ उठाओ)। यह इस बात के अधिक निकट है कि तुम अन्याय न करो।" [208] [सूरा अल-निसा : 3]
क़ुरआन दुनिया की एकमात्र धार्मिक किताब है, जो बताती है कि न्याय की शर्त पूरी न होने पर केवल एक पत्नी रखनी चाहिए।
अल्लाह तआला ने कहा है :
“और तुम पत्नियों के बीच पूर्ण न्याय कदापि नहीं कर[83] सकते, चाहे तुम इसके कितने ही इच्छुक हो। अतः (अवांछित पत्नी से) पूरी तरह विमुख न हो जाओ कि उसे अधर में लटकी हुई छोड़ दो। और यदि तुम आपस में सामंजस्य बना लो और (अल्लाह से) डरते रहो, तो निःसंदेह अल्लाह क्षमा करने वाला, अत्यंत दयावान है।” [209] [सूरा अल-निसा : 129]
फिर भी शादी के लिए इस शर्त को शामिल करने के बाद औरत को यह अधिकार प्राप्त है कि वह अपने पति की एकमात्र पत्नी बनी रहे। क्योंकि यह मूल शर्त है, जिसका पालन अनिवार्य है और उसे तोड़ना जायज़ नहीं है।

एक महिला को एक ही समय में चार पुरुषों से शादी करने का अधिकार क्यों नहीं है, जैसा कि एक पुरुष को है?

एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु जिसे आधुनिक समाज में अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है, वह अधिकार है, जो इस्लाम ने महिलाओं को दिया है और पुरुषों को नहीं दिया है। एक पुरुष की शादी केवल अविवाहित महिलाओं तक ही सीमित है। जबकि एक महिला अविवाहित या विवाहित पुरुष से शादी कर सकती है। यह बच्चों के वास्तविक पिता के वंश को सुनिश्चित रखने और बच्चों के अधिकारों और उनके पिता से वरासत की रक्षा के लिए है। इस्लाम एक महिला को एक विवाहित पुरुष से शादी करने की अनुमति देता है, जब तक कि उसकी चार से कम पत्नियाँ हों, अगर न्याय और क्षमता की शर्त पूरी होती हो। इसलिए महिलाओं के पास पुरुषों में से चुनने के लिए अधिक विकल्प हैं। इसी प्रकार उसके पास दूसरी पत्नी के साथ होने वाले व्यवहार को जानने का अवसर भी है, ताकि वह शादी करने से पहले इस पति के चरित्र को अच्छी तरह जान सके। भले ही हम विज्ञान के विकास के साथ डीएनए की जांच कर बच्चों के अधिकार के संरक्षण की संभावना को स्वीकार करें, परन्तु बच्चों का क्या दोष है कि जब वे बाहर संसार में आएं और अपनी माँ को अपने पिता से इस परीक्षा के माध्यम से मिलाते हुए पाएं? अगर ऐसा होता है, तो उनकी मनोदशा क्या होगी? फिर एक महिला इस अस्थिर मिजाज के साथ, जो उसके पास है, चार पुरुषों की पत्नी की भूमिका कैसे निभा सकती है? इसके अलावा एक ही समय में एक से अधिक पुरुषों के साथ उसके संबंध के कारण होने वाली बीमारियाँ अलग हैं।

इस्लाम में औरतों पर मर्दों को मालिक क्यों बनाया गया है?

मर्द का औरत पर पर्यवेक्षक बनाया जाना औरत का सम्मान एवं मर्द की ज़िम्मेदारी बढ़ाना है, क्योंकि मर्द औरत की देख-भाल तथा उसकी ज़रूरतों को पूरा करता है। मुस्लिम महिलाएँ रानी की भूमिका निभाती हैं, जिसकी आशा पृथ्वी की हर महिला करती है। होशियार महिला वह है, जो वही चुनती है, जो उसे होना चाहिए। या तो एक सम्मानित रानी या सड़क पर काम करने वाली एक कामगार।
अगर हम मान लें कि कुछ मुस्लिम पुरुष इस संरक्षण का गलत इस्तेमाल करते हैं, तो यह संरक्षण प्रणाली का दोष नहीं है, बल्कि इसका दुरुपयोग करने वालों का दोष है।

इस्लाम में पुरुष को जो विरासत में मिलता है, औरत को उसका आधा हिस्सा क्यों मिलता है?

इस्लाम से पहले, महिलाओं को विरासत से वंचित कर दिया गया था। जब इस्लाम आया, तो उसे विरासत में शामिल किया। औरत को पुरुषों की तुलना में अधिक या उनके बराबर हिस्सा भी मिलता है। कुछ हालतों में वह उत्तराधिकारी बन जाती है और पुरुष नहीं बन पाता। जबकि अन्य हालतों में रिश्तेदारी और वंश के दर्जे के अनुसार पुरुषों को महिलाओं की तुलना में अधिक अनुपात प्राप्त होता है। यही वह हालत है जिसके बारे में पवित्र क़ुरआन कहता है : "अल्लाह तुम्हारी संतान के संबंध में तुम्हें आदेश देता है कि पुत्र का हिस्सा, दो पुत्रियों के बराबर है।" [210] [सूरा अल-निसा : 11] एक मुस्लिम महिला ने एक बार कहा कि वह इस बात को तब तक नहीं समझ पाई, जब तक कि उसके पति के पिता की मृत्यु नहीं हो गई और उसके पति को अपनी बहन की तुलना में दोगुनी राशि विरासत में मिली। उसके पति ने उन पैसों से एक कार और अपने परिवार के एक निजी घर के लिए आवश्यक चीजें खरीदीं। जबकि उसकी बहन ने मिले पैसों से गहने खरीदे और बाकी पैसों को बैंक में जमा कर दिया।

क्योंकि उसके पति को ही आवास और अन्य मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध करानी थीं। तब उस महिला ने इस आदेश की हिकमत को समझा और अल्लाह का शुक्र अदा किया। कई समाजों में महिलाएं अपने परिवार की देखभाल के लिए कड़ी मेहनत भी करती हैं, लेकिन इसकी वजह से विरासत का नियम नहीं बिगड़ेगा। क्योंकि, उदाहरण के तौर पर किसी फोन के मालिक द्वारा ऑपरेटिंग निर्देशों का पालन न करने के कारण किसी भी मोबाइल फोन का खराब हो जाना, ऑपरेटिंग निर्देशों के ख़राब होने का प्रमाण नहीं है।

इस्लाम ने पुरुष के लिए महिला को मारने की अनुमति क्यों दी?

मुहम्मद -शांति और आशीर्वाद उनपर हो- ने अपने जीवन में कभी किसी महिला को नहीं मारा। जहाँ तक क़ुरआन की उस आयत का संबंध है, जिसमें मारने के बारे में बताया गया है, तो इसका अर्थ अवज्ञा के मामले में हल्की मार है। किसी समय संयुक्त राज्य अमेरिका के मानव निर्मित क़ानून में इस प्रकार की मार की विशेषता बयान की गई है कि ऐसी मार हो जो शरीर पर कोई प्रभाव न छोड़े। दरइसल सका सहारा उससे बड़े खतरे को रोकने के लिए लिया जाता है। जैसे कि कोई अपने बेटे को गहरी नींद से जगाने पर उसके कंधे को हिलाता है, ताकि उससे परीक्षा का समय न छूट जाए।
आइए एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें, जो अपनी बेटी को खिड़की के सिरे पर खड़ा पाता है, ताकि वह स्वयं को गिरा ले। ऐसे में उसके हाथ अनैच्छिक रूप से उसकी ओर बढ़ेंगे और वह उसे पकड़ कर पीछे धकेल देगा, ताकि वह ख़ुद को नुक़सान न पहुँचाए। यहाँ औरत को मारना उद्देश्य नहीं होता, बल्कि पति की कोशिश उसके घर और उसकी औलाद के भविष्य को बर्बाद करने से पत्नी को रोकने की होती है।
वह भी, यह मर्हला कई चरणों के बाद आता है, जैसा कि आयत में बताया गया है :
"फिर तुम्हें जिन औरतों की अवज्ञा का डर हो, उन्हें समझाओ और सोने के स्थानों में उनसे अलग रहो तथा उन्हें मारो। फिर यदि वे तुम्हारी बात मानें, तो उनके विरुद्ध कोई रास्ता न ढूँढो। निःसंदेह अल्लाह सर्वोच्च, सबसे बड़ा है।" [211] [सूरा अल-निसा : 34]
सामान्य तौर पर महिलाओं की कमजोरी को देखते हुए इस्लाम ने उन्हें अधिकार दिया है कि अगर पति उनके साथ दुर्व्यवहार करता है, तो वह न्यायपालिका का सहारा ले सकती हैं।
इस्लाम में वैवाहिक संबंधों का मूल सिद्धांत यह है कि यह स्नेह, शांति और दया पर आधारित हो।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"ततथा उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्ही में से जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके पास शांति प्राप्त करो। तथा उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया रख दी। निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं, जो सोच-विचार करते हैं।" [212] [सूरा अल-रूम : 21]

इस्लाम ने महिलाओं को सम्मान कैसे दिया?

इस्लाम ने महिलाओं को आदम के पाप के बोझ से मुक्त करके उन्हें सम्मानित किया, जबकि अन्य धर्मों में उसे इससे मुक्त नहीं किया गया है।
इस्लाम में है कि अल्लाह ने आदम -अलैहिस्सलाम- को क्षमा कर दिया और हमें सिखाया कि यदि जीवन में कभी भी पाप हो जाए तो हम उसको कैसे क्षमा करवा सकते हैं।
"फिर आदम ने अपने पालनहार से कुछ शब्द सीख लिए, तो उसने उसकी तौबा क़बूल कर ली। निश्चय वही है जो बहुत तौबा क़बूल करने वाला, अत्यंत दयावान् है।" [213] [सूरा अल बक़रा : 37]
मसीह की माँ मरयम एकमात्र ऐसी औरत हैं, जिसका उल्लेख पवित्र क़ुरआन में उसके नाम के साथ किया गया है।
क़ुरआन में उल्लिखित कई कहानियों में महिलाओं ने प्रमुख भूमिका निभाई है। जैसा कि सबा की रानी बिलक़ीस और पैगंबर सुलैमान -अलैहिस्सलाम- के साथ उनकी कहानी, जो उनके ईमान लाने और सारे संसार के पालनहार के प्रति समर्पण के साथ समाप्त हुई। जैसा कि पवित्र क़ुरान में कहा गया है : "निःसंदेह मैंने एक महिला को पाया, जो उनपर शासन कर रही है तथा उसे हर चीज़ का हिस्सा दिया गया है और उसके पास एक बड़ा सिंहासन है।" [214] [सूरा अल-नम्ल : 23]
इस्लामी इतिहास हमें बताता है कि पैगंबर मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने बहुत सारी चीज़ों में महिलाओं से परामर्श किया और उनकी राय ली। इसी तरह आपने महिलाओं को भी पुरुषों की तरह मस्जिदों में आने की अनुमति दी, बशर्तेकि वे शालीनता का पालन करें, लेकिन ज्ञात हो कि उनके लिए अपने घर में नमाज़ पढ़ना ही बेहतर है। महिलाएँ पुरुषों के साथ युद्धों में भाग लेती थीं और ज़ख़्मियों की देखभाल में सहायता करती थीं। इसी तरह वे वाणिज्यिक लेन-देन में भी शामिल होती थीं और शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा करती थीं।
प्राचीन अरब संस्कृतियों की तुलना में इस्लाम ने महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार किया है। उसने कन्या हत्या पर रोक लगाई और महिलाओं को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाया। उसने विवाह के संबंध में संविदात्मक मामलों को भी व्यवस्थित किया, जहाँ महिलाओं के लिए महर के अधिकार को संरक्षित किया, उन्हें विरासत का अधिकार तथा निजी संपत्ति का अधिकार दिया और यह हक़ दिया कि अपने धन का खुद प्रबंध कर सकती हैं।
अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "सबसे सम्पूर्ण ईमान वाला व्यक्ति वह है, जो सबसे अच्छे आचरण वाला हो और तुम्हारे अंदर सबसे उत्तम व्यक्ति वह है, जो अपनी पत्नियों के हक़ में सबसे अच्छा हो।" [215] [इसे इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।]
अल्लाह तआला ने कहा है :
"निःसंदेह मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रियाँ, ईमान वाले पुरुष और ईमान वाली स्त्रियाँ, आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारिणी स्त्रियाँ, सच्चे पुरुष और सच्ची स्त्रियाँ, धैर्यवान पुरुष और धैर्यवान स्त्रियाँ, विनम्रता दिखाने वाले पुरुष और विनम्रता दिखाने वाली स्त्रियाँ, सदक़ा (दान) देने वाले पुरुष और सदक़ा देने वाली स्त्रियाँ, रोज़ा रखने वाले पुरुष और रोज़ा रखने वाली स्त्रियाँ, अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले पुरुष और रक्षा करने वाली स्त्रियाँ तथा अल्लाह को अत्यधिक याद करने वाले पुरुष और याद करने वाली स्त्रियाँ, अल्लाह ने इनके लिए क्षमा तथा महान प्रतिफल तैयार कर रखा है।" [216] [सूरा

अल-अहज़ाब : 35] "ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए हलाल (वैध) नहीं कि ज़बरदस्ती स्त्रियों के वारिस बन जाओ। और उन्हें इसलिए न रोके रखो कि तुमने उन्हें जो कुछ दिया है, उसमें से कुछ ले लो, सिवाय इसके कि वे खुली बुराई कर बैठें। तथा उनके साथ भली-भाँति जीवन व्यतीत करो। फिर यदि तुम उन्हें नापसंद करो, तो संभव है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और अल्लाह उसमें बहुत ही भलाई रख दे।" [217] [सूरा अन-निसा : 19] "ऐ लोगो! अपने उस पालनहार से डरो, जिसने तुम्हें एक जीव (आदम) से पैदा किया तथा उसी से उसके जोड़े (हव्वा) को पैदा किया और उन दोनों से बहुत-से नर-नारी फैला दिए। उस अल्लाह से डरो, जिसके माध्यम से तुम एक-दूसरे से माँगते हो, तथा रिश्ते-नाते को तोड़ने से डरो। निःसंदेह अल्लाह तुम्हारा निरीक्षक है।" [218] [सूरा अल-निसा : 1] "जो भी अच्छा कार्य करे, नर हो अथवा नारी, जबकि वह ईमान वाला हो, तो हम उसे अच्छा जीवन व्यतीत कराएँगे। और निश्चय हम उन्हें उनका बदला उन उत्तम कार्यों के अनुसार प्रदान करेंगे जो वे किया करते थे।" [219] [सूरा अनल-नहल : 97] "वे तुम्हारे लिए वस्त्र हैं और तो तुम उनके लिए वस्त्र हो।" [220] [सूरा अल-बक़रा : 187] "तथा उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्ही में से जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके पास शांति प्राप्त करो। तथा उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया रख दी। निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए बहुत-सी निशाननियाँ हैं, जो सोच-विचार करते हैं।" [221] [सूरा अल-रूम : 21] "(ऐ नबी!) लोग आपसे स्त्रियों के बारे में फ़तवा (शरई हुक्म) पूछते हैं। आप कह दें कि अल्लाह तुम्हें उनके बारे में फतवा देता है, तथा किताब की वे आयतें भी जो अनाथ स्त्रियों के बारे में तुम्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं, जिन्हें तुम उनके निर्धारित अधिकार नहीं देते और तुम चाहते हो कि उनसे विवाह कर लो, तथा कमज़ोर बच्चों के बारे में भी यही हुक्म है, और यह कि तुम अनाथों के मामले में न्याय पर क़ायम रहो। तथा तुम जो भी भलाई करते हो, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है। और यदि किसी स्त्री को अपने पति की ओर से ज़्यादती या बेरुखी का डर हो, तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि आपस में समझौता कर लें और समझौता कर लेना ही बेहतर है। तथा लोभ एवं कंजूसी तो मानव स्वभाव में शामिल है। परंतु यदि तुम एक-दूसरे के साथ उपकार करो और (अल्लाह से) डरते रहो, तो निःसंदेह अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।" [222] [सूरा अल-निसा : 127,128]
अल्लाह तआला ने पुरुषों को महिलाओं पर खर्च करने और अपने धन को संरक्षित करने का आदेश दिया है, बिना इसके कि परिवार के प्रति महिला का कोई भी वित्तीय दायित्व हो। इस्लाम ने महिला के व्यक्तित्व और पहचान को भी संरक्षित किया, जैसा कि वह अपने पति से जुड़ने के बाद भी अपने (नाम के साथ) अपने परिवार का नाम बाक़ी रख सकती है।

पैगंबर मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने व्यभिचार के लिए दंड क्यों निश्चित किया, जबकि मसीह -अलैहिस्सलाम- ने व्यभिचारिणी को क्षमा कर दिया था?

व्यभिचार के अपराध के गंभीर दंड के संबंध में यहूदी धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम के बीच पूर्ण सहमति है। [223] [ओल्ड टेस्टामेंट, Book of Leviticus : 20: 10 –18] ईसाई धर्म में, मसीह ने व्यभिचार के अर्थ पर जोर दिया है। इसे एक मूर्त तथा भौतिक कार्य तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे एक नैतिक अवधारणा में बदल दिया है। [224] ईसाई धर्म ने व्यभिचारियों को अल्लाह के राज्य का वारिस होने से वंचित क़रार दिया है, और उसके बाद उनके पास नरक में अनन्त पीड़ा के अलावा कोई विकल्प नहीं है। [225] इस जीवन में व्यभिचारियों की सज़ा वही है, जो मूसा -अलैहिस्सलाम- की शरीयत द्वारा निर्धारित की गई थी। अर्थात्, पत्थर मारकर मार डालना। [न्यू टेस्टामेंट, मत्ती का सुसमाचार 5:27-30] [न्यू टेस्टामेंट, First Epistle to the Corinthians 6:9-10] [न्यू टेस्टामेंट, Gospel of John 8:3-11] साथ ही बाइबिल के विद्वान आज यह स्वीकार करते हैं कि मसीह के व्यभिचारिणी को क्षमा करने की कहानी, वास्तव में, जॉन की इंजील की शुरुआती प्रतियों में मौजूद नहीं है। इसे बाद में जोड़ दिया गया है और आधुनिक अनुवादों से यही साबित होता है। और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि मसीह -अलैहिस्सलाम- ने अपनी दावत के आरम्भ में ही यह घोषणा कर दी थी कि वह मूसा की व्यवस्था और उससे पहले के नबियों में दोष निकालने नहीं आए हैं। मूसा के क़ानून से एक बिंदु भी कम करने की तुलना में आसमान और पृथ्वी का विनाश उनके लिए आसान है, जैसा कि ल्यूक की इनजील में कहा गया है। [228] इस तरह यह संभव नहीं है कि मसीह -अलैहिस्सलाम- व्यभिचारी स्त्री को दण्डित किए बिना छोड़कर मूसा की व्यवस्था को भंग करें। /https://www.alukah.net/sharia/0/82804/ [न्यू टेस्टामेंट, Gospel of Luke16:17] चार गवाहों की गवाही के साथ ही उनके द्वारा व्यभिचार की घटना का ऐसा विवरण प्रस्तुत किया जाना ज़रूरी है, जो इस घटनी की पुष्टि करे। केवल एक मर्द का किसी महिला के साथ किसी स्थान में पाया जाना पर्याप्त नहीं है। यदि एक गवाह भी गवाही देने से पीछे हट जाए, तो हद क़ायम नहीं की जाएगी। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास में इस्लामी शरीयत द्वारा व्यभिचार का दंड दिए जाने की घटनाएँ इतनी कम क्यों सामने आईं। कारण यह है कि व्यभिचार इस तरीक़े से ही साबित होता है और उसे इस तरीक़े से साबित करना बहुत मुश्किल है, बल्कि असंभव है। हाँ व्यभिचारी क़बूल कर ले, तो बात अलग है।
जब दोनों पापियों में से एक के कबूल करने के आधार पर -चार गवाहों की गवाही के आधार पर नहीं- व्यभिचार की सजा दी जाए और दूसरा पक्ष अपना गुनाह क़बूल न करे, तो उसे दंड नहीं दिया जाएगा।
साथ ही अल्लाह ने तौबा का दरवाज़ा खुला रखा है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"अल्लाह के पास उन्हीं लोगों की तौबा स्वीकार्य है, जो अनजाने में बुराई कर बैठते हैं, फिर शीघ्र ही तौबा कर लेते हैं। तो अल्लाह ऐसे ही लोगों की तौबा क़बूल करता है। तथा अल्लाह सब कुछ जानने वाला हिकमत वाला है।" [229] [सूरा अल-निसा : 17] "जो व्यक्ति कोई बुरा काम करे अथवा अपने ऊपर अत्याचार करे, फिर अल्लाह से क्षमा माँगे, तो वह अल्लाह को बहुत क्षमा करने वाला, अत्यंत दयावान् पाएगा।" [230] [सूरा अल-निसा : 110] "अल्लाह तुम्हारे ऊपर आसानी करना चाहता है और इन्सान कमज़ोर पैदा किया गया है।" [231] [सूरा अल-निसा : 28] इस्लाम इन्सान की फ़ितरी आवश्यकता को स्वीकार करता है। लेकिन वह इस प्राकृतिक भूख को मिटाने के लिए वैध तरीक़े पर काम करता है और वह है शादी का तरीक़ा। वह जल्दी शादी की बात करता है। यदि आर्थिक स्थिति साथ न दे तो सरकारी ख़ज़ाना से मदद पहुँचाता है। वह अनैतिकता फैलाने

के सभी तरीकों से समाज को साफ करने, उच्च लक्ष्यों को निर्धारित करने -जिनमें काफी एनर्जी लगती है और एनर्जी का उपयोग भले कामों में होता है- और खाली समय को अल्लाह के क़रीब आने में बिताने की प्रेरणा देता है। यह सारी चीज़ें व्यभिचार के दरवाज़ों को बंद करने का काम करती हैं। इसके बावजूद इस्लाम तब तक सज़ा देने की बात नहीं करता, जब तक चार गवाहों की गवाही से कुकर्म सिद्ध न हो जाए। ध्यान रहे कि चार गवाह उस समय तक उपलब्ध नहीं हो सकते, जब तक अपराधी ने खुले तौर पर यह जघन्य अपराध न किया हो। इसके बाद ही इन्सान इस कड़ी सज़ा का हकदार होता है। ज्ञात रहे कि व्यभिचार एक बड़ा पाप है। चाहे वह गुप्त रूप से किया गया हो या सार्वजनिक रूप से।

एक महिला ने -बिना किसी दबाव के- स्वयं नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के पास आकर अपने कुकर्म को स्वीकार किया और अपने ऊपर हद्द लागू करने का आग्रह किय। वह व्यभिचार से गर्भवती थी, तो अल्लाह के नबी ने उसके वली को बुलाया और फरमाया कि इसके साथ अच्छा बर्ताव करो। यह दरअसल शरीयत की संपूर्णता एवं सृष्टियों के प्रति सृष्टिकर्ता की पूर्ण दया का प्रमाण है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे कहा कि लौट जाओ यहाँ तक कि बच्चा को जन्म दे दो। बच्चा जन्म देने के बाद वह फिर लौट आई, तो आपने उससे कहा कि लौट जाओ, यहाँ तक कि तुम्हारा बच्चा खाना खाने लगे (दूध छोड़ दे)। बच्चे को दूध छुड़ाने के बाद रसूल के पास वापस लौटने की उसकी ज़िद के आधार पर आपने उसपर हद्द लागू की और कहा कि इसने ऐसी तौबा की है कि यदि उसे मदीना के सत्तर आदमियों पर बाँट दिया जाए, तो भी यह उनके लिए पर्याप्त होगी।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस आचारण से आपकी दया स्पष्ट है।

सृष्टिकर्ता का न्याय :

निष्पक्षता और न्याय के सिद्धांत पर इस्लाम की क्या राय है?

इस्लाम ने लोगों के बीच न्याय और नाप-तौल में निष्पक्षता स्थापित करने का आह्वान किया है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"तथा मदयन की ओर उनके भाई शुऐब को (भेजा)। उसने कहा : ऐ मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। निःसंदेह तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण आ चुका है। अतः पूरा-पूरा नाप और तौलकर दो और लोगों की चीज़ों में कमी न करो। तथा धरती में उसके सुधार के पश्चात बिगाड़ न फैलाओ। यही तुम्हारे लिए बेहतर है, यदि तुम ईमानवाले हो।" [232] [सूरा अल-आराफ़ : 85] "ऐ ईमान वालो! अल्लाह के लिए मज़बूती से क़ायम रहने वाले, न्याय के साथ गवाही देने वाले बन जाओ। तथा किसी समूह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर हरगिज़ न उभारे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यह तक़्वा (अल्लाह से डरने) के अधिक निकट है, और अल्लाह से डरो। निःसंदेह अल्लाह उससे भली-भाँति अवगत है जो तुम करते हो।" [233] [सूरा अल-माइदा : 8] "अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानतों को उनके मालिकों के हवाले कर दो और जब तुम लोगों के बीच फैसला करो, तो न्याय के साथ फैसला करो। निश्चय अल्लाह तुम्हें कितनी अच्छी नसीहत करता है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ सुनने, सब कुछ देखने वाला है।" [234] [सूरा अल-निसा : 58] "निःसंदेह अल्लाह न्याय और उपकार और निकटवर्तियों को देने का आदेश देता है और अश्लीलता और बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम नसीहत हासिल करो।" [235] [सूरा अल-नहल : 90] “ऐ ईमान वालो! अपने घरों के सिवा अन्य घरों में प्रवेश न करो, यहाँ तक कि अनुमति ले लो और उनके रहने वालों को सलाम कर लो। यह तुम्हारे लिए उत्तम है, ताकि तुम याद रखो।” [236] [सूरा अल-नूर : 27] "फिर यदि तुम उनमें किसी को न पाओ, तो उनमें प्रवेश न करो, यहाँ तक कि तुम्हें अनुमति दे दी जाए। और यदि तुमसे कहा जाए कि वापस हो जाओ, तो वापस हो जाओ। यह तुम्हारे लिए अधिक पवित्र है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो, उसे भली-भाँति जानने वाला है।" [237] [सूरा अल-नूर : 28] "ऐ ईमान वालो! यदि कोई दुराचारी (अवज्ञाकारी) तुम्हारे पास कोई सूचना लेकर आए, तो उसकी अच्छी तरह जाँच-पड़ताल कर लिया करो। ऐसा न हो कि तुम किसी समुदाय को अज्ञानता के कारण हानि पहुँचा दो, फिर अपने किए पर पछताओ।" [238] [सूरा अल-हुजुरात : 6] "और यदि ईमान वालों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें, तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर यदि दोनों में से एक, दूसरे पर अत्याचार करे, तो उस गिरोह से लड़ो, जो अत्याचार करता है, यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर पलट आए। फिर यदि वह पलट आए, तो उनके बीच न्याय के साथ सुलह करा दो, तथा न्याय करो। निःसंदेह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है।" [239] [सूरा अल-हुजुरात : 9] "निःसंदेह ईमान वाले तो भाई ही हैं। अतः अपने दो भाइयों के बीच सुलह करा दो। तथा अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर दया की जाए।" [240] [सूरा अल-हुजुरात: 10] "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! एक जाति दूसरी जाति का उपहास न करे, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न कोई स्त्रियाँ अन्य स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ, हो सकता है कि वे उनसे अच्छी हों। और न अपनों पर दोष लगाओ, और न एक-दूसरे को बुरे नामों से पुकारो। ईमान के बाद अवज्ञाकारी होना बुरा नाम है। और जिसने तौबा न की, तो वही लोग अत्याचारी हैं।" [241] [सूरा अल-हुजुरात : 11] "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! बहुत-से गुमानों से बचो। निश्चय ही कुछ गुमान पाप हैं। और जासूसी न करो, और न तुममें से कोई दूसरे की ग़ीबत करे। क्या तुममें से कोई पसंद करता है कि अपने भाई का मांस खाए, जबकि वह मरा हुआ हो? सो तुम उसे नापसंद करते हो। तथा अल्लाह से डरो। निश्चय अल्लाह बहुत तौबा क़बूल करने वाला, अत्यंत दयालु है।" [242] [सूरा अल-हुजुरात: 12] अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "कोई व्यक्ति उस समय तक संपूर्ण मोमिन नहीं हो सकता, जब तक कि वह अपने भाई के लिए वही पसंद न करे, जो अपने लिए पसंद करता है।" [243] इसे इमाम बुखारी एवं इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।

इस्लाम में अधिकार :

दास प्रथा के बारे इस्लाम की क्या राय है?

इस्लाम से पहले ग़ुलामी लोगों के बीच एक प्रचलित व्यवस्था थी और बिना किसी प्रतिबंध के जारी थी। ग़ुलामी के खिलाफ इस्लाम की लड़ाई का उद्देश्य पूरे समाज के दृष्टिकोण और मानसिकता को बदलना था। ताकि ग़ुलाम, अपनी मुक्ति के बाद प्रदर्शनों, हड़तालों, सिविल अवज्ञा, यहाँ तक कि जातीय क्रांतियों का सहारा लिए बिना समाज के पूर्ण और सक्रिय सदस्य बन सकें। इस्लाम का उद्देश्य इस घिनौने शासन से जल्द से जल्द और शांतिपूर्ण तरीकों से छुटकारा पाना था। इस्लाम ने शासक को अपनी प्रजा के साथ ग़ुलामों जैसा व्यवहार करने की अनुमति नहीं दी है। इसी प्रकार इस्लाम ने शासक और अवाम दोनों को स्वतंत्रता और न्याय की सीमा के भीतर अधिकार एवं कर्तव्य प्रदान किए हैं। चुनांचे कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित), सदक़ा एवं भलाई में बढ़ चढ़कर भाग लेने के द्वारा एवं सारे संसारों के रब की निकटता प्राप्त करने के लिए ग़ुलाम को आज़ाद करके ग़ुलामी का अंत होगा। वह दासी महिला जो अपने मालिक के बच्चे को जन्म दे, उसको बेचा नहीं जाता था और अपने मालिक की मौत के बाद अपने आप स्वतंत्र हो जाती थी। पिछली सभी परंपराओं के विपरीत, इस्लाम ने कानून बनाया कि एक ग़ुलाम महिला का बेटा अपने पिता के साथ मिल जाएगा और मुक्त हो जाएगा। इसने यह भी वैध कर दिया कि एक दास धन के बदले या एक निर्धारित अवधि के लिए काम करके अपने मालिक से खुद को ख़रीद सकता है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"तथा तुम्हारे दास-दासियों में से जो लोग मुक्ति के लिए लेख की माँग करें, तो तुम उन्हें लिख दो, यदि तुम उनमें कुछ भलाई जानो।" [244] [सूरा अल-नूर : 33] वह लड़ाइयाँ जो इस्लाम में धर्म, जान एवं माल की रक्षा के लिए लड़ी गईं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनमें अपने साथियों को क़ैदियों के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया। साथ ही क़ैदियों को विकल्प दिया गया कि वे कुछ पैसा चुका कर या बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखा कर अपनी आज़ादी प्राप्त कर सकते हैं। इसी प्रकार इस्लाम की क़ैदी व्यवस्था बच्चा को उसकी माँ से एवं भाई को उसके भाई से वंचित करने की अनुमति नहीं देती। इस्लाम ने मुसलमानों को आदेश दिया है कि वे आत्मसमर्पण करने वाले लड़ाकों पर दया करें।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"और यदि मुश्रिकों में से कोई तुमसे शरण माँगे, तो उसे शरण दे दो, यहाँ तक कि वह अल्लाह की वाणी सुने। फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दो। यह इसलिए कि निःसंदेह वे ऐसे लोग हैं, जो ज्ञान नहीं रखते।" [245] [सूरा अल-तौबा : 6] इस्लाम ने यह भी स्पष्ट किया कि मुसलमानों के पैसों या राज्य के खजाने से भुगतान के माध्यम से ग़ुलामों को मुक्त करने में मदद की जा सकती है। जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके साथियों ने सार्वजनिक ख़जाने के धन से दासों को मुक्त करने के लिए फिदया दी।

माता-पिता और रिश्तेदारों के अधिकार के बारे में इस्लाम का क्या कहना है?

अल्लाह तआला ने कहा है :
"और (ऐ बंदे) तेरे पालनहार ने आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो, तथा माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि तेरे पास दोनों में से एक या दोनों वृद्धावस्था को पहुँच जाएँ, तो उन्हें 'उफ़' तक न कहो, और न उन्हें झिड़को, और उनसे नरमी से बात करो।" और दयालुता से उनके लिए विनम्रता की बाँहें झुकाए रखो और कहो : ऐ मेरे पालनहार! उन दोनों पर दया कर, जैसे उन्होंने बचपन में मेरा पालन-पोषण किया।" [246] [सूरा अल-इसरा : 23-24] "और हमने मनुष्य को अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद दी। उसकी माँ ने उसे दुःख झेलकर गर्भ में रखा तथा दुःख झेलकर जन्म दिया और उसकी गर्भावस्था की अवधि और उसके दूध छोड़ने की अवधि तीस महीने है। यहाँ तक कि जब वह अपनी पूरी शक्ति को पहुँचा और चालीस वर्ष का हो गया, तो उसने कहा : ऐ मेरे पालनहार! मुझे सामर्थ्य प्रदान कर कि मैं तेरी उस अनुकंपा के लिए आभार प्रकट करूँ, जो तूने मुझपर और मेरे माता-पिता पर उपकार किए हैं। तथा यह कि मैं वह सत्कर्म करूँ, जिसे तू पसंद करता है तथा मेरे लिए मेरी संतान को सुधार दे। निःसंदेह मैंने तेरी ओर तौबा की तथा निःसंदेह मैं मुसलमानों (आज्ञाकारियों) में से हूँ।" [247] [सूरा अल-अहक़ाफ़ :15] "और रिश्तेदारों को उनका हक़ दो, तथा निर्धन और यात्री को (भी) और अपव्यय न करो।" [248] [सूरा अल-इसरा : 26]

पड़ोसी के अधिकार के बारे में इस्लाम का क्या कहना है?

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : “अल्लाह की क़सम! वह व्यक्ति मोमिन नहीं है, अल्लाह की क़सम! वह व्यक्ति मोमिन नहीं है, अल्लाह की क़सम! वह व्यक्ति मोमिन नहीं है।” पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल! यह बात आप किसके बारे में कह रहे हैं? आपने उत्तर दिया : “जिसका पड़ोसी उसकी तकलीफ़ से सुरक्षित नहीं रहता।” [249] [सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम] अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है: "पड़ोसी को शुफ़आ का अधिकार (अर्थात वह खरीदार पर ज़ोर डालकर पड़ोसी की संपत्ति ख़रीद सकता है) है। यदि पड़ोसी ग़ायब हो तो उसकी प्रतीक्षा की जाएगी, यदि उन दोनों का रास्ता एक हो।" [250] [मुसनद इमाम अहमद] अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "ऐ अबूज़र! जब शोरबा पकाओ, तो उसमें पानी ज़्यादा डाल दो और पड़ोसियों का भी ख़्याल रख लो।" [251] [इसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।] अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "जिसके पास ज़मीन हो और वह उसे बेचना चाहता हो, तो (पहले) खरीदने का अवसर अपने पड़ोसी को दे।" [252] [यह हदीस सहीह है और सुनन इब्न-ए-माजा में मौजूद है।]

जानवरों के अधिकारों के बारे में इस्लाम क्या कहता है?

अल्लाह तआला ने कहा है :
"तथा धरती में न कोई चलने वाला है तथा न कोई उड़ने वाला, जो अपने दो पंखों से उड़ता है, परंतु तुम्हारी जैसी जातियाँ हैं। हमने पुस्तक में किसी चीज़ की कमी नहीं छोड़ी। फिर वे अपने पालनहार की ओर एकत्र किए जाएँगे।" [253] [सूरा अल-अनआम : 38] अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "एक औरत को एक बिल्ली के कारण यातना दी गई, जिसे उसने बाँधकर रखा था, यहाँ तक कि वह मर गई। अतः वह उसके कारण जहन्नम में गई। जब उसने उसे बाँधकर रखा, तो न कुछ खाने को दिया, न पीने को दिया और न ही आज़ाद छोड़ा कि वह स्वयं धरती के कीड़े-मकोड़े खा

सकती।" [254] [सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम] अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "एक आदमी ने एक कुत्ते को देखा कि वह प्यास के मारे (शबनम से भीगी) ज़मीन को चाट रहा है। यह देख उस आदमी ने अपने मोज़े को उतारकर (और उसमें पानी भरकर) उस कुत्ते को पिलाया और उसकी प्यास बुझा दी। इसपर अल्लाह ने उसका धन्यवाद किया और उसको जन्नत में प्रवेश कराया।" [255] (इसे इमाम बुख़ारी एवं इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।)

क्या क़ुरआन ने पर्यावरण संबंधित मसलों पर बात की है?

अल्लाह तआला ने कहा है :

"तथा धरती में उसके सुधार के पश्चात् बिगाड़ न पैदा करो, और उसे भय और लोभ के साथ पुकारो। निःसंदेह अल्लाह की दया अच्छे कर्म करने वालों के क़रीब है।" [256] [सूरा अल-आराफ़ : 56] “जल और थल में लोगों के हाथों की कमाई के कारण बिगाड़ फैल गया है, ताकि वह (अल्लाह) उन्हें उनके कुछ कर्मों का मज़ा चखाए, ताकि वे बाज़ आ जाएँ।” [257] [सूरा अल-रूम : 41] "तथा जब वह वापस जाता है, तो धरती में दौड़-धूप करता है ताकि उसमें उपद्रव फैलाए तथा खेती और नस्ल (पशुओं) का विनाश करे और अल्लाह उपद्रव को पसंद नहीं करता।" [258] [सूरा अल-बक़रा : 205] "और धरती में आपस में मिले हुए विभिन्न खंड हैं, तथा अंगूरों के बाग़, खेती और खजूर के पेड़ हैं, कई तनों वाले और एक तने वाले, जो एक ही जल से सींचे जाते हैं, और हम उनमें से कुछ को स्वाद आदि में कुछ से बढ़ा देते हैं। निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए निश्चय बहुत-सी निशानियाँ हैं, जो सूझ-बूझ रखते हैं।" [259] [सूरा अल-रअ्द : 4]

इस्लाम सामाजिक अधिकारों को कैसे संरक्षित करता है?

इस्लाम हमें सिखाता है कि सामाजिक कर्तव्य प्यार, दया और दूसरों के प्रति सम्मान पर आधारित होने चाहिएँ।

इस्लाम ने समाज को जोड़ने वाले सभी रिश्तों के आधार, मानदंड एवं नियम बनाए हैं और सभी रिश्तों के अधिकार तथा कर्तव्य तय किए हैं।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"तथा अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को उसका साझी न बनाओ तथा माता-पिता, रिश्तेदारों, अनाथों, निर्धनों, नातेदार पड़ोसी, अपरिचित पड़ोसी, साथ रहने वाले साथी, यात्री और अपने दास-दासियों के साथ अच्छा व्यवहार करो। निःसंदेह अल्लाह उससे प्रेम नहीं करता, जो इतराने वाला, डींगें मारने वाला हो।" [260] [सूरा अल-निसा : 36] "तथा उनके साथ भली-भाँति जीवन व्यतीत करो। फिर यदि तुम उन्हें नापसंद करो, तो संभव है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और अल्लाह उसमें बहुत ही भलाई रख दे।" [261] [सूरा अल-निसा : 19] "ऐ ईमान वालो! जब तुमसे कहा जाए कि सभाओं में जगह कुशादा कर दो, तो कुशादा कर दिया करो। अल्लाह तुम्हारे लिए विस्तार पैदा करेगा। तथा जब कहा जाए कि उठ जाओ, तो उठ जाया करो। अल्लाह तुममें से उन लोगों के दर्जे ऊँचे[8] कर देगा, जो ईमान लाए तथा जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है। तथा तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उससे भली-भाँति अवगत है।" [262] [सूला अल-मुजादला : 11]

इस्लाम ने गोद लेने पर रोक क्यों लगाई है?

इस्लाम अनाथ के लालन-पालन करने की प्रेरणा देता है और अनाथ का लालन-पालन करने वाले से आग्रह करता है कि वह अनाथ के साथ वैसा ही व्यवहार करे जैसा वह अपने बच्चों के साथ करता है। परन्तु अनाथ का अपने असली परिवार को जानने का अधिकार सुरक्षित रखता है, ताकि उसका अपने बाप से विरासत पाने का अधिकार सुरक्षित रहे और वंश मिश्रित न हो।

एक पश्चिमी लड़की की कहानी, जिसे तीस साल बाद अचानक पता चला कि वह एक गोद ली हुई बेटी है, तो उसने आत्महत्या कर ली। यह कहानी गोद लेने के क़ानून की ख़राबी का सबसे बड़ा प्रमाण है। यदि वे उसे बचपन से ही बता देते, तो यह उसपर दया करना होता और उसे अपने परिवार को ढूँढ़ने का अवसर प्राप्त होता।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"तो तुम भी अनाथ पर सख़्ती न किया करो।" [263] [सूरा अल-ज़ुहा : 9] "दुनिया और आख़िरत के बारे में। और वे आपसे अनाथों के विषय में पूछते हैं। (उनसे) कह दीजिए कि उनके लिए सुधार करते रहना बेहतर है। यदि तुम उन्हें अपने साथ मिलाकर रखो, तो वे तुम्हारे भाई हैं और अल्लाह बिगाड़ने वाले को सुधारने वाले से जानता है। और यदि अल्लाह चाहता, तो तुम्हें अवश्य कष्ट में डाल देता। निःसंदेह अल्लाह सब पर प्रभुत्वशाली, पूर्ण हिकमत वाला है।" [264] [सूरा अल-बक़रा : 220] "और जब (विरासत के) बंटवारे के समय (गैर-वारिस) रिश्तेदार, अनाथ और निर्धन उपस्थित हों, तो उसमें से थोड़ा बहुत उन्हें भी दे दो और उनसे भली बात कहो।" [265] [सूरा अल-निसा : 8]

इस्लाम में न (किसी की अकारण) हानि करने की अनुमति है, न बदले में हानि करने की अनुमति है :

इस्लाम में लाल और सफेद मांस खाने की अनुमति क्यों दी गई है?

मांस प्रोटीन का मूल स्रोत है। इसी तरह इन्सान के कुछ दाँत चिपटे और कुछ नुकीले होते हैं। ये दांत मांस चबाने और पीसने के काम आते हैं। अल्लाह ने मनुष्य को पौधों और जानवरों को खाने के लिए उपयुक्त दांत दिए हैं तथा पौधों और पशुओं से प्राप्त खाद्य पदार्थों को पचाने के लिए उपयुक्त पाचन तंत्र प्रदान किया है, जो जानवरों का खाना हलाल होने की दलील है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"तुम्हारे लिए चौपाए जानवर (मवेशी) हलाल किए गए हैं।" [266] [सूरा अल-माइदा : 1]

पवित्र क़ुरआन में खाद्य पदार्थों के संबंध में कुछ नियम बताए गए हैं :

"(ऐ नबी!) आप कह दें कि मेरी ओर जो वह्य (प्रकाशना) की गई है, उसमें मैं किसी खाने वाले पर, कोई चीज़ जो वह खाना चाहे, हराम नहीं पाता, सिवाय इसके कि मुरदार हो या बहता हुआ रक्त हो या सूअर का मांस हो; क्योंकि वह निश्चय ही नापाक है, या अवैध हो, जिसे अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम पर ज़बह किया गया हो। परंतु जो विवश हो जाए (तो वह खा सकता है)

यदि वह विद्रोही तथा सीमा लाँघने वाला न हो। निःसंदेह आपका पालनहार अति क्षमा करने वाला, अत्यंत दयावान् है।" [267] [सूरा अल-अनआम : 145] "तुमपर हराम किया गया है मुर्दार, (बहता हुआ) रक्त, सूअर का माँस और वह जिसपर (ज़बह करते समय) अल्लाह के अलावा का नाम पुकारा जाए, तथा गला घुटने वाला जानवर, और जिसे चोट लगी हो, तथा गिरने वाला और जिसे सींग लगा हो और जिसे दरिंदे ने खाया हो, परंतु जो तुम (इनमें से) ज़बह कर लो। और जो थानों पर ज़बह किया गया हो और यह कि तुम तीरों के साथ भाग्य मालूम करो। यह सब (अल्लाह की) अवज्ञा है।" [268] [सूरा अल-माइदा : 3]

एक और जगह वह कहता है :

"खाओ, पियो और फ़िज़ूलखर्ची न करो। बेशक वह (अल्लाह) फ़िज़ूलखर्ची करने वाले को पसंद नहीं करता है।" [269] [सूरा अल-आराफ़ : 31] इब्न-ए-क़य्यिम -उनपर अल्लाह की कृपा हो- कहते हैं : "अल्लाह ने अपने बन्दों को निर्देश दिया है कि वे उतना ही खाएँ और पिएँ कि जो शरीर को सहारा दे और उतनी ही मात्रा में तथा वैसा ही भोजन करें, जिससे शरीर को लाभ पहुँचता हो। जब इससे अधिक हो जाए, तो वह अपव्यय है। यह दोनों ही स्वस्थ के लिए हानिकारक हैं और बीमारी को निमंत्रण देने वाले हैं। अर्थात खाना-पीना छोड़ देना या ज़रूरत से ज्यादा खाना। स्वस्थ की सुरक्षा इन्हीं दो बातों में है।" (ज़ादुल मआद : 4/213) और अल्लाह तआला ने हमारे नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के विषय में फ़रमाया है : “वह उनके लिए पवित्र वस्तुओं को हलाल करता है तथा उनपर गंदी चीज़ों को हराम करता है।” [271] दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फ़रमाया है : "वे लोग आपसे प्रश्न करते हैं कि उनके लिए क्या हलाल किए गए हैं, तो आप कह दें कि उनके लिए अच्छी चीज़ों को हलाल किया गया है।" [272] [सूरा अल-आराफ़ : 157] [सूरा अल-माइदा : 4]

अतः हर अच्छी चीज़ हलाल एवं हर मलीन (गंदी) चीज़ हराम है।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बता दिया है कि मोमिन को कैसे और कितना खाना एवं पीना चाहिए। फरमाया है: "किसी आदमी ने अपने पेट से बुरा बर्तन कोई नहीं भरा। आदम की संतान के लिए खाने के कुछेक लुक़मे काफ़ी हैं, जो उसकी पीठ को सीधा रखें। अगर अधिक खाना ज़रूरी हो तो पेट का एक तिहाई भाग खाने के लिए, एक तिहाई भाग पीने के लिए और एक तिहाई भाग सांस लेने के लिए हो।" [273] [इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।] अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक अन्य अवसर पर फ़रमाया है : "न (किसी की अकारण) हानि करना है, न बदले में हानि करना है।" [274] [इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।]

क्या इस्लाम में जानवरों को ज़बह करने का तरीक़ा अमानवीय नहीं है?

जानवर को ज़बह करने का इस्लामी तरीक़ा, जिसमें जानवर के गले और अन्ननली को तेज चाकू से काट दिया जाता है, बिजली का झटका देकर मारने तथा दम घोंटकर मारने से अधिक दयापूर्ण तरीक़ा है। क्योंकि मस्तिष्क में रक्त का प्रवाह बंद हो जाने मात्र से पशु को दर्द महसूस होना बंद हो जाता है। जानवर को ज़बह करते समय उसका उठ खड़ा होना दर्द के कारण नहीं, बल्कि रक्त के तेज प्रवाह के कारण है। जिससे जानवर का रक्त आसानी के साथ बाहर निकल जाता है। जबकि दूसरी पद्धतियों में रक्त अंदर रुका रह जाता है, जिसके कारण उसका मांस हानिकारक हो जाता है। अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "अल्लाह तआला ने हर चीज़ में अच्छे बरताव को अनिवार्य किया है। अतः, जब तुम क़त्ल करो तो अच्छे अंदाज़ में क़त्ल करो, और जब ज़बह करो तो अच्छे अंदाज़ में ज़बह करो। तुम अपनी छुरी को तेज़ कर लो और अपने ज़बीहा- ज़बह किए जाने वाले जानवर- को आराम पहुँचाओ।" [275] [इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।]

क्या खाने के लिए ज़बह किए जाने वाले जानवरों में इंसानों जैसी आत्मा नहीं होती?

पशु की आत्मा और मानव आत्मा के बीच एक बड़ा अंतर है। जानवर की आत्मा शरीर को हरकत देने वाली शक्ति है। जब यह मृत्यु के कारण उसके शरीर से अलग हो जाती है, तो वह एक निर्जीव लाश बन जाता है। यह भी दरअसल जीवन का एक प्रकार है। पेड़-पौधों में भी एक प्रकार का जीवन होता है, जिसे आत्मा नहीं कहा जाता है। बल्कि यह एक ऐसा जीवन है, जो पानी के माध्यम से उनके अंगों में प्रवेश करता है। फिर जब वह उससे जुदा होता है, तो वह मुरझाकर गिर जाता है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"और हमने पानी से हर जीवित चीज़ बनाई है। क्या वे ईमान नहीं लाते?" [276] [सूरा अल-अंबिया : 30] लेकिन यह मानव आत्मा की तरह नहीं है, जिस मानव आत्मा को आदर और सम्मान देने के उद्देश्य से उसकी निस्बत अल्लाह की ओर की गई है। इसकी हक़ीक़त (वास्तविकता) को केवल अल्लाह ही जानता है और यह केवल मनुष्य के लिए विशिष्ट है। मानवीय आत्मा अल्लाह का एक आदेश है और मनुष्य के लिए इसके सार को समझना आवश्यक नहीं है। यह शरीर को हरकत देने वाली शक्ति के अलावा इसमें समझने की शक्ति (अक़्ल), बौद्धिक शक्ति, ज्ञान और ईमान भी मौजूद है और यही चीज़ इसको जानवरों की आत्मा से अलग करती है।

मुसलमान सूअर का मांस क्यों नहीं खाता?

यह अल्लाह की अपनी सृष्टि पर रहमत और दया है कि उसने हमें स्वच्छ चीज़ों को खाने का आदेश दिया है एवं बुरी चीजों के खाने से मना किया है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"जो उस रसूल का अनुसरण करेंगे, जो उम्मी (अनपढ़) नबी हैं, जिन (के आगमन) का उल्लेख वे अपने पास तौरैत तथा इंजील में पाते हैं; जो उन्हें सदाचार का आदेश देंगे और दुराचार से रोकेंगे, उनके लिए स्वच्छ चीज़ों को हलाल (वैध) तथा मलिन चीज़ों को हराम (अवैध) करेंगे, उनसे उनके बोझ उतार देंगे तथा उन बंधनों को खोल देंगे, जिनमें वे जकड़े हुए होंगे। अतः जो लोग आप पर ईमान लाए, आपका समर्थन किया, आपकी सहायता की तथा उस प्रकाश (क़ुरआन) का अनुसरण किया, जो आपके साथ उतारा गया, तो वही सफल होंगे।" [277] [सूरा आल-ए-इमरान, आयत संख्या :157]

इस्लाम ग्रहण करने वाले कुछ लोगों बताया है कि उनके इस्लाम ग्रहण करने का कारण सूअर था।

क्योंकि उनको पहले से पता था कि यह एक बहुत ही गंदा जानवर है और बहुत सारे शारीरिक बीमारियों का कारण बनता है। इसी वजह से इसे खाना पसंद नहीं करते थे। उनका मानना था कि मुसलमान सूअर का मांस केवल इसलिए नहीं खाते हैं कि यह उनकी किताब में वर्जित है और वे उसे पवित्र मानते और उसकी इबादत करते हैं। लेकिन बाद में जब उनको मालूम हुआ कि सूअर का मांस मुसलमानों के लिए इसलिए हराम है कि यह एक गंदा जानवर है और इसका मांस स्वस्थ के लिए हानिकारक होता है, तो उन लोगों ने इस धर्म की महानता को जाना।
अल्लाह तआला का फ़रमान है :
(अल्लाह) ने "तुमपर मुर्दार तथा (बहता) रक्त और सूअर का माँस तथा जिसपर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो, उसे हराम कर दिया है। फिर भी जो विवश हो जाए, जबकि वह नियम न तोड़ रहा हो और आवश्यक्ता की सीमा का उल्लंघन न कर रहा हो, तो उसपर कोई दोष नहीं। अल्लाह अति क्षमाशील, दयावान् है।" [278] [सूरा अल-बक़रा : 173]
ओल्ड टेस्टामेंट में भी सूअर के माँस को मांस को हराम कहा गया है।
"सूअर, क्योंकि उसके खुर दो खुरों में बँटे होते हैं, लेकिन वह जुगाली नहीं करता, वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है। उसके मांस में से कुछ न खाना और न उसके शरीर को छूना। वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है।" [279] [Book of Leviticus 11:7-8] "सूअर, क्योंकि उसके खुर दो खुरों में बँटे होते हैं, लेकिन वह जुगाली नहीं करता, वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है। उसके मांस में से कुछ न खाना और न उसके शरीर को छूना।" [280] [Book of Deuteronomy 8:14]
यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि नबी ईसा -अलैहिस्सलाम- की शरीयत और मूसा -अलैहिस्सलाम- की शरीयत एक है, जैसा कि ईसा की ज़ुबानी न्यू टेस्टामेंट में आया है।
"यह मत सोचो कि मैं पिछले नबियों की शरीयत या विधान को तोड़ने आया हूँ। मैं उनको तोड़ने नहीं, बल्कि पूरा करने आया हूँ। मैं तुमसे सच कहता हूँ। धरती एवं आकाश के बाकी रहने तक विधान का एक शब्द या एक बिंदु कम न होगा, यहाँ तक कि पूरा हो जाए। जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़ेगा और जो मनुष्यों को ऐसा सिखाएगा, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा। परन्तु जो कोई अमल करेगा और सिखाएगा, वह स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।" [281] [मत्ती रचित इंजील 5 :17-19]
इस आधार पर, ईसाई धर्म में भी सूअर का मांस खाना वर्जित समझा जाएगा, जैसा कि यह यहूदी धर्म में वर्जित है।

इस्लाम ने सूद को वर्जित क्यों किया है?

इस्लाम में धन का उद्देश्य व्यापार, वस्तुओं एवं सेवाओं का आदान-प्रदान, निर्माण और आबादकारी है। अतः जब हम कमाने के उद्देश्य से धन उधार देते हैं, तो हम धन को आदान-प्रदान और विकास का साधन बनाने के बजाय उसे ही साध्य बना लेते हैं।
ऋणों पर लगाया जाने वाला ब्याज या सूद उधारदाताओं के लिए एक प्रोत्साहन है, क्योंकि उनके नुक़सान की संभावना नहीं होती है। इस प्रकार उधारदाताओं द्वारा हर वर्ष अर्जित संचयी लाभ अमीर और गरीब के बीच की खाई को और चौड़ा करेगा। हाल के दशकों में, सरकारों और संस्थानों को इस चीज़ में बड़े पैमाने पर फंसाया गया है, जिसके कारण हमने कुछ देशों की आर्थिक व्यवस्था के चरमराने के कई उदाहरण देखे हैं। सूदखोरी के अंदर समाज में भ्रष्टाचार फैलाने की ऐसी ताक़त है, जो किसी दूसरे अपराध में नहीं है। [282] अल्लाह तआला ने कहा है : ईसाई सिद्धांतों के आधार पर, थॉमस एक्विनास ने सूदखोरी या ब्याज के साथ उधार लेने की निंदा की है। चर्च, अपनी महान धार्मिक और सांसारिक भूमिका के कारण, दूसरी शताब्दी से धर्म गुरुओं के बीच इसे प्रतिबंधित करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करने के बाद अपनी जनता के बीच सूदखोरी के निषेध को सामान्य बनाने में सफलता प्राप्त की। थॉमस एक्विनास के अनुसार, ब्याज पर रोक लगाने का औचित्य यह है कि ब्याज उधारकर्ता पर ऋणदाता की प्रतीक्षा की कीमत नहीं हो सकता है, अर्थात उस समय की कीमत जो उधारकर्ता लेता है, क्योंकि वे इस कार्य (उधार के लेन देन) को व्यापारिक लेन-देन के रूप में देखते हैं। अतीत में, दार्शनिक अरस्तू का मानना था कि पैसा विनिमय का एक साधन है न कि लाभ एकत्र करने का रास्ता। जहाँ तक प्लेटो की बात है, तो वह लाभ को शोषण के रूप में देखते थे, फिर भी अमीरों ने समाज के गरीब सदस्यों पर इसको आज़माया (उनसे लाभ और ब्याज लिया)। यूनानियों के समय में सूदी लेन-देन अत्यधिक प्रचलित था। यह क़र्जदाता का अधिकार था कि वह कर्जदार को गुलाम बाजार में बेच दे, अगर वह अपने कर्ज का भुगतान करने में असमर्थ हो। रोमनों के यहाँ भी स्थिति अलग नहीं थी। उल्लेखनीय है कि यह निषेध धार्मिक प्रभावों के अधीन नहीं था, क्योंकि यह ईसाई धर्म के आगमन से तीन शताब्दियों पहले हुआ था। ज्ञात रहे कि बाइबल ने अपने अनुयायियों को सूदख़ोरी का मामला करने से मना किया था और ऐसा ही तौरात ने पहले किया था। "ऐ ईमान वालो! कई-कई गुणा करके ब्याज[73] न खाओ। तथा अल्लाह से डरो, ताकि तुम सफल हो।" [283] [सूरा आल-ए-इमरान : 130]
"और तुम ब्याज पर जो (उधार) देते हो, ताकि वह लोगों के धनों में मिलकर अधिक हो जाए, तो वह अल्लाह के यहाँ अधिक नहीं होता। तथा तुम अल्लाह का चेहरा चाहते हुए जो कुछ ज़कात से देते हो, तो वही लोग कई गुना बढ़ाने वाले हैं।" [284] [सूरा अल-रूम : 39]
ओल्ड टैस्टमैंट ने भी सूदखोरी को हराम किया था, जैसा कि हम Book of Leviticus में अनगिनत उदाहरण पाते हैं। उदाहरण स्वरूप :
"और यदि तुम्हारा भाई गरीब हो और उसका हाथ तंग हो जाए, तो एक अजनबी हो या देशवासी, उसकी मदद करो, ताकि वह तुम्हारे साथ जी सके। न उससे कोई ब्याज लो और न लाभ। अपने माबूद से डरो, ताकि तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ जी सके। अपनी चाँदी को सूद पर मत दो और न अपने खाने को सूद पर दो।" [285]
जैसा कि मैंने पूर्व में उल्लेख किया, यह मालूम है कि नबी ईसा -अलैहिस्सलाम- की शरीयत और मूसा -अलैहिस्सलाम- की शरीयत एक ही है, जैसा कि ईसा की ज़ुबानी न्यू टेस्टामेंट में आया है। [Book of Leviticus 25:35-37] "यह मत सोचो कि मैं पिछले नबियों की शरीयत या विधान को तोड़ने आया हूँ। मैं उनको तोड़ने नहीं, बल्कि पूरा करने आया हूँ। मैं तुमसे सच कहता हूँ। धरती एवं आकाश के बाकी रहने तक विधान का एक शब्द या एक बिंदु कम न होगा, यहाँ तक कि पूरा हो जाए। जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़ेगा और जो मनुष्यों को ऐसा सिखाएगा, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा

कहलाएगा। परन्तु जो कोई अमल करेगा और सिखाएगा, वह स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।" [286] [मत्ती का सुसमाचार 5:17-19]
इस आधार पर, ईसाई धर्म में सूद वर्जित होगा, जैसा कि यह यहूदी धर्म में वर्जित था।
जैसा कि क़ुरआन में आया है :
"चुनाँचे यहूदी बन जाने वालों के बड़े अत्याचार ही के कारण हमने उनपर कई पाक चीज़ें हराम कर दीं, जो उनके लिए हलाल की गई थीं तथा उनके अल्लाह के रास्ते से बहुत अधिक रोकने का कारण। तथा उनके ब्याज लेने के कारण, जबकि निश्चय उन्हें इससे रोका गया था और उनके लोगों का धन अवैध रूप से खाने के कारण। तथा हमने उनमें से काफ़िरों के लिए दर्दनाक यातना तैयार कर रखी है।" [287] [सूरा अल-निसा : 160,161]

इस्लाम शराब पीने से क्यों मना करता है?

अल्लाह तआला ने अक़्ल देकर मनुष्य को अन्य सभी प्राणियों से अलग किया है और हमपर उन चीज़ों को हराम किया है, जो हमारी अक़्ल या शरीर को हानि पहुँचाएँ। इसलिए उसने हमपर हर नशा लाने वाली चीज़ को वर्जित कर दिया है, क्योंकि यह बुद्धि को भ्रष्ट कर देती है, उसे नुक़सान पहुँचाती है और उसे हर तरह के भ्रष्टाचार की ओर ले जाती है। शराब पीने वाला व्यक्ति हत्या कर सकता है, व्यभिचार कर सकता है, चोरी कर सकता है और इनके अलावा दूसरे बड़े अपराधों को भी अंजाम दे सकता है।
अल्लाह तआला का फ़रमान है :
“ऐ ईमान वालो! बात यही है कि शराब तथा जुआ और थान (मूर्तियों के स्थान) तथा फ़ाल निकालने के पाँसे के तीर यह सब गंदी बातें, शैतानी काम हैं, इनसे बिल्कुल अलग रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।” [288] [सूरा अल-माइदा : 90] शराब हर उस चीज़ का नाम है, जिसमें नशा हो। चाहे उसका नाम या शक्ल कुछ भी हो। अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : “हर नशा लाने वाली चीज़ शराब है और हर नशा लाने वाली चीज़ हराम है।” [289] इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।
इसका निषेध व्यक्ति और समाज पर इसके बड़े नुकसानों के आधार पर आया है।
ईसाई धर्म और यहूदी धर्म में भी शराब की मनाही है, लेकिन आज ज्यादातर लोग इसे लागू नहीं करते हैं।
"शराब का ठट्ठा उड़ाया जाता है, मादक अश्लील है, और जो कोई नशे के कारण लड़खड़ाता है, वह बुद्धिमान नहीं।" [290] [नीतिवचन, अध्याय 20, पद्य 1] "और मद पीकर मतवाले न होना, जिसमें लुच्चापन होता है।" [291] [इफिसियों, अध्याय 5, पद 18] प्रसिद्ध चिकित्सा पत्रिका, द लांसेट ने 2010 में व्यक्ति और समाज के लिए सबसे विनाशकारी दवाओं (drugs) पर एक शोध प्रकाशित किया था। अध्ययन शराब, हेरोइन, तंबाकू और अन्य सहित 20 दवाओं पर आधारित था। 16 कसौटियों के आधार पर इनका मूल्यांकन किया गया था, जिनमें व्यक्ति पर नुक़सान से संबंधित नौ मानदंड और दूसरों को नुक़सान पहुंचाने से संबंधित सात मानदंड शामिल थे और मूल्यांकन को नम्बर सौ में से दिए गए थे।
इसका परिणाम यह था कि यदि हम व्यक्तिगत नुक़सान और दूसरों को होने वाले नुक़सान दोनों पर एक साथ विचार करें, तो अल्कोहल सबसे हानिकारक दवा है और पहले स्थान पर है।
एक अन्य अध्ययन ने शराब की सुरक्षित खपत का मध्यमान बताते हुए कहा है :
"उसके सेवन करने के परिणाम स्वरूप होने वाली हानियों एवं बीमारियों के कारण होने वाले जानी नुक़सान से बचने के लिए अल्कोहल का सुरक्षित सेवन शून्य है। इस बात का ऐलान शोधकर्ताओं ने खुद मशहूर वैज्ञानिक पत्रिका द लैंसेट की वेबसाइट पर एक रिपोर्ट में किया है।" यह अध्ययन इस विषय पर अब तक का सबसे बड़ा डेटा विश्लेषण अध्ययन था। इसमें 1990 से 2016 के बीच के दुनिया भर के 28 मिलियन लोग शामिल थे, जो 195 देशों का प्रतिनिधित्व करते थे। ताकि (694 डेटा स्रोतों का उपयोग करके) शराब की खपत की व्यापकता और खपत मात्रा का अनुमान लगाया जा सके। साथ ही उस खपत का शराब से होने वाले नुकसान और स्वास्थ्य जोखिमों से क्या संबंध है (जो (नुकसान) बीमारी से पहले और बाद के 592 अध्ययनों से निकाले गए थे)। नतीजे बताते हैं कि शराब दुनिया भर में सालाना 2.8 मिलियन लोगों की मौत का कारण बनती है।
इस संदर्भ में, शोधकर्ताओं ने बाजार में शराब की उपस्थिति और इसके विज्ञापन को सीमित करने के लिए उसपर कर लगाने के उपायों को शुरू करने की प्रस्तावना के रूप में सिफारिश की, जो भविष्य में इसे बाजार से प्रतिबंधित करने की ओर पहला क़दम होगा। सच कहा है अल्लाह तआला ने, जब उसने कहा है :
“क्या अल्लाह समस्त हाकिमों का हाकिम नहीं है?” [सूरा अल-तीन : 8]

इस्लाम के स्तंभ :

पैगंबर मुहम्मद द्वारा लाए गए इस्लाम के स्तंभ क्या हैं?

सृष्टिकर्ता के एक होने की गवाही और स्वीकृति देना और उसी की इबादत करना, साथ ही यह स्वीकार करना कि मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- उसके बन्दे एवं उसके रसूल हैं।
नमाज़ के द्वारा सारे संसारों के रब के साथ संबंध साधे रखना।
रोज़ा के माध्यम से एक व्यक्ति की इच्छा और आत्म-नियंत्रण को मजबूत करना और दूसरों के साथ दया और प्रेम की भावनाओं को विकसित करना।
ज़कात के रास्ते से फ़क़ीरों एवं मिस्कीनों पर एक तय प्रतिशत ख़र्च करना। यह एक इबादत है, जो इंसान को ख़र्च करने एवं देने के गुणों को अपनाने तथा कंजूसी एवं बखीली की भावनाओं से दूर रहने में मदद करती है।
मक्का के हज के माध्यम से कुछ विशेष इबादतों को अंजाम देकर, जो कि तमाम मोमिनों के लिए एक जैसी हैं, एक विशिष्ट समय और स्थान पर निर्माता के लिए निवृत्त होना। यह अलग-अलग मानवीय संबद्धताओं, संस्कृतियों, भाषाओं, दर्जों और रंगों की परवाह किए बिना एक साथ सृष्टिकर्ता की ओर आकर्षित होने का प्रतीक है।

मुसलमान नमाज़ क्यों पढ़ता है?

मुसलमान अपने रब के आज्ञापालन में नमाज़ पढ़ता है, जिसने उसे नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया है एवं नमाज़ को इस्लाम के स्तंभों में से एक स्तंभ बनाया है।

एक मुसलमान रोज़ सुबह पांच बजे नमाज़ के लिए खड़ा होता है और उसके गैर-मुस्लिम दोस्त ठीक उसी समय सुबह व्यायाम के लिए निकलते हैं। उसके लिए, उसकी नमाज़ शारीरिक और आध्यात्मिक पोषण है, जबकि उसके गैर-मुस्लिम दोस्तों के लिए व्यायाम केवल शारीरिक भोजन है। नमाज़ दुआ से भिन्न है, जो अल्लाह से किसी ज़रूरत के लिए की जाती है। एक मुसलमान बिना शारीरिक हरकत जैसे रुकू और सजदा आदि किए किसी भी समय दुआ कर सकता है।

ध्यान दें कि हम अपने शरीर की कितनी देखभाल करते हैं, जबकि आत्मा भूख से बिलखती है और इसका परिणाम दुनिया के सबसे समृद्ध लोगों की अनगिनत आत्महत्याएँ हैं।

इबादत मस्तिष्क में ख़्याल के केंद्र में मौजूद स्वयं एवं आसपास के लोगों से संबंधित ख़्याल को दूर करने की ओर ले जाती है। उस समय इंसान बहुत उच्च अनुभव करता है। यह एक ऐसा एहसास है, जिसे एक व्यक्ति तब तक नहीं समझेगा, जब तक कि वह इसका अनुभव न कर ले।

इबादत मस्तिष्क में भावना के केंद्रों को हरकत देती है, इसलिए आस्था सैद्धांतिक जानकारी और रीति-रिवाजों से व्यक्तिपरक भावनात्मक अनुभवों में बदल जाती है। क्या पिता उसके पुत्र के यात्रा से लौटकर आने पर मौखिक स्वागत करने से संतुष्ट हो जाएगा? वह तब तक शांत नहीं होगा, जब तक उसे गले न लगा ले और चूम न ले। अक़्ल की विश्वासों और विचारों को एक महसूस रूप देने की एक प्राकृतिक इच्छा होती है। इबादतें इसी इच्छा को पूरा करती हैं। चुनांचे बंदगी और आज्ञाकारिता नमाज़ और रोज़ा आदि में प्रतीत होती है। एंड्रयू न्यूबर्ग कहते हैं : "शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य में सुधार लाने और शांति और आध्यात्मिक उच्चता की प्राप्ति में इबादत की एक बड़ी भूमिका होती है। साथ ही, सृष्टिकर्ता की ओर ध्यान देने से अधिक शांति और श्रेष्ठता प्राप्त होती है।" निदेशक आध्यात्मिक अध्ययन केंद्र, पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका

एक मुसलमान दिन में पांच बार नमाज़ क्यों पढ़ता है?

मुसलमान पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षाओं का पालन करता है और ठीक उसी तरह नमाज़ पढ़ता है, जैसे पैगंबर ने नमाज़ पढ़ी थी।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "तुम लोग उसी तरह नमाज़ पढ़ो, जिस तरह तुमने मुझे नमाज़ पढ़ते हुए देखा है।" [294] इसे इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है।

मुसलमान दिन भर अपने रब से संबंध साधने की अपनी तीव्र इच्छा के कारण दिन में पाँच बार नमाज़ के द्वारा उससे वार्तालाप करता है। यह वह साधन है, जिसे अल्लाह ने हमें उससे वार्तालाप करने के लिए प्रदान किया है और हमें अपनी भलाई के लिए इसका पालन करने का आदेश दिया है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"तुम्हारी ओर जो किताब उतारी गई है, उसको पढ़ो, नमाज़ स्थापित करो, वास्तव में, नमाज़ निर्लज्जता एवं दुराचार से रोकती है, और अल्लाह का सम्मान ही सर्व महान है, और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे जानता है।" [295] [सूरा अल-अंकबूत : 45]

मनुष्य के रूप में, हम हर दिन अपनी पत्नियों और बच्चों से कई बार फोन पर बात करते हैं। यह उनसे हमारी गहरी मुहब्बत एवं संबंध के कारण है।

नमाज़ का महत्व इसमें भी दिखाई देता है कि वह बुरे कार्य करने पर आत्मा को डांटती है और उसको अच्छा करने के लिए प्रेरित करती है। यह तब होता है, जब वह अपने सृष्टिकर्ता को याद करती है, उसकी सज़ा से डरती है और उसकी क्षमा तथा प्रतिफल की लालसा रखती है।

साथ ही, मनुष्य के कार्यों और कर्मों को सारे संसारों के रब के लिए विशुद्ध होना चाहिए, क्योंकि इंसान के लिए हमेशा स्मरण करना या नीयत को नवीनीकृत करना मुश्किल होता है। इसलिए संसार के रब के साथ संवाद करने और उसकी इबादत और नेक काम के द्वारा इख़लास (एकनिष्ठता) की के नवीनीकरण के लिए नमाज़ के नियत समय का होना आवश्यक था। यह नियत समय दिन और रात में कम से कम पांच बार होता है। यह पाँच नियत समय (फ़ज्र, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब और ईशा) चौबीस घंटे के दौरान दिन और रात के परिवर्तन के मुख्य समयों और घटनाओं को दर्शाते हैं।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"अतः जो कुछ वे कहते हैं, उसपर सब्र करें तथा सूर्य उगने से पहले[42] और उसके डूबने से पहले[43] अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता बयान करें, और रात की कुछ घड़ियों में भी पवित्रता बयान करें, और दिन के किनारों[45] में, ताकि आप प्रसन्न हो जाएँ।" [296] [सूरा ताहा : 130]

सूर्योदय से पहले तथा सुर्यास्त से पहले का अर्थ है फ़ज्र एवं अस्र की नमाज़।

"रात्रि के क्षणों में" का अर्थ है ईशा की नमाज़।

"और दिन के किनारों में" का अर्थ है ज़ुहर एवं मग़रिब की नमाज़।

दिन के दौरान होने वाले सभी प्राकृतिक परिवर्तनों को कवर करने के लिए यह पाँच प्रार्थनाएँ हैं, ताकि इंसान इन समयों में अपने सृष्टिकर्ता एवं निर्माता को याद करे।

मुसलमान मक्का की ओर मुँह करके नमाज़ क्यों पढ़ते हैं?

अल्लाह ने पवित्र घर काबा [297] को इबादत के लिए पहला घर और मोमिनों की एकता का प्रतीक बनाया है, जिसकी ओर सभी मुसलमान नमाज़ के समय मुँह करते हैं और इस तरह वे धरती के विभिन्न क्षेत्रों से दायरे बनाते हैं, जिनका केंद्र मक्का है। क़ुरआन हमें इबादत करने वालों के आसपास की प्रकृति की प्रतिक्रिया के कई दृश्य प्रस्तुत करता है, जैसा कि नबी दाऊद

-अलैहिस्सलाम- के साथ पहाड़ों एवं परिंदों का अल्लाह की पवित्रता बयान करना एवं पवित्र किताब की तिलावत करना। "तथा हमने प्रदान किया दाऊद को अपना कुछ अनुग्रह, हे पर्वतो! सरुचि महिमा गान करो उसके साथ तथा हे पक्षियो! तथा हमने कोमल कर दिया उसके लिए लोहा को।" [298] इस्लाम एक से अधिक जगहों में ज़ोर देकर कहता है कि संपूर्ण ब्रह्मांड, अपनी सारी सृष्टियों सहित, सारे संसार के रब की प्रशंसा और महिमा गान करता है। अल्लाह तआला ने कहा है : [सूरा सबा : 10] "निःसंदेह पहला घर, जो मानव के लिए (अल्लाह की वंदना का केंद्र) बनाया गया, वह वही है, जो मक्का में है, जो शुभ तथा संसार वासियों के लिए मार्गदर्शन है।" [299] (सूरा आल-ए-इमरान, आयत संख्या : 96) काबा एक चौकोर और लगभग घनाकार इमारत है, जो मक्का अल-मुकर्रमा में मस्जिद-ए-हराम के केंद्र में स्थित है। इस भवन में एक दरवाज़ा है और कोई खिड़की नहीं है। उसमें कुछ नहीं है। न वह किसी की क़ब्र है। वह केवल नमाज़ का कमरा है। काबा के अंदर जो मुसलमान नमाज़ पढ़ता है, वह किसी तरफ़ भी मुँह करके नमाज़ पढ़ सकता है। पूरे इतिहास में काबा का कई बार नवीकरण हुआ है। पैगंबर इब्राहिम -अलैहिस्सलाम- ने सबसे पहले अपने बेटे इस्माइल -अलैहिस्सलाम- के साथ मिलकर इस घर को उसकी बुनियादों से उठाने का काम किया था। काबा के एक कोने में "हजर-ए-असवद" अर्थात काला पत्थर लगा हुआ है। ऐसा माना जाता है कि यह आदम -अलैहिस्सलाम- के समय आया था। लेकिन यह कोई चमत्कारी पत्थर नहीं है या इसमें अप्राकृतिक शक्तियाँ नहीं हैं, बल्कि यह मुसलमानों के लिए एक प्रतीक का प्रतिनिधित्व करता है।
पृथ्वी की गोलाकार प्रकृति दिन और रात को आगे-पीछे लाने का काम करती है, जबकि मुसलमानों का काबा के चारों ओर तवाफ़ में व्यस्त होना और पृथ्वी के विभिन्न हिस्सों से मक्का की ओर मुँह करके दिन भर में पाँच वक़्त की नमाज़ें पढ़ना, स्थायी रूप से सारे संसार के रब की महिमा और प्रशंसा में निरंतर रूप से लगे पूरे ब्रह्मांड का हिस्सा बनता है। दरअसल सृष्टिकर्ता की ओर से अपने पैगंबर इब्राहिम -अलैहिस्सलाम- को काबा की नींव उठाने और उसके चारों ओर तवाफ़ करने का आदेश था और उसने हमें आदेश दिया है कि काबा हमारी नमाज़ का क़िबला हो।

नमाज़ के क़िबले की दिशा अल-अक्सा मस्जिद से मक्का की मस्जिद-ए-हराम की ओर क्यों बदल दी गई?

पूरे इतिहास में काबा का बहुत उल्लेख किया गया है। अरब प्रायद्वीप के सबसे दूरस्थ हिस्सों से भी लोग सालाना इसका भ्रमण करते और पूरे अरब प्रायद्वीप के लोग इसकी पवित्रता का सम्मान करते रहे हैं। काबा का उल्लेख ओल्ड टेस्टामेंट की भविष्यवाणियों में भी हुआ है। (बक्का की वादी में गुज़रते हुए, वहाँ झरना निकालेंगे।) [300]
अरब अपने अज्ञान काल में भी इस पवित्र घर का सम्मान करते थे। मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- को नबी बनाकर भेजे जाने के समय अल्लाह ने पहले बैत अल-मक़दिस को क़िबला बनाया, फिर उसे छोड़ बैत अल-हराम (काबा) की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया, ताकि नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के अनुयायियों में से जो लोग अल्लाह के लिए निष्ठावान हैं, उनको छाँट लिया जाए, उन लोगों से जो पलट जाने वाली प्रवृति के हों। क़िबला का रुख़ बदलने का उद्देश्य दिलों को अल्लाह के लिए शुद्ध करना एवं दूसरे के साथ संबंध को ख़त्म करना था। चुनांचे मुसलमानों ने मान लिया और वे उसी तरफ फिर गए जिस तरफ अल्लाह ने उन्हें फेरा। जबकि यहूदी पैगंबर के बैत अल-मक़दिस की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ने को अपने लिए एक तर्क मानते थे। [ओल्ड टैस्टमैंट, भजनसंहिता : 84]
क़िबला का परिवर्तन दरअसल एक महत्वपूर्ण मोड़ और धार्मिक नेतृत्व को बनी इसराईल से लेकर अरबों को हस्तांतरित करने का संकेत था। यह संसार के रब के साथ किए गए उनके वचनों को भंग करने के कारण हुआ।

क्या हज के अवसर पर किए जाने वाले कार्य, जैसे काबा आदि का सम्मान, मूर्तिपूजक अनुष्ठान नहीं हैं?

बुतपरस्त धर्मों और कुछ निर्धारित स्थानों तथा प्रतीकों का सम्मान करने के बीच एक बड़ा अंतर है, चाहे वो धार्मिक हों या राष्ट्रीय या सामुदायिक।
उदाहरण स्वरूप, जमरात को पत्थर मारना, कुछ विचारों के अनुसार, केवल हमारा शैतान का विरोध करने, उसका अनुपालन न करने और इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- के काम की पैरवी करने के लिए है, जब उनके सामने शैतान उन्हें अल्लाह के आदेश को लागू करने एवं अपने बेटे को कुरबान करने से रोकने के लिए प्रकट हुआ और उन्होंने उसे पत्थर मारा। [301] इसी तरह सफा और मरवा के बीच दौड़ लगाना, हाजरा -अलैहस्सलाम- के काम का अनुसरण करने के लिए है, जब उन्होंने अपने बेटे इस्माइल -अलैहिस्सलाम- के लिए पानी की तलाश में दौड़ लगाई थी। बहरहाल, हज के सभी काम अल्लाह के ज़िक्र को स्थापित करने के लिए एवं सारे संसार के रब की आज्ञाकारिता और उसके आगे समर्पण के प्रमाण के तौर पर हैं। इनसे पत्थर या किसी स्थान या व्यक्तियों की इबादत उद्देश्य नहीं है। जबकि, इस्लाम एक अल्लाह की इबादत का आह्वान करता है, जो आकाशों और धरती और उनके बीच मौजूद सारी चीज़ों का स्वामी है, हर चीज का सृष्टिकर्ता और मालिक है। इमाम हाकिम ने "मुस्तदरक" और इमाम इब-ए-ख़ुज़ैमा ने अपनी सहीह में इब्न-ए-अब्बास -रज़ियल्लाहु अन्हूमा- से रिवायत किया है।

एक मुसलमान हजर-ए-असवद (काले पत्थर) की अगर इबादत नहीं करता, तो उसे चूमता क्यों है?

उदाहरण के लिए, क्या हम किसी को अपने पिता के पत्र वाले लिफाफे को चूमने के लिए दोषी ठहराते हैं? हज के सभी काम अल्लाह के ज़िक्र को स्थापित करने के लिए एवं सारे संसार के रब की आज्ञाकारिता और उसके आगे समर्पण के प्रमाण के तौर पर हैं। इनसे पत्थर या किसी स्थान या व्यक्तियों की इबादत उद्देश्य नहीं है। जबकि, इस्लाम एक अल्लाह की इबादत का आह्वान करता है, जो आकाशों और धरती और उनके बीच जो कुछ है, सबका स्वामी है, हर चीज का सृष्टिकर्ता और हर वस्तु का मालिक है।
अल्लाह तआला ने कहा है :

"मैंने तो अपना मुख एकाग्र होकर, उसकी ओर कर लिया है, जिसने आकाशों तथा धरती की रचना की है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ।" [302] [सूरा अल-अनआम : 80]

क्या हज की रस्में अत्यधिक भीड़ के कारण कुछ मुसलमानों के मरने की आशंका के कारण भयावह नहीं हैं?

हज के दौरान भीड़ से मौत चंद सालों को छोड़कर नहीं हुई है। आम तौर पर भीड़ से मरने वालों की संख्या भी बहुत कम होती है। लेकिन उदाहरण स्वरूप, शराब पीने के कारण मरने वालों की संख्या लाखों में होती है। दक्षिण अमेरिका में फुटबॉल स्टेडियम रैलियों और कार्निवाल में शिकार होने वाले उससे भी अधिक हैं। वैसे भी मौत सत्य है, अल्लाह से मिलना सत्य है और अल्लाह की आज्ञाकारिता में मृत्यु अवज्ञा की मृत्यु से बेहतर है।

मैल्कम एक्स कहते हैं :

"इस धरती पर मेरे गुज़ारे हुए उनतीस वर्षों में पहली बार, जब मैं सभी चीज़ों के सृष्टिकर्ता के सामने खड़ा हुआ तो अनुभव किया कि मैं संपूर्ण इंसान हूँ। मैंने अपने जीवन में कभी भी सभी रंगों और नस्लों के लोगों के बीच ऐसा भाईचारा नहीं देखा है। अमेरिका को इस्लाम को समझने की जरूरत है, क्योंकि यही एकमात्र धर्म है, जिसके पास नस्लवाद की समस्या का हल है।"

एक अफ़्रीकी-अमेरिकी इस्लामी उपदेशक और मानवाधिकार अधिवक्ता ने अमेरिका में इस्लामी आन्दोलन के कारवाँ को, उसके इस्लामी अक़ीदे से दृढ़ता से विचलित होने के बाद ठीक किया और सही अक़ीदा का आह्वान किया।

सृष्टिकर्ता की रहमत :

इस्लाम में अल्लाह अपने बंदों से प्रेम करता है, तो वह उन्हें व्यक्तिवाद की पद्धति का पालन करने की अनुमति क्यों नहीं देता है? [304] जबकि व्यक्तिवाद मानता है कि व्यक्ति के हितों की रक्षा एक मूलभूत मुद्दा है, जिसे राज्य और समूहों के हितों की परवाह किए बिना प्राप्त किया जाना चाहिए। इसी तरह वे व्यक्ति के हित में किसी बाहरी हस्तक्षेप का विरोध करते हैं। चाहे वह समाज हो या संस्थान जैसा कि सरकार। क़ुरआन में ऐसी बहुत-सी आयतें हैं, जो बन्दों के लिए अल्लाह की दया और प्रेम का उल्लेख करती हैं। परन्तु बन्दा के लिए अल्लाह की मुहब्बत बन्दों के एक-दूसरे से प्रम की तरह नहीं है। क्योंकि मानवीय मानकों में प्रेम एक ऐसी आवश्यकता है, जिसे प्रेमी तलाश करता है और उसे प्रियतम के पास पा लेता है। जबकि महान अल्लाह हम से बेनियाज़ है, हमारे लिए उसकी मुहब्बत दया और कृपा की मुहब्बत है, ताक़तवर का कमज़ोर के साथ मुहब्बत है, मालदार का फ़क़ीर के साथ मुहब्बत है, सक्षम का असहाय के लिए प्रेम है, बड़े का छोटे के साथ प्रेम है और हिकमत का प्रेम है। क्या हम अपने प्यार के बहाने अपने बच्चों को वह सब करने देते हैं, जो उन्हें पसंद है? क्या हम अपने प्यार के बहाने अपने छोटे बच्चों को घर की खिड़की से बाहर कूदने या बिजली के नंगे तार से खेलने की अनुमति देते हैं?

यह असंभव है कि किसी व्यक्ति के निर्णय उसके व्यक्तिगत लाभ और आनंद पर आधारित हों और वह ध्यान का मुख्य केंद्र हो। उसके व्यक्तिगत हित देश के हितों एवं धर्म व समाज के प्रभावों से ऊपर हो, उसे अपना लिंग बदलने की अनुमति हो, वह जो चाहे करे, जो चाहे पहने एवं रास्ते में जैसा चाहे करे, इस तर्क की बुनियाद पर कि रास्ता सभी का है।

यदि कोई व्यक्ति एक साझा घर में लोगों के समूह के साथ रहता हो, क्या वह इस बात को स्वीकार करेगा कि घर का उसका कोई साथी इस आधार पर कि घर सबका है, घर के हॉल में शौच करने जैसा घिनौना काम करे? क्या वह इस घर में बिना किसी नियम या नियंत्रण के रहने को स्वीकार करेगा? पूर्ण स्वतंत्रता वाला व्यक्ति एक बदसूरत प्राणी बन जाता है और जैसा कि यह सिद्ध हो चुका है और इसमें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है कि इंसान इस पूर्ण स्वतंत्रता को सहन करने में असमर्थ है।

व्यक्तिवाद सामूहिक पहचान का स्थान नहीं ले सकत, चाहे व्यक्ति कितना भी शक्तिशाली या प्रभावशाली क्यों न हो। समाज के सदस्य ऐसे वर्ग हैं, जिन्हें एक-दूसरे की आवश्यकता है। वे एक-दूसरे से अप्रासंगिक नहीं हो सकते। उनमें से कुछ लोग फ़ौजी हैं, कुछ डॉक्टर, कुछ नर्स तो कुछ जज हैं। भला उनमें से किसी एक के लिए यह कैसे संभव है कि वह अपनी ख़ुशी हासिल करने के लिए दूसरों पर अपना लाभ और निजी स्वार्थ लादे और ध्यान का मुख्य केंद्र बन जाए?

इंसान अपनी ख़्वाहिशों को स्वतंत्र छोड़कर उनका गुलाम बन जाता है, जबकि अल्लाह चाहता है कि वह उनका मालिक बने। अल्लाह इंसान से चाहता है कि वह एक समझदार, बुद्धिमान व्यक्ति बने, जो अपनी इच्छाओं को नियंत्रित रखे। उससे

इच्छाओं को बिल्कुल ख़त्म करने की मांग नहीं है, बल्कि उसे आत्मा और रूह को ऊपर उठाने के लिए इन इच्छाओं को सही दिशा दिखाना है।
जब एक पिता अपने बच्चों को अध्ययन के लिए कुछ समय खास करने के लिए बाध्य करता है, ताकि वे भविष्य में ज्ञान के मैदान में एक ऊँचा स्थान प्राप्त कर सकें। जबकि उन बच्चों को केवल खेलने की इच्छा होती है, तो क्या वह इस समय एक क्रूर पिता माना जाता है?

सृष्टिकर्ता अपने बन्दों के लिए दयालु है, तो वह समलैंगिक प्रवृत्तियों को स्वीकार क्यों नहीं करता है?

अल्लाह तआला ने कहा है :
"जब उसने अपनी जाति से कहा : क्या तुम ऐसी निर्लज्जता का काम कर रहे हो, जो तुमसे पहले संसारवासियों में से किसी ने नहीं किया है? तुम स्त्रियों को छोड़कर कामवासना की पूर्ति के लिए पुरुषों के पास जाते हो? बल्कि तुम सीमा लांघने वाली जाति हो। और उसकी जाति का उत्तर बस यह था कि इनको अपनी बस्ती से निकाल दो। ये लोग अपने में बड़े पवित्र बन रहे हैं।" [305] [सूरा अल-आराफ़ : 80-82] यह आयत पुष्टि करती है कि समलैंगिक वंशानुगत नहीं है और न यह मानव आनुवंशिक कोड की संरचना का हिस्सा है। क्योंकि लूत की जाति इस तरह की अश्लीलता का आविष्कार करने वाला समुदाय है। यह व्यापक वैज्ञानिक अध्ययन के अनुरूप है, जिससे इसकी पुष्टि होती है कि समलैंगिकता का आनुवंशिकी से कोई लेना-देना नहीं है। [306] "मौसूअह अल-कहील लिल ईजाज़ फी अल-कुरआन व अल-सुन्नह",
https://kaheel7.net/?p=15851
क्या हम चोर की चोरी करने की प्रवृत्ति को स्वीकार करेंगे और उसका सम्मान करेंगे? यह भी प्रवृत्ति है, लेकिन दोनों ही मामलों में यह अप्राकृतिक प्रवृत्ति है। यह मानव प्रवृत्ति के विरूद्ध बग़ावत है और प्रकृति पर हमला है। इसे ठीक किया जाना चाहिए। अल्लाह ने मनुष्य को पैदा किया और उसे सही रास्ता दिखाया और उसके पास अच्छाई और बुराई के रास्तों के बीच चयन करने की स्वतंत्रता है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"और हमने उसे दोनों रास्ते दिखा दिए।" [307] [सूरा अल-बलद : 10] इसलिए, हम पाते हैं कि समलैंगिकता को प्रतिबंधित करने वाले समाज में शायद ही कभी यह अप्रकृतिक चीज़ दिखाई पड़ती हो, जबकि जिस वातावरण में इस व्यवहार को हलाल समझा जाता है और इसे प्रोत्साहन दिया जाता है, उसमें समलैंगिकों का अनुपात बढ़ जाता है। यह इंगित करता है कि किसी व्यक्ति में विचलन की संभावना को निर्धारित करने वाली चीज़ वातावरण और उसके आस-पास की शिक्षाएँ हैं। उदाहरण के तौर पर चैनलों को देखने, प्रौद्योगिकी के उपयोग या किसी फ़ुटबॉल टीम के लिए कट्टर समर्थन के अनुसार, एक व्यक्ति की पहचान हर पल बदलती रहती है। वैश्वीकरण ने उसे एक जटिल इंसान बना दिया है। गद्दार एक दृष्टिकोण वाला हो गया, असामान्य सामान्य व्यवहार का मालिक बन गया, उसके पास सार्वजनिक बहस में भाग लेने का क़ानूनी अधिकार आ गया, बल्कि हम पे उसकी मदद करना एवं उससे सुलह करना ज़रूरी हो गया। आज वह लोग हावी हो गए जिनके पास तकनीक है। यदि असामान्य वह लोग हैं जिनके पास शक्ति के साधन हैं तो वह दूसरों पर अपनी मान्यताएँ लागू करने की कोशिश करते हैं, जिससे इंसान का रिश्ता पहले अपने आपसे, फिर अपने समाज से और फिर अपने सृष्टिकर्ता से ख़राब होता है। फिर यदि व्यक्तिवाद सीधे समलैंगिकता से जुड़ जाए, तो वह मानव वृत्ति ग़ायब हो जाती है, जिससे मानव जाति अपना रिश्ता जोड़ती है और एक परिवार की अवधारणाएं खत्म हो जाती हैं। इस लिए पश्चिम ने व्यक्तिवाद से छुटकारा पाने के उपाय विकसित करना शुरू कर दिए हैं, क्योंकि इस अवधारणा पर चलते रहने से आधुनिक मनुष्य ने जो कमाया है, वह बर्बाद हो जाएगा। ठीक उसी तरह जैसे उसने परिवार की अवधारणा को खो दिया है। इस प्रकार, पश्चिम आज भी समाज में व्यक्तियों की संख्या कम होने की समस्या से पीड़ित है, जिससे प्रवासियों को आकर्षित करने के लिए दरवाजे खुल गए हैं। अल्लाह में विश्वास, उसके द्वारा हमारे लिए बनाए गए ब्रह्मांड के नियमों का सम्मान और उसके आदेशों और निषेधों का पालन करना, दुनिया तथा आख़िरत में खुशी का मार्ग है।

अल्लाह स्वयं को कभी क्षमाशील और दयालु और अन्य समयों में कठोर दंड देने वाले के रूप में कैसे वर्णित करता है?

अल्लाह उन लोगों के लिए क्षमाशील और दयालु है, जो बिना किसी जिद के और मानव स्वभाव और मनुष्य की कमज़ोरी के कारण पाप करते हैं, फिर उसके सामने तौबा करते हैं और अपने गुनाहों द्वारा अल्लाह को चुनौती नहीं देते हैं। मगर अल्लाह उसके लिए कठोर है, जो उसको चुनौती देता है, उसके अस्तित्व का इंकार करता है और उसके बुत एवं जानवर की सूरत में प्रकट होने की आस्था रखता है। इसी तरह, अल्लाह उसके लिए भी कठोर है जो अपनी अवज्ञा में आगे बढ़ता जाता है, पश्चाताप नहीं करता है और अल्लाह नहीं चाहता है कि उसे पश्चाताप की तौफ़ीक मिले। यदि कोई इंसान किसी जानवर को गाली दे, तो कोई उसे बुरा नही कहेगा, परन्तु यदि वह अपने माँ-बाप को गाली दे, तो लोग उसे सख़्त बुरा-भला कहेंगे। अब ज़रा सृष्टिकर्ता के अधिकार का अंदाज़ा लगाइए? हमें यह नहीं देखना चाहिए कि हमने कितनी छोटी अवज्ञा की है, बल्कि हमें यह देखना चाहिए कि हमने किसकी अवज्ञा की है।

क्या बुराई अल्लाह की तरफ से आती है?

बुराई अल्लाह की तरफ से नहीं आती है। बुराइयाँ अस्तित्वगत मामले नहीं हैं। अस्तित्व केवल अच्छाई का है।
उदाहरण के तौर पर यदि कोई व्यक्ति खड़ा होता है और किसी अन्य व्यक्ति को तब तक मारता है, जब तक वह हिलने-डुलने की क्षमता खो नहीं देता, तो यह अत्याचार है और अत्याचार बुरी चीज़ है।
लेकिन वह व्यक्ति जो लाठी उठाता है और दूसरे व्यक्ति को मारता है, उसके पास शक्ति का होना कोई बुराई नहीं है।
इच्छा का पाया जाना, जो अल्लाह ने उसके अंदर रखी है, बुराई नहीं है।

उसके पास हाथ हिलाने की क्षमता होना भी बुराई नहीं है।
लाठी में मारने का गुण होना भी बुराई नहीं है।
इन सब अस्तित्वगत चीज़ों का होना अपने आपमें भलाई है और इसमें कोई बुराई नहीं है, जब तक इन चीज़ों के ग़लत इस्तेमाल से कोई नुकसान न हो, जो कि पिछले उदाहरण में पक्षाघात रोग है। इस उदाहरण के आधार पर, एक बिच्छू और एक सांप का अस्तित्व अपने आप में कोई बुराई नहीं है, जब तक कि कोई व्यक्ति इन्हें न छेड़े और यह उसे डंक न मार दें। अल्लाह के कार्यों में बुराई नहीं है। वह केवल भलाई है। बल्कि बुराई उन धटनाओं में है, जिनको अल्लाह अपने फ़ैसले एवं किसी निर्धारित हिकमत के कारण घटित होने देता है। उनमें बहुत सारे हित छुपे होते हैं। हालांकि अल्लाह उन घटनाओं को घटित होने से रोकने में सक्षम है। मगर इंसान ने इन अच्छी चीज़ों का ग़लत प्रयोग किया है।

प्राकृतिक आपदाओं में सृष्टिकर्ता की क्या हिकमत है?

सृष्टिकर्ता ने प्रकृति के नियम और उन्हें संचालित करने वाली पद्धतियाँ स्थापित कर रखी हैं। ये नियम और पद्धतियाँ किसी पर्यावरणीय असंतुलन या खराबी की स्थिति में खुद को खुद के द्वारा बचाने का काम करती हैं और पृथ्वी में सुधार और जीवन को बेहतर तरीके से जारी रखने के उद्देश्य से इस संतुलन के अस्तित्व को बनाए रखती हैं। दरअसल वही चीज़ पृथ्वी पर ठहरती और बाक़ी रहती है, जो लोगों और जीवन के लिए लाभकारी होती है। जब पृथ्वी पर मनुष्यों को प्रभावित करने वाली आपदाएँ, जैसे बीमारियाँ, ज्वालामुखी, भूकंप और बाढ़ आदि आती हैं, तो उनके माध्यम से अल्लाह के कुछ नाम और गुण, जैसे शक्तिशाली, शिफ़ा देने वाला और रक्षक आदि प्रकट होते हैं। उसका नाम न्याय करने वाला किसी अत्याचारी या पापी को सज़ा देते समय प्रकट होता है और उसका नाम हकीम निष्पाप व्यक्ति को आज़माते समय प्रकट होता है, जिसे आज़माइश के समय सब्र करने पर अच्छा बदला मिलेगा तथा सब्र न करने पर यातना का सामना करना पड़ेगा। इन आज़माइशों के माध्यम से इंसान अपने रब की महानता को एवं उसके दिए हुए उपहारों के माध्यम से उसके जमाल (सौंदर्य) को जान पाता है। यदि इंसान केवल अल्लाह के ख़ूबसूरत नामों एवं गुणों को जाने तो वह अल्लाह को पूरी तरह जान नहीं पाएगा।
बहुत सारे समकालीन भौतिकवादी दार्शनिकों के नास्तिक्ता अपनाने के पीछे आपदाओं, बुराई और कष्ट का हाथ रहा है। उन्हीं में से एक दार्शनिक "एंथोनी फ्लेव" हैं। उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले अल्लाह के अस्तित्व को स्वीकार किया एवं एक पुस्तक लिखी जिसका नाम "अल्लाह पाया जाता है" रखा। बावजूद इसके कि वह बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में नास्तिकता के नेता थे, उन्होंने अल्लाह के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए कहा :
"मानव जीवन में बुराई और पीड़ा की उपस्थिति माबूद के अस्तित्व को नकारती नहीं है, लेकिन यह हमें दैवीय गुणों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करती है।" एंथनी फ्लेव का मानना है कि इन आपदाओं के कई सकारात्मक पहलू हैं। मसलन यह इन्सान की भौतिक क्षमताओं को उकसाती हैं और वह कुछ ऐसा आविष्कार करता है, जो उसे सुरक्षा प्रदान करता है। यह उसके सर्वोत्तम मनोवैज्ञानिक लक्षणों को भी उभारती हैं और उसे लोगों की मदद करने के लिए प्रेरित करती हैं। पूरे इतिहास में मानव सभ्यताओं के निर्माण में बुराई और कष्ट का भी योगदान रहा है। वह कहते हैं : "इस दुविधा की व्याख्या करने के लिए चाहे कितने भी शोध हों, धार्मिक व्याख्या सबसे स्वीकार्य और जीवन की प्रकृति के सबसे अधिक अनुकूल रहेगी।" [308]
पुस्तक "ख़ुराफ़ह अल-इल्हाद" (नास्तिक्ता का मिथक) से उद्धरित, डा० अम्र शरीफ़, प्रकाशन वर्ष 2014 ई०।
वास्तव में, हम देखते हैं कि हम कभी-कभी अपने छोटे बच्चों को, उनके पेट में चीरा लगवाने के लिए प्यार से ऑपरेटिंग रूम में ले जाते हैं। ऐसा करते समय हमें डॉक्टर की बुद्धिमत्ता, छोटे बच्चे के लिए उसके प्यार और उसे बचाने के लिए उसकी तत्परता पर पूरा भरोसा होता है।

क्या जीवन में बुराई की उपस्थिति यह दर्शाती है कि अल्लाह नहीं है?

अल्लाह के अस्तित्व को नकारने के बहाने के रूप में इस सांसारिक जीवन में बुराई के अस्तित्व के कारण के बारे में प्रश्न करने वाला, हमारे सामने अपनी अदूरदर्शिता, उसके पीछे की हिकमत के संबंध में अपने विचार की कमज़ोरी और अंतरतम चीजों के बारे में जागरूकता की कमी को प्रकट करता है। जबकि नास्तिकों ने भी अपने प्रश्न के ज़िम्न में यह स्वीकार किया है कि बुराई एक अपवाद है।
इसलिए, बुराई के पीछे छुपी हिकमत के बारे में पूछने से पहले, इससे भी अधिक यथार्थ प्रश्न पूछना चाहिए था कि "सबसे पहले भलाई कैसे पाई गई?"
इसमें किसी तरह का कोई संदेह नहीं है कि जो प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है, उससे शुरूआत करनी चाहिए कि भलाई को किसने पैदा किया है? हमें शुरुआती बिंदु या मूल या प्रचलित सिद्धांत पर सहमत होना चाहिए। उसके बाद हम अपवादों के कारण ढूंढ़ सकते हैं।
वैज्ञानिक शुरुआत में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के निश्चित और विशिष्ट नियम स्थापित करते हैं, फिर उन नियमों के अपवादों और विसंगतियों का अध्ययन किया जाता है। इसी तरह, नास्तिक केवल उसी समय बुराई के उद्भव की परिकल्पना को दूर कर सकते हैं, जब वे शुरू में असंख्य सुंदर, व्यवस्थित और अच्छी घटनाओं से भरी दुनिया के अस्तित्व को स्वीकार करें।
इसी तरह औसत जीवन में स्वास्थ्य की अवधि और बीमारी की अवधि की तुलना के द्वारा, या दशकों की समृद्धि और उन्नति और तबाही और विनाश की प्रतिकूल अवधियों की तुलना के द्वारा, इसी प्रकार प्रकृति की सदियों की शांति और स्थिरता और ज्वालामुखियों और भूकंपों के प्रतिकूल विस्फोट की तुलना के द्वारा हम इस तथ्य तक पहुंच सकते हैं कि शुरू से फैली हुई भलाई कहाँ से आई? अराजकता और संयोग पर आधारित दुनिया एक अच्छी दुनिया का निर्माण नहीं कर सकती। प्रतिकूल बात यह है कि वैज्ञानिक प्रयोग इसकी पुष्टि करते हैं। ऊष्मप्रवैगिकी के दूसरे नियम में कहा गया है कि बिना किसी बाहरी प्रभाव के एक पृथक प्रणाली में कुल एन्ट्रापी (विकार या यादृच्छिकता की डिग्री) हमेशा बढ़ेगी और यह प्रक्रिया अपरिवर्तनीय है।
दूसरे शब्दों में, संगठित चीजें हमेशा ढहती और लुप्त होती रहेंगी, जब तक कि बाहर से कोई चीज़ उन्हें एकत्र न करे। इसी तरह, अंधे उष्मागतिक बल कभी भी अपने आप में कुछ भी अच्छा नहीं बना सकते थे, न बड़े पैमाने पर अच्छे हो सकते थे,

जैसा कि वे हैं, जब तक कि सृष्टिकर्ता इन यादृच्छिक चीज़ों को संगठित न करता जो अद्भुत चीजों में प्रकट होती हैं जैसा कि ख़ूबसूरती, हिकमत, ख़ुशी और मुहब्बत। यह केवल यह प्रमाणित करने के लिए है कि असल भलाई है और बुराई अपवाद है, और यह कि एक माबूद है जो सक्षम है, सृष्टिकरता है, स्वामी है और प्रबंधक है।

अल्लाह आग का अज़ाब क्यों देता है?

उदाहरण के तौर पर जो व्यक्ति अपने माता-पिता का तिरस्कार करता है, उनका अपमान करता है, उन्हें घर से बाहर निकाल देता है और उन्हें सड़क पर डाल देता है, हम उस व्यक्ति के बारे में क्या महसूस करेंगे?

यदि कोई व्यक्ति कहे कि वह उसको अपने घर में ले आएगा, उसका सम्मान करेगा, उसे खाना खिलाएगा और इस काम के लिए उसका धन्यवाद देगा, तो क्या लोग इस काम के लिए उसकी सराहना करेंगे? क्या लोग उसके इस व्यवहार को स्वीकार करेंगे? ऐसे में हम उस व्यक्ति के अंजाम की क्या उम्मीद कर सकते हैं, जो अपने सृष्टिकर्ता को अस्वीकार करता है और उसमें विश्वास नहीं रखता है? दरअसल उसको आग की सज़ा देना उसको सही स्थान पर रखना है। क्योंकि उसने पृथ्वी पर शांति और अच्छाई का तिरस्कार किया है, अतः वह स्वर्ग के आनंद के योग्य नहीं है।

हम उस व्यक्ति के साथ क्या व्यवहार किए जाने की उम्मीद करेंगे, जो रासायनिक हथियार से बच्चों को सज़ा देता है। क्या उसे जन्नत में बिना हिसाब प्रवेश मिल जाएगा?

जबकि उनका पाप ऐसा पाप नहीं है, जो समय के साथ सीमित हो, बल्कि यह उनकी एक स्थायी आदत बन चुकी है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"यदि उन्हें संसार में लौटा दिया जाए, तो वही करेंगे जिनसे उन्हें रोका गाय है। वास्तव में वे हैं ही झूठे।" [309] [सूरा अल-अन्आम : 28]

वे अल्लाह का सामना भी झूठी क़सम खाकर करेंगे, जब वे क़यामत के दिन उसके सामने होंगे।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा, तो वे उसके सामने क़समें खाएँगे, जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं। और वे समझेंगे कि वे किसी चीज़ (आधार)[11] पर (क़ायम) हैं। सुन लो! निश्चय वही झूठे हैं।" [310] [सूरा अल-मुजादला : 18]

साथ ही, बुराई वह लोग भी करते हैं, जिनके हृदयों में ईर्ष्या और जलन है और जो लोगों के बीच समस्याओं और संघर्षों का कारण बनते हैं। इसलिए यह न्याय में से है कि उन्हें आग की सज़ा मिले, जो उनके स्वभाव के अनुकूल है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"और जो हमारी आयतें को झुठलाया और उनसे घमंड किया, वही आग की सज़ा पाने वाले हैं और वे उसमें सदैव रहेंगे।" [311] [सूरा अल-आराफ़ : 36]

अल्लाह के गुण न्यायकारी का तक़ाज़ा है कि वह अपनी दया के साथ-साथ बदला लेने वाला भी हो। ईसाई धर्म में अल्लाह केवल "मुहब्बत" का नाम है, यहूदी धर्म में अल्लाह केवल "क्रोध" का नाम है, जबकि इस्लाम में अल्लाह न्यायकारी एवं दयालू को कहते हैं, जिसके सभी अच्छे नाम हैं, जो ख़ूबसूरत भी हैं और जलाली (सम्मान सूचक) भी।

फिर व्यवहारिक जीवन में हम आग का प्रयोग खरे को खोटे से अलग करने के लिए करते हैं जैसा कि सोना और चाँदी। अल्लाह प्रलोक के जीवन में आग का प्रयोग अपने बन्दे को गुनाहों एवं पापों से पाक करने के लिए करेगा, फिर अंत में अपनी दया से हर उस व्यक्ति को आग से निकाल देगा जिसके दिल में कण के बराबर भी ईमान होगा।

अल्लाह दयालु है और हर भलाई का स्रोत है। फिर क्यों हम सबको बिना हिसाब जन्नत में प्रवेश नहीं देगा?

वास्तव में, अल्लाह चाहता है कि उसके सभी बंदे ईमान ले आएँ।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"और वह अपने बंदों के लिए नाशुक्री पसंद नहीं करता, और यदि तुम शुक्रिया अदा करो, तो वह उसे तुम्हारे लिए पसंद करेगा। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर तुम्हारा लौटना तुम्हारे पालनहार ही की ओर है। तो वह तुम्हें बतलाएगा जो कुछ तुम किया करते थे। निश्चय वह दिलों के भेदों को भली-भाँति जानने वाला है।" [312] [सूरा अल-ज़ुमर : 7] इसके बावजूद, यदि अल्लाह सभी बंदों को बिना हिसाब जन्नत में प्रवेश दे दे तो यह न्याय का घोर उल्लंघन होगा। इसका अर्थ यह होगा कि अल्लाह अपने नबी मूसा और फिरऔन के साथ एक जैसा मामला करे, और अत्याचारी एवं उनके शिकार को जन्नत में प्रवेश करा दे, जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि स्वर्ग में प्रवेश करने वाले लोग योग्यता के आधार पर इसमें प्रवेश करें, एक तंत्र की आवश्यकता है।

इस्लामी शिक्षाओं की सुंदरता है कि हम जितना अपने बारे जानते हैं, अल्लाह हमें हमारे बारे में उससे अधिक जानता है। उसने हमें बताया कि उसकी संतुष्टि प्राप्त करने और स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए हमें अपने पास मौजूद सांसारिक साधनों को अपनाना ज़रूरी है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

“अल्लाह किसी व्यक्ति को उसकी शक्ति से अधिक भार नहीं देता।” [313] [सूरा अल-बक़रा : 286]

सृष्टिकर्ता अपने बंदों के छोटे से जीवन में उनके दवारा किए गए थोड़े से पापों के लिए उनको अंतहीन पीड़ा देगा?

कई अपराधों में उम्रकैद की सजा होती है। क्या कोई है जो कहता है कि उम्रकैद की सजा अनुचित है, क्योंकि अपराधी ने कुछ ही मिनटों में अपना अपराध किया? क्या दस साल की सजा अन्यायपूर्ण है, क्योंकि अपराधी ने केवल एक वर्ष के लिए धन का गबन किया है? दंड अपराधों की अवधि से संबंधित नहीं होते हैं, बल्कि अपराधों के आकार और उनकी गंभीरता से संबंधित होते हैं।

अल्लाह बार बार अग्नि की चेतावनी क्यों देता है? क्या यह अल्लाह की दया के गुण के विपरीत नहीं है?

माँ अपने बच्चों को यात्रा या काम पर जाते समय आते-जाते अपना ध्यान रखने की चेतावनी देकर बहुत थका देती है, तो क्या वह एक क्रूर माँ मानी जाती है? यह मामला को उलटा पेश करने का मामला है, जो दया को क्रूरता में बदल देता है। अल्लाह अपने बंदों को सचेत करता है, उनके प्रति अपनी दया के कारण उन्हें चेतावनी देता है और उन्हें मुक्ति के मार्ग पर ले जाता है। जब वे उसके सामने पश्चाताप करते हैं, तो उसने उन्हें उनके बुरे कामों को अच्छे कामों से बदलने का वादा किया है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

“उन लोगों के सिवाय जो माफी माँग लें और ईमान लाएँ और नेक काम करें। ऐसे लोगों के गुनाहों को अल्लाह नेकी में बदल देता है। अल्लाह तआला बड़ा क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।" [314] [सूरा अल-फ़ुरक़ान : 70]

दूसरी तरफ़ नेकी के थोड़-थोड़े कार्यों के बदले में अनंत काल की जन्नतों के इनाम और बड़े आनंद के वादे की ओर हमारा ध्यान क्यों नहीं जाता?

अल्लाह तआला ने कहा है :

"और जो अल्लाह पर ईमान लाए और सत्कर्म करे, अल्लाह उसकी बुराइयों को उससे दूर कर देगा और उसे ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे से नहरें बहती होंगी। वे वहाँ हमेशा रहेंगे। यही बड़ी सफलता है।" [315] [सूरा अल-तग़ाबुन : 9]

क़ुरआन क्यों दोहराता है कि अल्लाह मोमिनों से प्यार करता है और काफ़िरों से प्यार नहीं करता है? क्या सभी लोग उसके बन्दे नहीं हैं?

अल्लाह तआला ने अपने सभी बन्दों को मुक्ति का मार्ग दिखाया है और वह उनके लिए अविश्वास को पसंद नहीं करता है। साथ ही वह ग़लत व्यवहार को पसंद नहीं करता है, जो इंसान कुफ़्र एवं धरती पर बिगाड़ के द्वारा करता है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"यदि तुम नाशुक्री करो, तो अल्लाह तुमसे बहुत बेनियाज़ है और वह अपने बंदों के लिए नाशुक्री पसंद नहीं करता, और यदि तुम शुक्रिया अदा करो, तो वह उसे तुम्हारे लिए पसंद करेगा। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर तुम्हारा लौटना तुम्हारे पालनहार ही की ओर है। तो वह तुम्हें बतलाएगा जो कुछ तुम किया करते थे। निश्चय वह दिलों के भेदों को भली-भाँति जानने वाला है।" [316] [सूरा अल-ज़ुमर : 7]

एक ऐसे पिता के बारे में हमारी क्या राय होगी, जो अपने बच्चों के सामने बार-बार कहता है कि मुझे तुम सब पर गर्व है, चाहे तुम लोग चोरी करो, व्याभिचार करो, हत्या करो, धरती पर फ़साद मचाओ, तुम लोग मेरे लिए नेक बन्दे की तरह हो? सीधे शब्दों में कहें तो इस पिता का सबसे सरल विशेषण यह होगा कि वह शैतान की तरह है, जो अपने बच्चों से धरती पर बिगाड़ फैलाने का आग्रह करता है।

बन्दे पर सृष्टिकर्ता के अधिकार :

सृष्टिकर्ता अपने बंदों से पाप क्यों स्वीकार नहीं करता है?

यदि कोई व्यक्ति अल्लाह की अवज्ञा करना चाहता है, तो वह उसकी प्रदान की हुई आजीविका में से न खाए, उसकी धरती छोड़ दे और उसे एक सुरक्षित स्थान की तलाश करनी चाहिए, जहाँ अल्लाह उसे न देख सके। जब मौत का फ़रिश्ता उसकी आत्मा को क़ब्ज़ करने आए, तो उससे कहे कि थोड़ा समय दो, ताकि मैं सच्ची तौबा कर लूँ एवं नेक काम कर लूँ। जब क़यामत के दिन अज़ाब के फ़रिश्ते उसे जहन्नम ले जाने के लिए आएं, तो उनके साथ न जाए, उनका मुक़ाबला करे, उनके साथ जाने से मना कर दे और जन्नत में जाने की ज़िद करे। क्या ऐसा करना संभव है? [317] इब्राहीम बिन अदहम की कहानी : जब कोई व्यक्ति अपने घर में कोई पालतू जानवर रखता है, तो उससे ज़्यादा से ज़्यादा यह आशा करता है कि वह उसकी बात माने। यह इसलिए कि उसने उसको ख़रीदा है, उसे पैदा नहीं किया है। ऐसे में अपने सृष्टिकर्ता के बारे में हमारी क्या राय है? क्या वह हमारे अज्ञापालन, इबादत एवं समर्पण का अधिकार नहीं रखता है। इस सांसारिक यात्रा में हम कई मामलों में अपनी इच्छा के विरुद्ध समर्पण करते हैं। हमारा दिल धड़कता है, हमारा पाचन तंत्र काम करता है, हमारी इंद्रियां पूरी तरह से अनुभव करती हैं और हमें केवल अल्लाह के आगे अपने बाकी मामलों में समर्पण करना है, जिसमें हमें चुनने का विकल्प दिया गया है, ताकि हम सुरक्षित रूप से नजात के साहिल पर पहुंच सकें।

अल्लाह अपने बन्दों को अज़ाब क्यों देगा, यदि वे उसपर ईमान न लाएं?

हमें ईमान एवं सारे संसारों के रब के प्रति समर्पण के बीच अंतर करना होगा।

सारे संसारों के रब का आवश्यक अधिकार, जिसे छोड़ना किसी के लिए उचित नहीं है, यह है कि उसके एक होने को स्वीकार किया जाए, उसी की इबादत की जाए, उसके साथ किसी को साझी न ठहराया जाए। वही एक सृष्टिकर्ता है, उसी की बादशाहत है, उसी का आदेश चलता है, चाहे हम मानें या इंकार कर दें। यही ईमान का मूल है (ईमान स्वीकार करने एवं काम करने का नाम है)। इसके अतिरिक्त हमारे पास दूसरा विकल्प नहीं है। इसी की रोशनी में इंसान का हिसाब होगा एवं उसे सज़ा दी जाएगी।

समर्पण का उलटा अपराध है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"क्या हम आज्ञाकारियों को पापियों के समान कर देंगे?" [318] [सूरा अल-क़लम : 35]

किसी को सारे संसारों के रब के बराबर या साझी ठहराने को अत्याचार कहते हैं।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"जानते हुए तुम अल्लाह तआला के साझी न बनाओ।" [319] [सूरा अल-बक़रा : 22] "जो लोग ईमान रखते हैं और अपने ईमान को शिर्क से नहीं मिलाते हैं, ऐसे ही लोगों के लिए शान्ति है और वही सीधे रास्ते पर चल रहे हैं।" [320] [सूरा अल-अनआम : 82]

ईमान एक अनदेखा मुद्दा है, जिसके लिए अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसकी पुस्तकों, उसके रसूलों और अंतिम दिन पर विश्वास रखना आवश्यक है। साथ ही अल्लाह के निर्णयों को स्वीकार करना और उससे संतुष्ट होना ज़रूरी है।

अल्लाह तआला ने कहा है [321]:

"(कुछ) बद्दुओं ने कहा : हम ईमान ले आए। आप कह दें : तुम ईमान नहीं लाए। परंतु यह कहो कि हम इस्लाम लाए (आज्ञाकारी हो गए)। और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में प्रवेश नहीं किया। और यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करोगे, तो वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों में से कुछ भी कमी नहीं करेगा। निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील, अत्यंत दयावान् है।" [321] [सूरा अल-हुजुरात : 14] उपर्युक्त आयत हमें बताती है कि ईमान एक उच्च और महान दर्जा है। ईमान नाम है राज़ी होने, स्वीकार करने और ख़ुश होने का। ईमान की कई श्रेणियाँ एवं दर्जे हैं और ईमान घटता-बढ़ता रहता है। ग़ैब के मामलों को समझने की क्षमता ओर दिल का उन्हें स्वीकार करना एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। उसी प्रकार इंसान अपने रब के जमाल व जलाल के गुणों को समझने एवं रब को जानने में अलग-अलग होते हैं। ग़ैब के मामलों को कम समझने या सोच के संकीर्ण होने पर इंसान की पकड़ नहीं होगी, परन्तु सदैव जहन्नम में रहने से बचने के लिए कम से कम जो चीज़ उसके लिए आवश्यक है उसपर उसकी पकड़ होगी। यह आवश्यक है कि अल्लाह को एक माना जाए और यह माना जाए कि सारी सृष्टि उसी की है, सारे संसार में उसी का आदेश चलता है एवं उसी की इबादत होनी चाहिए। इसे स्वीकार कर लेने के बाद अल्लाह जिसके चाहे अन्य गुनाहों को माफ़ कर दे। इसके अलावा इंसान के पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है। या तो ईमान औ सफलता या फिर कुफ़्र और बर्बादी। या तो कुछ है या फिर कुछ नहीं है।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"निःसंदेह अल्लाह यह क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझी बनाया जाए और उसके सिवा जिसे चाहे, क्षमा कर देगा। जो अल्लाह का साझी बनाता है, तो उसने महा पाप गढ़ लिया।" [322]

ईमान ग़ैब से जुड़ा हुआ विषय है और ग़ैब के ज़ाहिर होने या क़यामत की निशानियाँ दिख जाने के बाद ईमान लाने का कोई फ़ायदा नहीं रह जाएगा। [सूरा अल-निसा : 48]

अल्लाह तआला ने कहा है :

"जिस दिन तुम्हारे पालनहार की तरफ से कोई निशानी आ जाएगी, तो उस दिन उसका ईमान लाना उसको कोई काम न देगा, जो पहले से ईमान न लाया हो, या ईमान की स्थिति में कोई सत्कर्म न किया हो।" [323] [सूरा अल-अन्आम : 158]

यदि कोई व्यक्ति ईमान रखते हुए नेक कामों से लाभान्वित होना चाहता है और अपनी नेकियों को बढ़ाना चाहता है, तो यह क़यामत आने और परोक्ष के प्रकट होने से पहले होना चाहिए।

जहाँ तक उस व्यक्ति की बात है, जिसके खाते में नेक काम नहीं हैं, अगर वह हमेशा के जहन्नम से बचना चाहता है, तो उसके लिए अनिवार्य है कि वह दुनिया से इस अवस्था में निकले कि अल्लाह के सामने समर्पित हो, अल्लाह के एक होने पर विश्वास रखता हो और उसकी इबादत करता हो। कुछ पापियों को अस्थायी रूप से जहन्नम में जाना पड़ सकता है, परन्तु यह अल्लाह की चाहत के तहत है। यदि वह चाहेगा तो क्षमा कर देगा और यदि चाहेगा तो जहन्नम में डाल देगा।

अल्लाह तआला ने कहा है :

"हे ईमान वालो! अल्लाह से ऐसे डरो, जैसे वास्तव में उससे डरना होता है, तथा तुम्हारी मौत इस्लाम पर रहते हुए ही आनी चाहिए।" [324] [सूरा आल-ए-इमरान : 102] इस्लाम में ईमान का मतलब ज़बान से इक़रार करना और उसके तक़ाज़े पर अमल करना है। ईमान का मतलब केवल विश्वास नहीं है, जैसा कि आज ईसाई धर्म की शिक्षाओं में है और न केवल अमल है, जैसा कि नास्तिक्ता में है। वह व्यक्ति जो ग़ैब पर ईमान एवं धैर्य के स्टेज में है, उसका ईमान उस व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकता है, जिसने आख़िरत में ग़ैब को देख लिया हो और उसके आगे परोक्ष प्रकट हो चुका हो। इसी तरह वह व्यक्ति जिसने मुसीबत, सख़्ती, कमज़ोरी एवं इस्लाम के अंजाम से अज्ञानता की अवस्था में अल्लाह के लिए काम किया है, उस व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकता है जिसने अल्लाह के लिए उस समय काम किया हो, जब इस्लाम विजयी और शक्तिशाली हो चुका हो।

अल्लाह तआला ने कहा है :

“तुम में से जिन लोगों ने विजय से पूर्व अल्लाह के मार्ग में ख़र्च किया तथा धर्मयुद्ध किया, वह (दूसरों के) समतुल्य नहीं, अपितु उनसे अत्यंत उच्च पद के हैं, जिन्होंने विजय के पश्चात दान किया तथा धर्मयुद्ध किया। हाँ, भलाई का वचन तो अल्लाह तआला का उन सब से है, और अल्लाह उन सब की अच्छी तरह ख़बर रखता है जो तुम करते हो।” [325] [सूरा अल-हदीद : 10]

अल्लाह बिना कारण किसी को दंडित नहीं करता। इंसान का हिसाब लिया जाएगा और उसे या तो बन्दों के अधिकार बर्बाद करने के कारण या फिर सारे संसारों के रब के अधिकार को नष्ट करने के कारण दंडित किया जाएगा ।

वह अधिकार जिसे, सदैव के जहन्नम से नजात पाने के लिए, किसी को छोड़ने की अनुमति नहीं है, वह अधिकार है सारे संसारों के रब के एक होने, उसी की इबादत एवं उसका कोई साझी न होने को स्वीकार करना, इन शब्दों के द्वारा कि "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है और उसका कोई साझी नहीं है, मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके बंदे एवं उसके रसूल हैं, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सभी रसूल सत्य हैं और मैं गवाही देता हूँ कि जन्नत सत्य है और जहन्नम सत्य है" फिर इन शब्दों के अधिकार को पूरा करना।

इस्लाम को स्वीकार करने से किसी को न रोकना या किसी ऐसे काम का समर्थन न करना जिसका उद्देश्य इस्लामी आह्वान एवं अल्लाह के धर्म को फैलने से रोकना हो।

लोगों के अधिकारों का अतिक्रमण न करना, उनको नष्ट न करना या उनपर अत्याचार न करना।

सृष्टि या सृष्टियों से बुराई को रोकना। इसके लिए लोगों से अपने आपको दूर करना पड़े तो भी कर लेना।

कभी-कभी इंसान के पास बहुत सारे नेक काम नहीं होते हैं, परन्तु वह किसी को हानि नहीं पहुँचाता है या कोई ऐसा काम नहीं करता है जो उसके अपने आपके लिए या लोगों के लिए बुरा हो, अल्लाह के एक होने की गवाही देता है, तो उसके जहन्नम से नजात पाने की उम्मीद है।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें यातना दे, यदि तुम कृतज्ञ रहो तथा ईमान रखो और अल्लाह बड़ा गुणग्राही अति ज्ञानी है।" [326] [सूरा अल-निसा : 147]
मनुष्यों को रैंक और दर्जा के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा। इस दुनिया दुनिया में उनके कर्मों से शुरू होकर, क़यामत होने तक, अनदेखी दुनिया के प्रकट होने एवं आख़िरत में हिसाब शुरू होने तक। क्योंकि कुछ समुदायों को अल्लाह आख़िरत में आज़माएगा, जैसा कि हदीस शरीफ में आया है।
संसारों का रब प्रत्येक व्यक्ति को उसके बुरे कर्मों के अनुसार दंड देता है। दंड या तो दुनिया में ही दे देता है या आख़िरत तक उसको टाल देता है। यह काम की गंभीरता, तौबा करने या न करने और अन्य सृष्टियों पर पड़ने वाले उसके प्रभाव अथवा उससे होने वाले नुक़सान पर निर्भर करता है। दरअसल अल्लाह बिगाड़ को पसंद नहीं करता।
पिछले समुदायों, जैसे कि नूह, हूद, सालेह और लूत -अलैहिमुस्सलाम- के समुदाय और फिरऔन आदि, जिन्होंने रसूलों को झुठलाया, अल्लाह ने उनके निंदनीय कर्मों तथा उनके द्वारा किए गए अत्याचार के कारण इस दुनिया में ही उनको दंडित कर दिया, क्योंकि उन्होंने न अपने आपको रोका, न अपनी बुराई से रुके, बल्कि उसमें आगे बढ़ते ही चले गए। हूद -अलैहिस्सलाम- के समुदाय ने धरती पर अहंकार किया, सालेह -अलैहिस्सलाम- के समुदाय ने ऊँटनी की हत्या की, लूत -अलैहिस्सलाम- का समुदाय निर्लज्जता पर डट गया, शोएब -अलैहिस्सलाम- का समुदाय बिगाड़, नाप-तौल में कमी करके लोगों के अधिकार मारने पर डट गया, फिरौन की जाति ने मूसा -अलैहिस्सलाम- की जाति पर अत्याचार किया और उनसे पहले नूह -अलैहिस्सलाम- का समुदाय रब की इबादत के साथ शिर्क करने पर अड़ा रहा।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"जो व्यक्ति अच्छा कर्म करेगा, तो वह अपने ही लाभ के लिए करेगा और जो बुरा कार्य करेगा, तो उसका दुष्परिणाम उसी पर होगा और आपका पालनहार बंदों पर तनिक भी अत्याचार करने वाला नहीं है।" [327] [सूरा फ़ुस्सिलतः 46] "तो हमने हर एक को उसके पाप के कारण पकड़ लिया। फिर उनमें से कुछ पर हमने पथराव करने वाली हवा भेजी, और उनमें से कुछ को चीख[ने पकड़ लिया, और उनमें से कुछ को हमने धरती में धँसा दिया और उनमें से कुछ को हमने डुबो दिया। तथा अल्लाह ऐसा नहीं था कि उनपर अत्याचार करे, परंतु वे स्वयं अपने आपपर अत्याचार करते थे।" [328] [सूरा अल-अनकबूतः 40]

अंजाम का निर्धारण एवं सुरक्षा तक पहुँचना :

क्या इंसान अपने माता-पिता और पूर्वजों के धर्म को बदल सकता है?

इस ब्रह्मांड के चारों ओर तलाश करना एवं ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य का अधिकार है। अल्लाह ने हमें यह बुद्धि इसलिए दी है, ताकि हम इसका प्रयोग करें, न कि इसे बेकार छोड़ दें। जो भी व्यक्ति अपनी बुद्धि का उपयोग किए बिना या अपने पितरों के धर्म का विश्लेषण किए बिना उसका पालन करता है, वह अपने आपपर अत्याचार करता है, खुद अपना तिरस्कार करता है और अल्लाह की दी हुई अक़्ल जैसी एक बहुत बड़ी नेमत का तिरस्कार करता है। कितने मुसलमान एक एकेश्वरवादी परिवार में पैदा हुए फिर अल्लाह के साथ शिर्क कर सत्य मार्ग से भटक गए। वहीं बहुत सारे लोग ऐस हैं, जो बहुदेववाद या ट्रीनिटी में विश्वास रखने वाले ईसाई धर्म में पैदा हुए और फिर उन्होंने अल्लाह के एकमात्र पूज्य होने की गवाही दे दी।
निम्नलिखित प्रतीकात्मक कहानी इसी बात की व्याख्या करती है। एक पत्नी ने अपने पति के लिए मछली पकाई, परन्तु उसने उसे पकाने से पहले उसका सर एवं पूंछ काट दी। जब उसके पति ने उससे पूछा कि तुमने सर और पूंछ को क्यों काट दिया? तो उसने कहा कि मेरी माँ इसे इसी तरह पकाती है। पति ने माँ से पूछा कि जब आप मछली पकाती हैं तो पूंछ और सर क्यों काट देती हैं? माँ ने जवाब दिया कि मेरी माँ इसे ऐसे ही पकाती हैं। तब पति ने दादी से पूछा कि आप सर और पूंछ क्यों काटती हैं? उन्होंने जवाब दिया कि घर में खाना पकाने का बर्तन छोटा था और मछली को बर्तन में फिट करने के लिए मुझे सिर और पूंछ काटनी पड़ती थी।
तथ्य यह है कि हमसे पहले के युगों में घटी पिछली कई घटनाएं उनके युग और समय के अनुसार फिट थीं। उनके कारण होते थे, जो उनके साथ खास थे। पिछली कहानी इसी को स्पष्ट करती है। वास्तव में, यह एक मानवीय विपत्ति है कि हम ऐसे समय में जीते हैं जो हमारा अपना समय नहीं है तथा हम अलग-अलग परिस्थितियों और बदलते समय के बावजूद बिना सोचे समझे या पूछे दूसरों के कार्यों की नकल करने लगते हैं।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"निःसंदेह अल्लाह किसी जाति की दशा नहीं बदलता, जब तक वे स्वयं अपनी दशा न बदल लें।" [329] [सूरा अल-राद : 11]

उस व्यक्ति का अंजाम क्या, होगा जिस तक इस्लाम का संदेश न पहुँचा हो?

इन लोगों पर महान अल्लाह अत्याचार नहीं करेगा, मगर क़यामत के दिन उनकी परीक्षा लेगा?
जिन लोगों को इस्लाम को ठीक से देखने का अवसर नहीं मिला है, उनके पास कोई बहाना नहीं है। क्योंकि, जैसा कि हमने बताया, उन्हें खोजने और सोचने में कमी नहीं करनी चाहिए। यद्यपि तर्क की स्थापना के संबंध में निश्चित होना कठिन है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरों से भिन्न होता है (इस मामले में कि उसपर तर्क स्थापित हुआ या नहीं)। अज्ञानता के उज़्र या तर्क न पहुँचने के उज़्र (excuse) का फैसला आख़िरत में अल्लाह तआला करेगा। जहाँ तक दुनिया की बात है, तो यहाँ जो सामने नज़र आए, उसके अनुसार व्यवहार किया जाएगा।
इन सब तर्कों के बाद जो अल्लाह ने लोगों पर क़ायम किए, यदि अल्लाह ने उनपर दण्ड की आज्ञा दे दी, तो यह अन्याय नहीं होगा। तर्क का मलतब है अक़्ल, स्वाभाविक प्रवृत्ति और वो संदेश एवं निशानियाँ जो ब्रह्मांड एवं स्वयं इन्सान के अंदर मौजूद हैं। इन सब के बदले में उन्हें कम से कम यह करना चाहिए कि वे अल्लाह तआला को जानें और उसे एक मानें और कम से कम

इस्लाम के स्तंभों के प्रति प्रतिबद्ध रहें। यदि उन्होंने ऐसा किया तो सदैव के जहन्नम से नजात पा लेंगे एवं दुनिया व आख़िरत में ख़ुशी पाएंगे। क्या आप समझते हैं कि यह मुश्किल है? अल्लाह तआला का अपने बन्दों पर अधिकार है, जिन्हें उसने पैदा किया है कि वे केवल उसी की इबादत करें। जबकि अल्लाह पर उसके बंदों का हक़ यह है कि वह उन लोगों को सज़ा न दे, जो उसके साथ किसी को शरीक नहीं करते हैं। मामला बहुत सरल है। यह वो शब्द हैं जिन्हें इंसान कहता है, उनपर ईमान रखता है और उनके अनुसार अमल करता है। यह नजात के लिए पर्याप्त है। क्या यह न्याय नहीं है? यही महान अल्लाह का आदेश है और वह न्याय करने वाला, नरमी करने वाला एवं जानकारी रखने वाला है। यही अल्लाह तआला का धर्म है।
वास्तविक मुश्किल यह नहीं है कि इंसान गुनाह करे या ग़लती। क्योंकि गलती करना मानव स्वभाव है। इसलिए आदम का हर बेटा गलती करता है। पाप करने वालों में सबसे अच्छा व्यक्ति वह है, जो तौबा करता है, जैसा कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है। परन्तु मुश्किल यह है कि वह गुनाह करने में अटल रहे और उस पर डट जाए। यह भी दोष है कि एक व्यक्ति को नसीहत की जाए परन्तु वह न नसीहत सुनता हो और न उसपर अमल करता हो। उसको याद दिलाया जाए, लेकिन याद दिलाने का कोई लाभ न हो। उसे प्रवचन दिया जाए और वह प्रवचन को स्वीकार न करे और उपदेश को ठुकरा दे। न तौबा करे और न क्षमा मांगे। बल्कि डट जाए, मुँह फेर ले और घमंड करता फिरे।
अल्लाह तआला ने कहा है :
"और जब उसके समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो घमंड करते हुए मुँह फेर लेता है, जैसे उसने उन्हें सुना ही नहीं, मानो उसके दोनों कानों में बहरापन है। तो आप उसे दुःखदायी यातना की शुभसूचना दे दें।" [330] [सूरा लुक़मान : 7]

सुरक्षित स्थान क्या है?

अल्लाह तआला ने कहा है :
इन आयतों में जीवन की यात्रा के अंत और सुरक्षित स्थान तक पहुंचने का सार बताया गया है।
"तथा धरती अपने पालनहार की ज्योति से जगमगाने लगेगी, और कर्मलेख (खोलकर लोगों के आगे) रख दिए जाएँगे, तथा नबियों और साक्षियों को लाया जाएगा, और उनके बीच सत्य के साथ निर्णय कर दिया जाएगा और उनपर अत्याचार नहीं किया जाएगा। तथा प्रत्येक प्राणी को उसके कर्म का पूरा-पूरा फल दिया जाएगा। तथा वह भली-भाँति जानता है उसे, जो वे करते हैं। तथा जो लोग काफ़िर होंगे, वे जहन्नम की ओर गिरोह के गिरोह हाँके जाएँगे। यहाँ तक कि जब वे उसके पास आएँगे, तो उसके द्वार खोल दिए जाएँगे तथा उसके रक्षक उनसे कहेंगेः "क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे, जो तुम्हें तुम्हारे पालनहार की आयतें सुनाते रहे तथा तुम्हें अपने इस दिन का सामना करने से सचेत करते रहे?" वे कहेंगेः "क्यों नहीं? परन्तु, काफ़िरों पर यातना की बात सिद्ध हो चुकी है। नसे कहा जाएगाः जहन्नम के द्वारों में प्रवेश कर जाओ। उसमें सदावासी रहोगे। अतः क्या ही बुरा है अभिमानियों का ठिकाना! तथा जो लोग अपने पालनहार से डरते रहे, वे जन्नत की ओर गिरोह के गिरोह ले जाए जाएँगे। यहाँ तक कि जब वे उसके पास पहुँच जाएँगे तथा उसके द्वार खोल दिए जाएँगे और उसके रक्षक उनसे कहेंगेः सलाम है तुमपर। तुम पवित्र हो। सो तुम इसमें हमेशा रहने को प्रवेश कर जाओ। तथा वे कहेंगे : सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमसे किया हुआ अपना वचन सच कर दिखाया, तथा हमें इस धरती का उत्तराधिकारी बना दिया। हम स्वर्ग के अंदर जहाँ चाहें, रहें। क्या ही अच्छा बदला है कर्म करने वालों का।" [331] [सूरा अल-ज़ुमर : 69-74]

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है, वह अकेला है और उसका कोई साझी नहीं है।
और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके बंदे और रसूल हैं।
इसी तरह मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सभी रसूल सच्चे हैं।
साथ ही मैं गवाही देता हूँ कि जन्नत सत्य है और जहन्नम सत्य है।

इस्लाम - प्रश्न एवं उत्तर के माध्यम से

- सृष्टिकर्ता पर ईमान :
  - क्या इंसान पर किसी पूज्य पर ईमान रखना अनिवार्य है?
  - सच्चा माबूद (पूज्य) कौन है?
  - सृष्टिकर्ता के गुण क्या हैं और क्यों उसकी ओर इशारा किया जाता है कि वही अल्लाह है?
  - सृष्टिकर्ता को किसने पैदा किया?
  - सृष्टिकर्ता के अस्तित्व के प्रमाण क्या हैं?
  - सृष्टिकर्ता के अस्तित्व का अनुभव किया जाने वाला प्रमाण क्या है?
  - [सूरा अल-कह्फ़ : 109]
  - सृष्टिकर्ता की इबादत में मध्यस्थों को पकड़ना क्यों हमेशा के लिए जहन्नम ले जाने का कारण बनता है?
  - सृष्टिकर्ता अपने आपको बहुवचन से क्यों इंगित करता है, जबकि वह एक और केवल एक है?
  - अल्लाह ने मानव को कुफ़्र एवं ईमान में से किसी एक को चुनने का विकल्प क्यों दिया है?
  - अल्लाह ने इन्सान को क्यों पैदा किया, जबकि वह उससे बेनियाज़ है?
  - सृष्टिकर्ता ने इन्सान को पैदा होने या न होने का एख़्तियार क्यों नहीं दिया?
- वह धर्म जिसे सृष्टिकर्ता ने अपने बन्दों के लिए पसंद किया है :
  - धर्म क्या है?
  - धर्म की आवश्यकता क्या है?
  - सत्य धर्म की विशेषताएँ क्या हैं?
  - धर्म की छत्रछाया में आचरण के पालन का क्या महत्व है?
  - क्या धर्म की ओर पलटना विवेक तथा सोचने समझने की शक्ति को निष्क्रिय कर देता है?
  - मनुष्य के लिए धर्म को प्रायोगिक विज्ञान से बदल लेना क्यों सही नहीं है?
  - क्या धर्म लोगों के लिए अफीम है?
  - सही धर्म की परख कैसे हो?
  - [सूरा अल-आराफ़ : 158]
  - कौन-सी चीज़ इस्लाम को सच्चा धर्म बनाती है?
- ईमान के स्तंभ :
  - ईमान के कितने स्तम्भ हैं, जिनके बिना मुसलमान का ईमान सही नहीं होता है?
  - क्या पूर्व रसूलों पर ईमान इस्लामी अक़ीदे का बुनियादी हिस्सा है?
  - [सूरा अल-बक़रा : 136]
  - मृत्यु के बाद दोबारा जीवित होकर उठने का क्या प्रमाण है?
  - अल्लाह मुर्दों को कैसे ज़िन्दा करेगा?
  - [सूरा अल-रूम : 50]
  - एक मुसलमान आत्माओं के आवागवन के सिद्धांत में विश्वास क्यों नहीं करता है?
  - [सूरा अल-ज़लज़ला : 7,8]
- जीवन का उद्देश्य :
  - सांसारिक जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है?
  - [सूरा अल-मुल्क : 2]
  - इंसान को सुख कैसे प्राप्त हो सकता है?
- सच्चे धर्म की उदारता :
  - क्या इस्लाम ग्रहण करना सबके लिए उपलब्ध है?
  - [सहीह मुस्लिम]
  - क्या इस्लाम सहिष्णुता का आह्वान करता है?
  - [सूरा अल-बक़रा : 62]
- अस्तित्व की उत्पत्ति के सिद्धांतों पर इस्लाम की राय :
  - प्राकृतिक चयन के सिद्धांत पर इस्लाम की क्या राय है? Atheism A Giant Leap of Faith. Dr. Raida Jarrar डार्विन के कुछ अनुयायी, जो प्राकृतिक चयन (एक तर्कहीन भौतिक प्रक्रिया) को एक अनूठा रचनात्मक शक्ति मानते थे, जो बिना किसी वास्तविक प्रायोगिक आधार के सभी कठिन विकासवादी समस्याओं को हल करती है। बाद में उन्होंने जीवाणु कोशिकाओं की संरचना और कार्य में डिजाइन की जटिलता की खोज की। उन्होंने "स्मार्ट" बैक्टीरिया, "माइक्रोबियल इंटेलिजेंस", "निर्णय की रचना" और "समस्या को सुलझाने वाले बैक्टीरिया" जैसे वाक्यांशों का उपयोग करना शुरू कर दिया। इस तरह बैक्टीरिया उनका नया भगवान बन गया। [104]
  - एक मुसलमान इस विचार को क्यों स्वीकार नहीं करता है कि वानर मनुष्य की उत्पत्ति की असल है?
  - डार्विन की जीवनी, लंदन प्रकाशन, कोलिंज, 1958, पृष्ठ : 92,93
  - क़ुरआन ने विकासवाद की अवधारणा को कैसे सही किया?
  - इस्लाम अस्तित्व के स्रोत के सिद्धांतों को एक सच्चे सत्य की अनिवार्यता में सीमित क्यों करता है?
  - क्या एक मुसलमान नैतिकता और इतिहास आदि के सापेक्षवादी सिद्धांतों को स्वीकार करता है?
  - मूल अस्तित्व और नैतिकता के एक व्यापक सत्य के अस्तित्व का क्या प्रमाण है?
  - अस्तित्व के स्रोत का एकमात्र परम (अनियत) सत्य क्या है?

- क्या एक गैर-मुस्लिम के लिए काफिर शब्द का इस्तेमाल उसका अपमान है?

अंतिम ग्रंथ :

- क़ुरआन क्या है?
- क्या पैगंबर मुहम्मद ने क़ुरआन को तौरात से कॉपी किया है?
- क्या क़ुरआन में जो कुछ आया है, उसे पैगंबर मुहम्मद ने पिछली सभ्यताओं से लिया है?
- क़ुरआन को अरबी भाषा में क्यों उतारा गया?
- नासिख़ और मंसूख़ क्या है?
- अबू बक्र के समयकाल में क़ुरआन को जमा करने एवं उसमान के दौर में उसे जलाने की क्या कहानी है?
- क्या क़ुरआन प्रयोगात्मक विज्ञान से टकराता है?

अंतिम नबी :

- नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- कौन हैं और उनके संदेश की सच्चाई का क्या प्रमाण है?
- यह कैसे संभव हुआ कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक ही रात में यरुशलम गए, फिर आसमानों की सैर की और उसी रात वापस भी आ गए?
- नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने आयशा से शादी क्यों की, जबकि वह छोटी उमर की थीं?
- http://muslimvilla.smfforfree.com/index.php...https://liguopedia.wordpress.com/.../19/agnes-de-france/...
- जब धर्म में कोई ज़बरदस्ती नहीं है, तो अल्लाह क्यों कहता है कि जो अल्लाह को नहीं मानते, उनसे लड़ाई करो?
- इस्लाम में, इस्लाम छोड़ देने वाले की हत्या क्यों की जाती है?
- ईसा -अलैहिस्सलाम- ने अपने शत्रुओं से लड़ाई नहीं की, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्यों की?

सच्चे धर्म का प्रचार :

- जिहाद क्या है?
- क्या इस्लाम आत्मघाती हमलों की अनुमति देता है और उनके बदले में जन्नत में हूर मिलने की बात करता है?
- क्या इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है?

इस्लाम की विचारधारा :

- क्या इस्लाम में पुरोहित (जिन्हें पवित्र समझा जाए कि उनसे गलती नहीं हो सकती) एवं नेक लोग पाए जाते हैं और क्या मुसलमान पैगंबर मुहम्मद के साथियों को पवित्र मानते हैं (इस हद तक कि उनको मध्यस्थ बना लें)?
- शिया और सुन्नी में क्या अंतर है?
- क्या इस्लाम में इमाम, ईसाई धर्म में पादरी की तरह है?
- नबी एवं रसूल में क्या अंतर है?
- अल्लाह तआला लोगों की तरफ उन्हीं की तरह इंसान को रसूल बनाकर क्यों भेजता है, फ़रिश्तों को क्यों नहीं भेजता?
- वह्य के माध्यम से सृष्टि से सृष्टिकर्ता के संबंध साधने का क्या प्रमाण है?

इस्लाम और ईसाई धर्म का अंतर :

- मूल पाप के बारे में इस्लाम की क्या राय है?
- ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाने के संबंध में इस्लाम की क्या राय है?
- मुसलमान अपनी बेटी की शादी किसी यहूदी या ईसाई से क्यों नहीं करता?

इस्लामी सभ्यता की विशेषताएँ :

- इस्लामी सभ्यता की विशेषताएँ क्या हैं?
- क्या यह विरोधाभास नहीं है कि इस्लाम धर्म इतना तार्किक है और मुसलमानों की स्थिति इतनी कुव्यवस्था की शिकार है?
- धर्म को राज्य से अलग क्यों न किया जाए और क्यों न इनसान की राय ही संदर्भ (reference) हो, जैसा कि पश्चिम में है?
- क्या इस्लाम लोकतंत्र को मान्यता देता है?
- इस्लामी शरीयत एक अनोखा धार्मिक क़ानून है, जो तर्क के विरूद्ध नहीं है, तो हुदूद क्यों?

इस्लाम का मॉडरेशन :

- इस्लाम ने सामाजिक संतुलन को किस तरह सुनिश्चित किया है?
- इस्लाम ने आर्थिक संतुलन को किस तरह सुनिश्चित किया है?
- क्या इस्लाम एक अतिवादी धर्म है?
- क्या इस्लाम एक संतुलित तथा आसान धर्म है?

इस्लाम में स्त्री का स्थान :

- मुस्लिम महिलाएँ पर्दा क्यों करती हैं?
- क्या महिला का सर ढाँपना रूढ़िवादिता और पिछड़ापन है?
- इस्लाम में पुरुष और महिलाएं अपने शरीर को एक समान क्यों नहीं ढकते हैं?
- क्या इस्लाम ने स्त्रियों के लिए पुरुषों के साथ बराबरी सुनिश्चित की है?
- इस्लाम बहुविवाह की अनुमति क्यों देता है?
- एक महिला को एक ही समय में चार पुरुषों से शादी करने का अधिकार क्यों नहीं है, जैसा कि एक पुरुष को है?
- इस्लाम में औरतों पर मर्दों को मालिक क्यों बनाया गया है?
- इस्लाम में पुरुष को जो विरासत में मिलता है, औरत को उसका आधा हिस्सा क्यों मिलता है?
- इस्लाम ने पुरुष के लिए महिला को मारने की अनुमति क्यों दी?
- इस्लाम ने महिलाओं को सम्मान कैसे दिया?

- पैगंबर मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने व्यभिचार के लिए दंड क्यों निश्चित किया, जबकि मसीह -अलैहिस्सलाम- ने व्यभिचारिणी को क्षमा कर दिया था?

सृष्टिकर्ता का न्याय :
- निष्पक्षता और न्याय के सिद्धांत पर इस्लाम की क्या राय है?

इस्लाम में अधिकार :
- माता-पिता और रिश्तेदारों के अधिकार के बारे में इस्लाम का क्या कहना है?
- पड़ोसी के अधिकार के बारे में इस्लाम का क्या कहना है?
- जानवरों के अधिकारों के बारे में इस्लाम क्या कहता है?
- क्या क़ुरआन ने पर्यावरण संबंधित मसलों पर बात की है?
- इस्लाम सामाजिक अधिकारों को कैसे संरक्षित करता है?
- इस्लाम ने गोद लेने पर रोक क्यों लगाई है?

इस्लाम में न (किसी की अकारण) हानि करने की अनुमति है, न बदले में हानि करने की अनुमति है :
- इस्लाम में लाल और सफेद मांस खाने की अनुमति क्यों दी गई है?
- क्या इस्लाम में जानवरों को ज़बह करने का तरीक़ा अमानवीय नहीं है?
- क्या खाने के लिए ज़बह किए जाने वाले जानवरों में इंसानों जैसी आत्मा नहीं होती?
- मुसलमान सूअर का मांस क्यों नहीं खाता?
- इस्लाम ने सूद को वर्जित क्यों किया है?
- इस्लाम शराब पीने से क्यों मना करता है?

इस्लाम के स्तंभ :
- पैगंबर मुहम्मद द्वारा लाए गए इस्लाम के स्तंभ क्या हैं?
- मुसलमान नमाज़ क्यों पढ़ता है?
- एक मुसलमान दिन में पांच बार नमाज़ क्यों पढ़ता है?
- मुसलमान मक्का की ओर मुँह करके नमाज़ क्यों पढ़ते हैं?
- नमाज़ के क़िबले की दिशा अल-अक्सा मस्जिद से मक्का की मस्जिद-ए-हराम की ओर क्यों बदल दी गई?
- क्या हज के अवसर पर किए जाने वाले कार्य, जैसे काबा आदि का सम्मान, मूर्तिपूजक अनुष्ठान नहीं हैं?
- एक मुसलमान हजर-ए-असवद (काले पत्थर) की अगर इबादत नहीं करता, तो उसे चूमता क्यों है?
- क्या हज की रस्में अत्यधिक भीड़ के कारण कुछ मुसलमानों के मरने की आशंका के कारण भयावह नहीं हैं?

सृष्टिकर्ता की रहमत :
- इस्लाम में अल्लाह अपने बंदों से प्रेम करता है, तो वह उन्हें व्यक्तिवाद की पद्धति का पालन करने की अनुमति क्यों नहीं देता है? [304] जबकि व्यक्तिवाद मानता है कि व्यक्ति के हितों की रक्षा एक मूलभूत मुद्दा है, जिसे राज्य और समूहों के हितों की परवाह किए बिना प्राप्त किया जाना चाहिए। इसी तरह वे व्यक्ति के हित में किसी बाहरी हस्तक्षेप का विरोध करते हैं। चाहे वह समाज हो या संस्थान जैसा कि सरकार। क़ुरआन में ऐसी बहुत-सी आयतें हैं, जो बन्दों के लिए अल्लाह की दया और प्रेम का उल्लेख करती हैं। परन्तु बन्दा के लिए अल्लाह की मुहब्बत बन्दों के एक-दूसरे से प्रम की तरह नहीं है। क्योंकि मानवीय मानकों में प्रेम एक ऐसी आवश्यकता है, जिसे प्रेमी तलाश करता है और उसे प्रियतम के पास पा लेता है। जबकि महान अल्लाह हम से बेनियाज़ है, हमारे लिए उसकी मुहब्बत दया और कृपा की मुहब्बत है, ताक़तवर का कमज़ोर के साथ मुहब्बत है, मालदार का फ़क़ीर के साथ मुहब्बत है, सक्षम का असहाय के लिए प्रेम है, बड़े का छोटे के साथ प्रेम है और हिकमत का प्रेम है। क्या हम अपने प्यार के बहाने अपने बच्चों को वह सब करने देते हैं, जो उन्हें पसंद है? क्या हम अपने प्यार के बहाने अपने छोटे बच्चों को घर की खिड़की से बाहर कूदने या बिजली के नंगे तार से खेलने की अनुमति देते हैं?
- सृष्टिकर्ता अपने बन्दों के लिए दयालु है, तो वह समलैंगिक प्रवृत्तियों को स्वीकार क्यों नहीं करता है?
- अल्लाह स्वयं को कभी क्षमाशील और दयालु और अन्य समयों में कठोर दंड देने वाले के रूप में कैसे वर्णित करता है?
- क्या बुराई अल्लाह की तरफ से आती है?
- प्राकृतिक आपदाओं में सृष्टिकर्ता की क्या हिकमत है?
- क्या जीवन में बुराई की उपस्थिति यह दर्शाती है कि अल्लाह नहीं है?
- अल्लाह आग का अज़ाब क्यों देता है?
- अल्लाह दयालु है और हर भलाई का स्रोत है। फिर क्यों हम सबको बिना हिसाब जन्नत में प्रवेश नहीं देगा?
- सृष्टिकर्ता अपने बंदों के छोटे से जीवन में उनके द्वारा किए गए थोड़े से पापों के लिए उनको अंतहीन पीड़ा देगा?
- अल्लाह बार बार अग्नि की चेतावनी क्यों देता है? क्या यह अल्लाह की दया के गुण के विपरीत नहीं है?
- क़ुरआन क्यों दोहराता है कि अल्लाह मोमिनों से प्यार करता है और काफ़िरों से प्यार नहीं करता है? क्या सभी लोग उसके बन्दे नहीं हैं?

बन्दे पर सृष्टिकर्ता के अधिकार :
- अल्लाह अपने बन्दों को अज़ाब क्यों देगा, यदि वे उसपर ईमान न लाएं?

अंजाम का निर्धारण एवं सुरक्षा तक पहुँचना :
- क्या इंसान अपने माता-पिता और पूर्वजों के धर्म को बदल सकता है?
- उस व्यक्ति का अंजाम क्या, होगा जिस तक इस्लाम का संदेश न पहुँचा हो?
- सुरक्षित स्थान क्या है?

Faten Sabri

faten@fatensabri.com

Hindi